दुःख दिया है उसका बदला अपने हाथ से लिया चाहती हूं।
अगर मैं ऐसा न कर सकी तो सब तरह का सुख पाने पर भी जिन्दगी भर मेरे दिल में यह दाग बनाही रहेगा। उस समय यदि हमलोगों से भूल होगई तो क्या सदैव भूल ही हुआ करेगी? इसके अतिरिक्त जमाने का दुःख सुख भोग कर पहिले की बनिस्बत आज हमलोग होशियार हो रही हैं तथा हर तरह का तजर्बा भी हो गया है और सब से बढ़ कर यह कि आपका भरोसा हमलोगों के साथ है॥

इन्द्र०। (बेशक पहिले की बनिस्बत आज तुम लोगों की शक्ति बढ़ी हुई है मगर गदाधरसिंह भी पहिले की अपेक्षा आज चैतन्य है और दारोगा ऐसे दुष्ट को अपना साथी बनाये है, क्या दारोगा की होशियारी, गद्दारी और शैतानी गदाधरसिंह से कम है?

जमना०। यह सब कुछ सच है परन्तु यदि मेरे दिल की अभिलाषा पूरी न हुई तो इस दुनिया में मेरी जिन्दगी व्यर्थ है, मुझमें और एक निःसहाय कङ्गाल अबला में कुछ भी भेद न रहा॥

जमना और सरस्वती की आंखों से आंसुओं की धारा बह चली॥

इन्द्र०। उन दोनों ने तो कुछ तकलीफें तुम्हें दी हैं उसका बदला यदि तुम्हारे पति अपने हाथ से लेंगे तो क्या इसमें तुम दोनों की सन्तुष्टी न होगी?

जमना०। नहीं, कुछ भी नहीं, इसके अतिरिक्त उनका भी दिल और दिमाग कुछ आप ही सा है, वे गदाधरसिंह को

कभी भी दुःख न देंगे॥

इन्द्र०। मैं तो अजब संकट में पड़ रहा हूं सभी जिद्दि
के वास्ता पड़ा है॥

जमना०। नहीं नहीं, यदि आपको संकट है तो मैं जि
न करूंगी और अब इस विषय में कुछ भी न कहूंगी॥

इसके बाद कई सायत तक तो सन्नाटा रहा और पु
इन्द्रदेव ने कहा:—

इन्द्र०। अच्छा, तुम दोनों जाओ और अपना हौसला
निकालो परन्तु और हर तरह का बन्दोबस्त करने के अतिरिक्त
मैं अपना एक आदमी तुम्हारे साथ दूंगा॥

जमना०। (प्रसन्नता के साथ) कौन मेरे साथ रहेगा?

इन्द्र०। उसे तुम नहीं पहिचानतीं और न पहिचान सकोगी

जमना०। तो फिर किस तरह उसपर हमलोगों को वि-
श्वास होगा?

इन्द्र०। जिस आदमी को मैं तुम दोनों के साथ करूंगा उस
पर अविश्वास करने की कोई जरूरत नहीं। मैं स्वयं उस आ-
दमी को तुम्हारे सपुर्द कर देता परन्तु इस समय वह यहां है
नहीं और मैं घंटे दो घंटे में किसी काम के लिये बाहर जाने
वाला हूं, अस्तु मैं उसके घर पर से होता हुआ जाऊंगा और
सब बातें उसे समझा दूंगा। प्रातःकाल जब घंटा भर रात
रहते ही तुम दोनों यहां से बाहर निकलोगी तो दरवाजे ही
पर वह आदमी तुम्हें मिलेगा। "दल" के नाम से वह तुमको
अपना परिचय देगा और दो शब्द शिलिली संगर भी तुम
दोनों को देगा जिसका गुण वह स्वयं तुम्हें बतायेगा। बस उस

आदमी को अपने साथ ले लेना और उसकी राय के खिलाफ कभी कोई काम मत करना॥

जमना०। (प्रसन्नता से हाथ जोड़ कर) बहुत अच्छा ऐसा ही होगा॥

कुछ देर तक और उन लोगों में बातें होती रहीं, इसके बाद इन्द्रदेव की आज्ञानुसार सब उठकर अपने ठिकाने चली गईं और सफर का इन्तजाम करने लगीं॥

उन्तीसवां बयान ।

नहीं कह सकते कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती इतने बड़े कठिन और साहस का काम करने के लिये क्यों दे दी, जब तक दयाराम मरे हुए समझे जाते थे जमना तथा सरस्वती बिल्कुल इन्द्रदेव के आधीन थीं जो कुछ इन्द्रदेव ने मुनासिब समझा किया और कर सकते परन्तु ऐसी अवस्था में जब कि दयाराम प्रगट हो गए औ दोनों अपने पति के पास पहुंचा दी गईं तब उनपर सि दयाराम के और किसी का अधिकार न रह गया, अस्तु जमना और सरस्वती ही को दयाराम की आज्ञा के बिन से बाहर निकलना और ऐसे काम में हाथ डालना उचित और न इन्द्रदेव ही को आज्ञा देने और उत्साह बढ़ाने की जरूरत थी। सम्भव है कि इसमें इन्द्रदेव ने किसी तरह का फायदा समझ लिया हो अस्तु ....

सुबह की सुपेदी कुछ कुछ आसमान पर फैल चुकी थी जब कि जमना और सरस्वती अपने सामान से हर तरह से दुरुस्त हो मरदाने भेष में तिलिस्मी फिल्ली चेहरे पर लगाए हुए घर से बाहर निकलीं, मकान के सदर फाटक पर दो कसे कसाये घोड़े लिए साईस तैयार था तथा और भी एक आदमी घोड़े पर सवार इन दोनों के आने का इन्तजार कर रहा था। जम- ना और सरस्वती दोनों घोड़ों पर सवार हो गईं और मैदान की तरफ चल निकलीं, वह आदमी भी पूछने पर "दत्त" के नाम का परिचय देकर उन दोनों के साथ हो गया। दो तीन

गह ठहर कर दिन भर बल्कि आधी रात तक सफर करने के
ाद ये तीनों आदमी उस जङ्गल में जा पहुंचे जिसमें कि अजा-
बघर की इमारत थी॥

इस अजायबघर का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में
ा पूरा लिखा जा चुका है, आशा है उसे हमारे पाठक भूले
होंगे इसलिये यहां दोहरा कर उसके लिखने की कोई जरूरत
हीं जान पड़ती॥

जब ये तीनों उस अजायबघर के पास पहुंचे तो कुछ दूर
हिले ही घोड़ों पर से नीचे उतर पड़े, घोड़ों को पेड़ों से साथ
ांध कर पैदल ही अजायबघर की तरफ चल पड़े। जब उस
श्मे के पास पहुंचे तो अजायबघर के नीचे से होकर बहता
ा तब इन तीनों को अजायबघर के बंगले से बाहर निकलती
ई एक रोशनी दिखाई दी, वह लोग अटक कर बड़े गौर से
स रोशनी की तरफ देखने लगे। यद्यपि ये लोग पास पहुंच चुके
मगर पेड़ों के ऐसे झुरमुट में ये लोग खड़े थे कि इस अँधेरी
ात के समय किसीके देख लेने का इन लोगों को बिल्कुल ही
र न था, अस्तु बड़ी बेफिक्री के साथ ये लोग उस रोशनी
ी तरफ देखने लगे। कुछ ही सायत में भूतनाथ पर इन लोगों
ी निगाह पड़ी जो कि अपने हाथ में रोशनी लिये हुए अजा-
ायबघर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था, उसके पीछे पीछे
ालते हुए जमानियां के दारोगा साहब भी दिखाई पड़े। ये
ोनों अभी सीढ़ियों के नीचे नहीं उतरे थे कि लाश उठाये
ो लिये और भी छः आदमी मकान के अन्दर से निकल कर
नके पीछे पीछे आते दिखाई पड़े॥

इन सभों को देखकर जमना, सरस्वती और दत्त तीनों घबड़ा उठे और उनके दिल में तरह २ के सोच विचार पैदा और नष्ट होने लगे। जमना ने दत्त की तरफ घूम कर कहाः—

जमना०। क्या सम्भव है कि यह सब उन्हीं लोगों को निकाल कर लिये जाते हों जिनको छुड़ाने के लिये हमलोग यहां आये हैं॥

दत्त०। मुझे तो यही विश्वास होता है, क्योंकि जयपाल-सिंह का गिरफ्तार हो कर तुमलोगों के कब्जे में पहुंचनाही इस बात की पुष्टि करता है। राजा गोपालसिंह, प्रभाकरसिंह और दयाराम ने भूतनाथ के कब्जे से जयपालसिंह को छुड़ा कर इन्द्र-देव के यहां भेज दिया और भूतनाथ को छोड़ दिया तो ता-ज्जुब नहीं कि भूतनाथ ने दारोगा से मिल कर यह सब हाल नमक मिर्च लगाकर बयान किया हो और दारोगा यह खयाल करके कि जयपालसिंह की जुबानी किसी न किसी तरह वे लोग हमारे कैदियों का पता लगा लें और हमारे कैदियों को छुड़ा कर ले जायें, अपने कैदियों को दूसरी जगह रखने के लिये यहां से निकाल कर लिये जाता हो॥

जमना०। बेशक यही बात है, वह देखो बगुले के अन्दर से एक आदमी और निकला इसके हाथ में नङ्गी तलवार है॥

दत्त०। यह आदमी बहादुर मालूम पड़ता है और जान पड़ता है कि यही सभों का सिरदार है॥

जमना०। ऐसी हालत में जिस तरह बन पड़े इन लोगों को रोकना और कैदियों को इनके कब्जे से छुड़ाना चाहिये नहीं तो हमलोगों की मेहनत बिल्कुल बरबाद जायगी॥

दियों का पता लगाना बहुत मुश्किल हो जायगा ॥

दत्त०। यह तो ठीक है मगर इतने आदमियों के कब्जे से न कैदियों को छुड़ा लेना मुझ अकेले के लिये बहुत ही कठिन । भूतनाथ साधारण ऐयार नहीं है। दारोगा भी लड़े बिना ह नहीं सकता और सबके पीछे२ जो आदमी चला जा रहा है ह मुझे इन दोनों से बढ़ कर ताकतवर और बहादुर जान ड़ता है इसके अतिरिक्त जो लोग तीनों कैदियों को उठा कर लिये जा रहे हैं वे भी मुकाबला करने से बाज न आवेंगे ॥

जमना०। आप अकेले क्यों हैं हम दोनों भी तो आपका ाथ दे सकती हैं, यद्यपि हम दोनों औरत हैं मगर जो तिलि-मी खंजर इन्द्रदेव जी ने हम लोगों को दे रक्खा है उसका ुकाबला करना इन सभों के लिये कठिन ही नहीं बल्कि अ-म्भव है ॥

दत्त०। हां ठीक है,मुझे भी इन्द्रदेव जी ने एक वैसेही गुन ी तिलिस्मी तलवार दी है जिसके भरोसे पर मैं अकेलाही इन भों का मुकाबला कर सकता हूं यदि इन लोगों के भी पास ोई उसके मुकाबले का हरबा न हो तो ॥

जमना०। इन लोगों के पास भला इसके मुकाबले का रबा कहां से आवेगा ॥

दत्त०। नहीं की हालत में तो कोई बात ही नहीं है हम
यदि कोई हरबा इसके जोड़ का
ो ही दिक्कत होगी, हमलोग
रुकर) अच्छा देखो
गों औ ागे

बढ लेने दो तुम दोनों मेरी मदद के लिये तैयार रहना मग
दूर रहना, अगर देखना कि ये लोग भी ऐसेही तिलिस्मी हरबे से मेरा मुकाबला करने के लिये तैयार हो गये हैं तो तुम दोनों जरूर यहां से भाग जाना, मेरे लिये किसी तरह की चिन्ता न करना॥

जमना०। भला मैं आपको ऐसे सङ्कट में अकेले छोड़ कर-

दत्त०। नहीं नहीं मैं जो कहता हूं कि तुम दोनों किसी बात का विचार न करके एक दम यहां से भाग जाना मैं अपने को किसी न किसी तरह बचा ही लूंगा॥

जमना०। खैर जैसा आप कहते हैं वैसा ही करूंगी॥

भूतनाथ और दारोगा वगैरह कैदियों को लिये हुए लग-भग दो ढाई सौ कदम के आगे बढ़े होंगे कि दत्त तिलिस्मी तल-वार हाथ में लिये हुए तेजी के साथ आगे बढ़ा और भूतनाथ का रास्ता रोक कर सामने खड़ा हो गया और बोला, "बस खबरदार कदम रोक लो, बिना मेरी बातों का जवाब दिये आगे मत बढ़ना नहीं तो अपनी जान से हाथ धो बैठोगे॥"

भूत०। (रुक कर और मशाल की रोशनी में अच्छी तरह दत्त का का चेहरा देख कर) तुम कौन हो जो इस तरह से आ-कर मेरा रास्ता रोकते हो? तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूं और मेरे पास इस समय कितने आदमी हैं॥

दत्त०। मैं तुम्हें खूब जानता हूं और तुम्हारे साथियों को भी देख रहा हूं॥

भूत०। तो क्या तुम इन लोगों का मुकाबला करने के लिये तैयार हो?

यह होने दो तुम दोनों मेरी मदद के लिये तैयार रहना मगर दूर रहना, अगर देखना कि ये लोग भी ऐसे ही तिलिस्मी हरबे से मेरा मुकाबला करने के लिये तैयार हो गये हैं तो तुम दोनों जाकर यहां से भाग जाना, मेरे लिये किसी तरह की चिन्ता न करना ॥

जमना० । भला मैं आपको ऐसे सङ्कट में अकेले छोड़ कर

दल० । नहीं नहीं मैं जो कहता हूं कि तुम दोनों किसी बात का विचार न करके एक दम यहां से भाग जाना मैं अपने को किसी न किसी तरह बचा ही लूंगा ॥

सरस० । और जैसा आप कहते हैं वैसा ही करूंगी ॥

भूतनाथ और दारोगा वगैरह कैदियों को लिये हुए लग-भग दो ढाई सौ कदम के आगे बढ़े होंगे कि दल तिलिस्मी तल-वार हाथ में लिये हुए तेजी के साथ आगे बढ़ा और भूतनाथ का रास्ता रोक कर सामने खड़ा हो गया और बोला, "बस खबरदार कदम रोक लो, बिना मेरी बातों का जवाब दिये आगे मत बढ़ना नहीं तो अपनी जान से हाथ धो बैठोगे ॥"

भूत० । (रुक कर और मशाल की रोशनी में अच्छी तरह दल का चेहरा देख कर) तुम कौन हो जो इस तरह से आ कर मेरा रास्ता रोकते हो ? तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूं और मेरे पास इस समय कितने आदमी हैं ॥

दल० । मैं तुम्हें खूब जानता हूं और तुम्हारे साथियों को भी देख रहा हूं ॥

भूत० । तो क्या तुम हमलोगों का .

विश्वास होगया कि इसके पास कोई तिलिस्मी हरबा ज़रूर है॥

मजबूर होकर दल ने वह तलवार भी म्यान के अन्दर रख ली और मुकाबला करने के लिये तिलिस्मी खंजर कमर से निकाला॥

यह वैसाही खंजर था जैसा कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को कमलिनी ने दिया था और जिसका खुलासा बयान चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है अर्थात् जिसका कब्ज़ा दबाने से बिजली की तरह रोशनी पैदा होती थी और दुश्मनों की आंखें झिप जाती थीं अथवा बदन के साथ लगने ही से आदमी बेहोश हो सकता था॥

दल ने खंजर का कब्ज़ा दबाया और उसमें से बिजली की तरह रोशनी पैदा हुई जिससे दारोगा और भूतनाथ वगैरह सभों ही की आंखें बन्द हो गईं मगर उस आदमी पर जो इन सभों के पीछे २ आया था और अब आगे बढ़ कर दल के पास पहुंच चुका था इस रोशनी का कुछ भी असर न हुआ। थोड़ी देर के लिये हम इस आदमी का नाम भीम रखते हैं क्योंकि इस जगह पर कह नहीं सकते कि वास्तव में इस आदमी का क्या नाम था॥

दल के खंजर की करामात देख कर भीम आगे बढ़ आया और दल के मुकाबले में खड़ा होकर बोला, "तुम्हारे इस खंजर का जवाब मैं दूंगा और साबित कर दूंगा कि तुम इसके भी हमलोगों पर कब्ज़ा पा नहीं सकते क्यों व्यर्थ अपनी जान के दुश्मन बनते हो और हमारा हर्ज कर रहे हो।"

भीम ने भी वैसाही तिलिस्मी खंजर कमर से निकाला

किया चाहते हो करो और मालूम रक्खो कि (हाथ के इशारे से बता कर) इतने आदमियों का तुम कदापि मुकाबला नहीं कर सकते ॥

इतना कह कर दारोगा ने पुनः दत्त पर तलवार का वार किया और दत्त ने भी उसका जवाब तलवार ही से दिया। दत्त समझता था कि ये लोग सब बेईमान हैं जरूर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे मगर ऐसा न हुआ सब अलग खड़े हुए तमाशा देखने लगे और दत्त तथा दारोगा साहब में लड़ाई होने लगी।

दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ जब दारोगा साहब ने बड़ी मर्दानगी और दिलावरी के साथ उसका मुकाबला किया क्योंकि दत्त यही जानता था कि दारोगा साहब अपने घर के अन्दर ही के बहादुर हैं किसी वीर के साथ वीरता प्रगट नहीं कर सकते ॥

लगभग आधे घंटे के लड़ाई होती रही मगर दारोगा साहब को दत्त किसी तरह से नीचा दिखा न सका, लाचार होकर दत्त ने कमर से तिलिस्मी तलवार निकाली और उससे दारोगा पर वार किया जिससे दारोगा के बदन पर एक छोटा सा जख्म लगा मगर वह बेहोश नहीं हुआ ॥

विश्वास होगया कि इसके पास कोई तिलिस्मी हरबा जरूरहै॥

मजबूर होकर दत्त ने वह तलवार भी म्यान के अन्दर रख ली और मुकाबला करने के लिये तिलिस्मी खंजर कमर से निकाला॥

यह वैसाही खंजर था जैसा कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को कमलिनी ने दिया था और जिसका खुलासा बयान चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है अर्थात् जिसका कब्जा दबाने से बिजली की तरह रोशनी पैदा होती थी और दुश्मनों की आंखें छिप जाती थीं अथवा बदन के साथ लगने ही से आदमी बेहोश हो सकता था॥

दत्त ने खंजर का कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह रोशनी पैदा हुई जिससे दारोगा और भूतनाथ वगैरह सभों ही की आंखें बन्द हो गईं मगर उस आदमी पर जो इन सभों के पीछे २ आया था और अब आगे बढ़ कर दत्त के पास पहुंच चुका था इस रोशनी का कुछ भी असर न हुआ। थोड़ी देर के लिये हम इस आदमी का नाम भीम रखते हैं क्योंकि इस जगह पर कह नहीं सकते कि वास्तव में उस आदमी का क्या नाम था॥

दत्त के खंजर की यह दशा देख कर भीम आगे बढ़ आया और दत्त के मुकाबले में खड़ा होकर बोला, "तुम्हारे इस खंजर का जवाब मैं दूंगा और साबित कर दूंगा कि तुम इससे भी हमलोगों पर फतह पा नहीं सकते क्यों व्यर्थ अपनी जान के दुश्मन बनते हो और हमारा हर्ज कर रहे हो॥"

भीम ने भी वैसाही तिलिस्मी खंजर कमर से निकाला

किया चाहते हो करो और समझ रक्खो कि (हाथ के इशारे से बता कर) इतने आदमियों का तुम कदापि मुकाबला नहीं कर सकते ॥

इतना कह कर दारोगा ने पुनः दत्त पर तलवार का वार किया और दत्त ने भी उसका जवाब तलवार ही से दिया। दत्त समझता था कि ये लोग सब बेईमान हैं जरूर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे मगर ऐसा न हुआ सब अलग खड़े हुए तमाशा देखने लगे और दत्त तथा दारोगा साहब में लड़ाई होने लगी॥

दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ जब दारोगा साहब ने बड़ी मर्दानगी और दिलावरी के साथ उसका मुकाबला किया क्योंकि दत्त यही जानता था कि दारोगा साहब अपने घर के अन्दर ही के बहादुर हैं किसी वीर के साथ वीरता प्रगट नहीं कर सकते ॥

लगभग आधे घंटे के लड़ाई होती रही मगर दारोगा साहब को दत्त किसी तरह से नीचा दिखा न सका, लाचार होकर दत्त ने कमर से तिलिस्मी तलवार निकाली और उससे दारोगा पर वार किया जिससे दारोगा के बदन पर एक छोटा सा जख्म तो लगा मगर वह बेहोश नहीं हुआ ॥

यह तिलिस्मी तलवार वैसी ही थी जैसी कि प्रभाकरसिंह के पास थी और जो कुछ दिन के लिये भूतनाथ के पास भी चली गई थी। इस समय दारोगा के पास भी वैसी ही तलवार और उसके जोड़ की अँगूठी मौजूद थी और यही सबब था कि दारोगा साहब जख्म खा कर भी बेहोश नहीं हुए मगर [illegible] गये कि यह तलवार तिलिस्मी है और दत्त को भी

। दोनों को दत्त पर एक तरह का शक पैदा होगया॥
ती ने जमना से कहा, "यद्यपि हमलोगों ने इन दोनों
नहीं सुनीं मगर उनके ढङ्ग से मालूम होता है कि दत्त
को कमजोर पाकर गिरफ्तार हो जाने के डरसे दुश्मन
ा बना लिया॥

.ना०। मेरा भी यही ख्याल है, अगर यह बात सच है
दोनों के लिये भी खैरियत नहीं है॥

रस्वती०। बेहतर तो यही होगा कि हम दोनों यहां से
यें और किसी दूसरी जगह छिप कर तमाशा देखें जिस
त हमारे दुश्मनों को लेकर अगर यहां आये तो यकायक
ानों को पा न सके॥

जमना०। हां ऐसा ही करो॥

इतना ही कह कर वे दोनों वहां से हट गईं और बहुत
े धीरे कदम उठाती हुई दूसरी तरफ चलीं॥

जब दत्त और भीम की बातें समाप्त हो गईं तब वे दोनों
ः उसी जगह पहुंचे जहां उनके साथी लोग खड़े थे। भीम
भूतनाथ और दारोगा का हाथ पकड़ कर कहा, "आओ
ाओ, जरा जमना और सरस्वती से तो मुलाकात करो। वे
ानों भी तुम लोगों को गिरफ्तार करने के लिये इसी जगह
ाई हुई हैं॥

दत्त, भीमसेन, दारोगा और भूतनाथ उधर रवाना हुए
जमना और सरस्वती को दत्त छोड़ गया था मगर टि-
जमना और सरस्वती को नहीं पाया तब
हुआ और वह खंजर की मठुन

और दत्त का मुकाबला किया अर्थात् दत्त और भीम में ति-लिस्मी खंजर से लड़ाई होने लगी, खंजरबाजी में दोनों ही निपुण और होशियार मालूम पड़ते थे। लगभग आधे घंटे के दोनों में लड़ाई होती रही मगर दोनों में से कोई भी एक दूसरे पर फतह न पा सका भीम अथवा दारोगा के साथियों में से कोई भी इस बहादुराना और अजीब लड़ाई का दृश्य देख न सका क्योंकि खंजरों की चमक से उन सभों की बल्कि दारोगा तक की आंखें बन्द हो जाती थीं। हां जमना और सरस्वती जरूर उन दोनों की लड़ाई ताज्जुब के साथ देख रही थीं जो कि उन सभों से थोड़ी ही दूर पर पेड़ों की झुरमुट में छिपी हुई खड़ी थीं॥

जब खंजरों की लड़ाई का कुछ भी नतीजा न निकला तब दत्त और भीम दोनों एक दूसरे का मुकाबला छोड़कर खड़े हो गये और खंजरों की चमक में एक दूसरे का मुंह देखने लगा भीम ने धीरे से दत्त से कहा, "मालूम होता है कि बादलों में अब बरसने की ताकत नहीं रही॥"

दत्त०। बेशक ऐसाही है क्योंकि हवा, पानी और धूएँ का सच्चा जमावड़ा नहीं हो सका॥

दत्त का जवाब सुनतेही भीम उसके पैरों पर गिरपड़ा और दत्त ने उसे उठा कर छाती से लगा लिया। इसके बाद वे दोनों आदमी वहां से कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और आपुस में धीरे २ कुछ बातें करने लगे। इस मामले को सभोंही ने आश्चर्य और खेद के साथ देखा तथा जमना और सरस्वती को उन दोनों का ऐसा करना बहुत ही बुरा मालूम हुआ केवल इतना ही नहीं

बल्कि उन दोनों को दत्त पर एक तरह का शक पैदा होगया॥

सरस्वती ने जमना से कहा, "यद्यपि हमलोगों ने उन दोनों की बातें नहीं सुनीं मगर उनके ढङ्ग से मालूम होता है कि दत्त ने अपने को कमजोर पाकर गिरफ़ार हो जाने के डरसे दुश्मन को दोस्त बना लिया॥

जमना०। मेरा भी यही ख्याल है, अगर यह बात सच है तो हम दोनों के लिये भी खैरियत नहीं है॥

सरस्वती०। बेहतर तो यही होगा कि हम दोनों यहां से हट जायँ और किसी दूसरी जगह छिप कर तमाशा देखें जिस में दत्त हमारे दुश्मनों को लेकर अगर यहां आवे तो यकायक हम दोनों को पा न सके॥

जमना०। हां ऐसा ही करो॥

इतना ही कह कर ये दोनों वहां से हट गईं और बहुत धीरे धीरे कदम उठाती हुई दूसरी तरफ चलीं॥

जब दत्त और भीम की बातें समाप्त हो गईं तब ये दोनों पुनः उसी जगह पहुंचे जहां उनके साथी लोग खड़े थे। भीम ने भूतनाथ और दारोगा का हाथ पकड़ कर कहा, "आओ आओ, जरा जमना और सरस्वती से तो मुलाकात करो। वे दोनों भी तुम लोगों को गिरफ़ार करने के लिये इसी जगह आई हुई हैं॥

दत्त, भीमसेन, दारोगा और भूतनाथ उधर रवाना हुए जहां जमना और सरस्वती को दत्त छोड़ गया था मगर ठिकाने पहुंच कर जब जमना और सरस्वती को नहीं पाया तब दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह खंजर की मदद

दत्त का मुकाबला किया अर्थात् दत्त और भीम में ति
गों खंजर से लड़ाई होने लगी, मजा यातो में दोनों ही
पुण और होशियार मालूम पड़ते थे। लगभग आधे घंटे के
नों में लड़ाई होती रही मगर दोनों में से कोई भी एक दूसरे
र फतह न पा सका भीम अथवा दारोगा के साथियों में से
कोई भी इस बहादुराना और अजीब लड़ाई का लुत्फ देख
न सका क्योंकि खंजरों की चमक से उन सभों की बल्कि दारोगा
तक की आंखें बन्द हो जाती थीं। हां जमना और सरस्वती
जरूर उन दोनों की लड़ाई ताज्जुब के साथ देख रही थीं जो
कि उन सभों से थोड़ी ही दूर पर पेड़ों की झुरमुट में छिपी
हुई खड़ी थीं॥

जब खंजरों की लड़ाई का कुछ भी नतीजा न निकला त
दत्त और भीम दोनों एक दूसरे का मुकाबला छोड़कर खड़े हो
गये और खंजरों की चमक में एक दूसरे का मुंह देखने लगा भीम
ने धीरे से दत्त से कहा, "मालूम होता है कि बादलों में अब
बरसने की ताकत नहीं रही॥"

दत्त०। बेशक ऐसाही है क्योंकि हवा, पानी और धूएँ क
सच्चा जमावड़ा नहीं हो सका॥

दत्त का जवाब सुनतेही भीम उसके पैरों पर गिर पड़ा औ
दत्त ने उसे उठा कर छाती से लगा लिया। इसके बाद वे दोनों
आदमी वहां से कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और आपुस
धीरे २ कुछ बातें करने लगे। इस मामले को सभोंही ने आ
और खेद के साथ देखा तथा जमना और सरस्वती को उन दे
...करना बहुत ही बुरा मालूम हुआ केवल इतना ही

बल्कि उन दोनों को दत्त पर एक तरह का शक पैदा होगया॥

सरस्वती ने जमना से कहा, "यद्यपि हमलोगों ने उन दोनों की बातें नहीं सुनीं मगर उनके ढङ्ग से मालूम होता है कि दत्त ने अपने को कमजोर पाकर गिरफ़ार हो जाने के डरसे दुश्मन को दोस्त बना लिया॥

जमना०। मेरा भी यही ख्याल है, अगर यह बात सच है तो हम दोनों के लिये भी खैरियत नहीं है॥

सरस्वती०। बेहतर तो यही होगा कि हम दोनों यहां से हट जायँ और किसी दूसरी जगह छिप कर तमाशा देखें जिस में दत्त हमारे दुश्मनों को लेकर अगर यहां आवे तो यकायक हम दोनों को पा न सके॥

जमना०। हां ऐसा ही करो॥

इतना ही कह कर वे दोनों वहां से हट गईं और बहुत धीरे धीरे कदम उठाती हुई दूसरी तरफ चलीं॥

जब दत्त और भीम की बातें समाप्त हो गईं तब वे दोनों पुनः उसी जगह पहुंचे जहां उनके साथी लोग खड़े थे। भीम ने भूतनाथ और दारोगा का हाथ पकड़ कर कहा, "आओ आओ, जरा जमना और सरस्वती से तो मुलाकात करो। वे दोनों भी तुम लोगों को गिरफ़ार करने के लिये इसी जगह आई हुई हैं॥

दत्त, भीमसेन, दारोगा और भूतनाथ उधर रवाना हुए जहां जमना और सरस्वती को दत्त छोड़ गया था मगर ठिकाने पहुंच कर जब जमना और सरस्वती को वहां पाया तब दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह खंजर की मट्ठ

रोशनी में घूम घूम कर जमना और सरस्वती को ढूंढने लगा। उसी समय बहुत से आदमी हाथ में नङ्गी तलवारें लिये हुए वहां आ पहुंचे और उस मरजमीन को घेर लिया जहां दत्त, भीम, दारोगा, भूतनाथ और उसके साथी लोग थे तथा एक जगह मौका देखकर जमना और सरस्वती भी छिपी हुई थीं॥

तीसवां बयान ।

भूतनाथ अपने दुश्मन को सामने से आते हुए देखकर एक दफे तो घबड़ा उठा मगर तुरत ही उसकी हिम्मत और दिलेरी ने उसकी पीठ ठोंकी और वह बड़ी दिलावरी के साथ मुसकुराता हुआ दुश्मन के पास आ जाने का इन्तजार करने लगा॥

थोड़ी ही देर में उसका दुश्मन उसके सामने आकर खड़ा हो गया और आश्चर्य तथा जांच की निगाह से भूतनाथ, भैयाराजा और मेघराज की तरफ देखने लगा॥

भूतनाथ को यह निश्चय होगया कि मेरा यह दुश्मन जरूर प्रभाकरसिंह ही है क्योंकि यह भैयाराजा के साथ है और भैयाराजा ने उसकी बहुत मदद की थी और इन दोनों में इस समय बहुत गहरी मित्रता हो रही है॥

वास्तव में बात भी यही थी जो इस समय प्रभाकरसिंह भूतनाथ के सामने पहुंच कर ताज्जुब के साथ सोच रहे थे कि क्योंकर गदाधरसिंह ने मेघराज और भैयाराजा पर कब्जा कर लिया जो कि हर हालत में भूतनाथ को दबा सकते थे। भूतनाथ

ने मुसकुरा कर प्रभाकरसिंह से कहाः—

भूत०। आप जरूर ताज्जुब करते होंगे कि इन दोनों को मैंने क्योंकर बेहोश कर दिया॥

प्रभा०। बेशक यही बात है क्योंकि इन दोनों से तुम किसी तरह भी जीत नहीं सकते थे॥

भूत०। अब भी मैं यही कहूंगा कि इन दोनों से जीतने की ताकत मुझमें नहीं है मगर अपनी चालाकी और ऐयारी का नमूना दिखा देने की इच्छा प्रबल होने ही से मैंने यह कार्रवाई की॥

प्रभा०। अस्तु इन दोनों को बेहोश कर देने के बाद तुम यहां से भाग क्यों नहीं गए?

भूत०। भागने की तो मुझे कोई जरूरत नहीं थी, आप लोग चाहे मुझे जिस निगाह से देखें मगर मैं आपलोगों से अब दुश्मनी का बर्ताव नहीं रखता, मुझे विश्वास है कि आपलोग मेरे साथ कदापि बुराई नहीं करेंगे,इसीसे इन दोनों को बेहोश करने के बाद भी मैं बेफिक्री के साथ यहां खड़ा आप के आने का इन्तजार कर रहा था॥

प्रभा०। तुम हमलोगों को जानते पहिचानते भी हो या यों ही दोस्त बन बैठे हो॥

भूत०। हां इन मेघराज को तो मैं नहीं जान सका कि कौन हैं मगर आपको प्रभाकरसिंह और (हाथ का इशारा करके) इनको भैयाराजा समझ लेने में मैं किसी तरह की भूल नहीं करता॥

प्रभा०। तुम्हारी चुस्ती और चालाकी की तो क़दर कर-

रोशनी में घूम घूम कर जमना और सरस्वती को ढूंढने लगा। उसी समय बहुत से आदमी हाथ में नङ्गी तलवारें लिये हुए यहां आ पहुंचे और उस सरजमीन को घेर लिया जहां दलु, भीम, दारोगा, भूतनाथ और उसके साथी लोग थे तथा एक जगह मौका देखकर जमना और सरस्वती भी छिपी हुई थीं॥

तीसवां बयान।

भूतनाथ अपने दुश्मन को सामने से आते हुए देखकर एक दफे तो घबड़ा उठा मगर तुरत ही उसकी हिम्मत और दिलेरी ने उसकी पीठ ठोंकी और वह बड़ी दिलावरी के साथ मुसकुराता हुआ दुश्मन के पास आ जाने का इन्तजार करने लगा॥

थोड़ी ही देर में उसका दुश्मन उसके सामने आकर खड़ा हो गया और आश्चर्य तथा जांच की निगाह से भूतनाथ, भैयाराजा और मेघराज की तरफ देखने लगा॥

भूतनाथ को यह निश्चय होगया कि मेरा यह दुश्मन जरूर प्रभाकरसिंह ही है क्योंकि यह भैयाराजा के साथ है और भैयाराजा ने उसकी बहुत मदद की थी और इन दोनों में इस समय बहुत गहरी मित्रता हो रही है॥

वास्तव में बात भी यही थी जो इस समय प्रभाकरसिंह भूतनाथ के सामने पहुंच कर ताज्जुब के साथ सोच रहे थे कि क्योंकर गदाधरसिंह ने मेघराज और भैयाराजा पर कब्जा कर लिया जो कि हर हालत में भूतनाथ को दबा सकते थे। भूतनाथ

ने मुसकुरा कर प्रभाकरसिंह से कहाः—

भूत०। आप जरूर ताज्जुब करते होंगे कि इन दोनों को मैंने क्योंकर बेहोश कर दिया॥

प्रभा०। बेशक यही बात है क्योंकि इन दोनों से तुम किसी तरह भी जीत नहीं सकते थे॥

भूत०, अब भी मैं यही कहूंगा कि इन दोनो से जीतने की ताकत मुझमें नहीं है मगर अपनी चालाकी और ऐयारी का नमूना दिखा देने की इच्छा प्रबल होने ही से मैंने यह कार्रवाई की॥

प्रभा०। अस्तु इन दोनों को बेहोश कर देने के बाद तुम यहां से भाग क्यों नहीं गए?

भूत०। भागने की तो मुझे कोई जरूरत नहीं थी, आप लोग चाहे मुझे जिस निगाह से देखें मगर मैं आपलोगों से सह दुश्मनी का बर्ताव नहीं रखता, मुझे विश्वास है कि आपलोग मेरे साथ कदापि बुराई नहीं करेंगे, इसीसे इन दोनों को बेहोश करने के बाद भी मैं बेफिक्री के साथ यहां खड़ा रहा ...

... का इतना ... [illegible]

रीफ कर सकता हूं मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी नीयत बहुत ही खराब है और तुम्हारा दिल साफ नहीं है॥

भूत०। यही शक जो आपलोगों के दिल में बैठा हुआ है आपलोगों का नुकसान कर रहा है नहीं तो अभी तक कितना काम हो चुका होता और भैयाराजा की स्त्री को भी दुश्मनों की कैद से छुटकारा मिल गया होता॥

प्रभा०। खैर मैं तब तक तुमसे विशेष बातें न करूंगा जब तक ये दोनों होश में न आ जायँगे क्योंकि इन दोनों के सामने ही बातचीत करना मुनासिब होगा॥

भूत०। आशा है कि बहुत जल्द ये दोनों होश में आ जायँगे॥

प्रभा०। तो तुम लखलखा सुंघाकर इन दोनों की बेहोशी क्यों नहीं दूर कर देते॥

भूत०। बेहतर होगा कि आप ही अपने हाथ से यह काम कीजिये।

प्रभा०। (मुसकुरा कर) मालूम होता है कि मेघराज के बदन पर हाथ लगाकर तुम धोखा खा चुके हो इसी से ऐसा कहते हो। खैर कोई चिन्ता नहीं मैं खुद इन दोनों की बेहोशी दूर करने की कोशिश करता हूं॥

इतना कहकर प्रभाकरसिंह ने अपने ऐयारी के सामान में से निहायत उम्दा लखलखा निकालकर भैयाराजा और मेघराज को सुंघाया जिससे बात की बात में उन दोनों की बेहोशी दूर हो गई और वे आश्चर्य के साथ अपने चारों तरफ ताज्जुब से देखने लगे॥

से आदमी बैठे शराब पी रहे थे, जिसका दाम एक मोटा कि-
सान अपने पास से दे रहा था। वह बार बार दाम चुकाने के
लिये अपनी जेब से एक थैली निकालता और इस बेपरवाही
से रुपये दे रहा था कि जिससे मालूम होता कि अभी थैली
भरी हुई है॥

डिक की निगाह उस थैली और उसमें के रुपयों पर बार
बार पड़ने लगी। अन्त में उसने उस थैली को अपने जेब के
हवाले करना ही निश्चय किया। यद्यपि इस समय इस कमरे
में करीब चालीस आदमियों के बैठे हुए थे मगर डिक ने इस
बात की कोई परवाह न की। उसने अपनी पिस्तौल आड़ में
लाकर देखी और जब उसे ठीक और भरी हुई पाया तो वह
उस मोटे किसान के पास गया और उसके हाथ से थैली छीन
कर बोला, "महाशय! मैं देख रहा हूं कि आप को बार २ थैली
खोलने में बड़ी तकलीफ हो रही है और इसके सिवाय इतनी
फजूल खर्ची भी किसी काम की नहीं इसलिये मैं यह थैली
ले लेता हूं अपने पास रक्खूंगा जब आपको इस की जरूरत पड़ेगी
तो मुझसे मंगवा लीजियेगा। मेरा नाम डिक टर्पिन है॥"

उसके अपना नाम कहने का लोगों पर बड़ा असर पड़ा। कुछ
लोग तो डिक का नाम सुनते ही डर के मारे इधर उधर चमक
गये कुछ मन ही मन उसके इस साहस की प्रशंसा करने लगे,
इसके सिवाय बचे हुए लोग उसको पकड़ने की फिक्र में पड़े
क्योंकि उनकी आंखों के सामने वह चार हजार का इनाम घूम
गया आखिर उनमें से एक मजबूत आदमी उठा और डिक से
लिपट गया जिसके साथ ही और भी कई आदमी उस पर टूट

[illegible]रीफ कर सकता हूं मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी नीयत बहुत ही खराब है और तुम्हारा दिल साफ नहीं है।

भूत० । यही शक जो आपलोगों के दिल में बैठा हुआ है आपलोगों का नुकसान कर रहा है नहीं तो अभी तक कितना काम हो चुका होता और भैयाराजा की स्त्री को भी दुश्मनों की कैद से छुटकारा मिल गया होता ॥

प्रभा० । खैर मैं तब तक तुमसे विशेष बातें न करूंगा जब तक ये दोनों होश में न आ जायेंगे क्योंकि इन दोनों के सामने ही बातचीत करना मुनासिब होगा ॥

भूत० । आशा है कि बहुत जल्द ये दोनों होश में आ जायेंगे ॥

प्रभा० । तो तुम लखलखा सुंघाकर इन दोनों की बेहोशी क्यों नहीं दूर कर देते ॥

भूत० । बेहतर होगा कि आप ही अपने हाथ से यह का[illegible] कीजिये ॥

प्रभा० । (मुसकुरा कर) मालूम होता है कि भैयारा[illegible] बदन पर हाथ लगाकर तुम धोखा खा चुके हो इसी से [illegible] कहते हो । खैर कोई चिन्ता नहीं मैं खुद इन दोनों की बेहो[illegible] दूर करने की कोशिश करता हूं ॥

इतना कहकर प्रभाकरसिंह ने अपने ऐयारी के बटुए [illegible] से [illegible] लखलखा निकाल कर भैयाराजा और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ते आदमी बैठे शराब पी रहे थे, जिसका दाम एक मोटा किसान अपने पास से दे रहा था। वह बार बार दाम चुकाने के लिये अपनी जेब से एक थैली निकालता और इस बेपरवाही से रुपये दे रहा था कि जिससे मालूम होता कि अभी थैली भरी हुई है॥

हिक की निगाह उस थैली और उसमें के रुपयों पर बार बार पड़ने लगी। अन्त में उसने उस थैली को अपने जेब के हवाले करना ही निश्चय किया। यद्यपि इस समय इस कमरे में करीब चालीस आदमियों के बैठे हुए थे मगर हिक ने इस बात की कोई परवाह न की। उसने अपनी पिस्तौल आड़ में जाकर देखी और जब उसे ठीक और भरी हुई पाया तो वह उस मोटे किसान के पास गया और उसके हाथ से थैली छीन कर बोला, "महाशय! मैं देख रहा हूं कि आप के बार २ थैली खोलने में बड़ी तकलीफ हो रही है और इसके सिवाय इतनी फजूल खर्ची भी किसी काम की नहीं इसलिये मैं यह थैली ले लेता हूं अपने पास रक्खूंगा जब आपको इस की जरूरत पड़ेगी तो मुझसे मंगवा लीजियेगा। मेरा नाम हिक टर्पिन है॥"

उसके अपना नाम कहने का लोगों पर बड़ा असर पड़ा। कुछ लोग तो हिक का नाम सुनते ही डर के मारे इधर उधर धसक गये कुछ मन ही मन उसके इस साहस की प्रशंसा करने लगे, इसके सिवाय बचे हुए लोग उसको पकड़ने की फिक्र में पड़े क्योंकि उनकी आंखों के सामने यह चार हज़ार का इनाम घूम गया आखिर उनमें से एक मजबूत आदमी उठा और हिक से लिपट गया जिसके साथ ही और भी कई आदमी उस पर टूट

रीफ कर सकता हूं मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी नीयत बहुत ही खराब है और तुम्हारा दिल साफ नहीं है।

भूत० । यही शक जो आपलोगों के दिल में बैठा हुआ है आपलोगों का नुकसान कर रहा है नहीं तो अभी तक कितना काम हो चुका होता और भैयाराजा की स्त्री को भी दुश्मनों की कैद से छुटकारा मिल गया होता ॥

प्रभा० । खैर मैं तब तक तुमसे विशेष बातें न करूंगा जब तक ये दोनों होश में न आ जायँगे क्योंकि इन दोनों के सामने ही बातचीत करना मुनासिब होगा ॥

भूत० । आशा है कि बहुत जल्द ये दोनों होश में आ जायँगे ॥

प्रभा० । सो तुम लखलखा सुंघाकर इन दोनों की बेहोशी क्यों नहीं दूर कर देते ॥

भूत० । बेहतर होगा कि आप ही अपने हाथ से यह काम कीजिये ।

प्रभा० । (मुसकुरा कर) मालूम होता है कि भैयाराजा के बटुए पर हाथ लगाकर तुम चोरटा बन चुके हो इसी से ऐसा कहते हो । खैर कोई चिन्ता नहीं मैं खुद इन दोनों की बेहोशी दूर करने की कोशिश करता हूं ॥

इतना कहकर प्रभाकरसिंह ने अपने ऐयारी के सामान में से निहायत उम्दा लखलखा निकाल कर भैयाराजा और भैया-रानी को सुंघाया जिससे बात की बात में इन दोनों की बेहोशी दूर हो गई और वे आश्चर्य के साथ अपने चारो तरफ निगाह दौड़ाकर देखने लगे ॥

किसी तरह एक कुर्सी पर बैठाया। दर्वाजा खोल दिया गया और बाहर के सब आदमी भी अन्दर चले आये॥

अब हिक की खोजाई शुरू हुई मगर कमरे भर में वह कहीं न दिखा। जिस आदमी ने उसे जमीन पर गिरा दिया था वह स्वयं इतना घबड़ा गया था कि कुछ ठीक न कह सका कि हिक उसके नीचे से कहां निकल गया क्योंकि हिक को पकड़ने की नीयत से उस बेचारे के ऊपर कई आदमी गिर पड़े थे और उसे अपनी जान बचाने की फिक्र पड़ गई थी॥

अब हिक के बारे में लोगों को तरह तरह के खयाल होने लगे। कुछ लोग कहने लगे कि उसने पिशाच को बस में कर लिया है और कुछ कहने लगे कि उसमें हवा में मिल जाने की शक्ति है, एक हजरत कसम खाकर कहने लगे कि वह आग की तरह चमक कर एक नक्खी बन गया था इत्यादि तरह तरह की बातें लोग कहने लगे मगर कुछ लोगों को इन अक्लमंदों की बातों पर विश्वास न हुआ और वे हिक को खोजने के लिये मकान के बाहर निकले। शायद उनको यह खयाल था कि जिस आदमी को वे चारों तरफ से बन्द कमरे में न पकड़ सके वे उसे खुले मैदान में अच्छी तरह पकड़ सकेंगे॥

अब हिक का हाल सुनिये। जिस समय वह जमीन पर गिरा दिया गया और चारों तरफ से आदमी उसके ऊपर टूट पड़े तो पहिले तो वह कुछ घबराया पर इसके बाद ही सम्हला और अपने बचाव की तदबीर करने लगा। इत्तफाक से उसी समय कमरे में अंधेरा हो गया और उसके ऊपर पड़ा हुआ आदमी इतना घबड़ा गया कि हिक को छोड़ कर जमीन से उठने की

पड़े और उसे जमीन पर गिरा दिया। वह मोटा किसान भी अपनी जगह से उठा मगर शराब बहुत पी जाने के कारण उसका पैर लड़खड़ाया और वह जमीन पर गिर पड़ा। अपने को सम्हालने की नीयत से उसने टेबुल को पकड़ लिया मगर उसकी बदकिस्मती थी कि टेबुल भी उसी के ऊपर लुढ़क गया और बेचारा उसके नीचे से पड़ा पड़ा मदद के लिये चिल्लाने लगा। टेबुल गिर जाने के कारण वह लंप भी जो उसके ऊपर जल रहा था गिर कर बुझ गया और अब उस कमरे में पूरा अंधकार छा गया॥

अंधेरा हो जाने के कारण अब और भी गड़बड़ मच गई। लोग शराब के नशे में चूर होही रहे थे इस लिये जो जिसे सामने पाता उसे ही ठीक समझ कर चपत लगाने लगता तथा उसे जमीन पर गिराने की कोशिश करता था। एक आदमी ने यह सोच कर कि कहीं ठीक कमरे के बाहर न निकल जाय, दर्वाजा बन्द करके उसमें ताला लगा दिया। बगल बगल वाले कमरों के आदमी जो यह शोर गुल और गाली गलौज सुन कर हाल देखने के लिये आये थे दर्वाजा बन्द पाकर खुलवाने के लिये [illegible] [illegible]

[illegible]

कैसी तरह एक कुर्सी पर बैठाया। दर्वाजा खोल दिया गया और बाहर के सब आदमी भी अन्दर चले आये॥

अब डिक की खोजाई शुरू हुई मगर कमरे भर में वह कहीं न दिखा। जिस आदमी ने उसे जमीन पर गिरा दिया था वह स्वयं इतना घबड़ा गया था कि कुछ ठीक न कह सका कि डिक उसके नीचे से कहां निकल गया क्योंकि डिक को पकड़ने की नीयत से उस बेचारे के ऊपर कई आदमी गिर पड़े थे और उसे अपनी जान बचाने की फ़िक्र पड़ गई थी॥

अब डिक के बारे में लोगों की तरह तरह के खयाल होने लगे। कुछ लोग कहने लगे कि उसने पिशाच को बस में कर लिया है और कुछ कहने लगे कि उसमें हवा में मिल जाने की शक्ति है, एक हजरत कसम खाकर कहने लगे कि वह आग की तरह चमक कर एक मक्खी बन गया था इत्यादि तरह तरह की बातें लोग कहने लगे मगर कुछ लोगों को इन अहमकों की बातों पर विश्वास न हुआ और वे डिक को खोजने के लिये मकान के बाहर निकले। शायद उनको यह खयाल था कि जिस आदमी को वे चारों तरफ से बन्द कमरे में न पकड़ सके वे उसे खुले मैदान में अच्छी तरह पकड़ सकेंगे॥

अब डिक का हाल सुनिये। जिस समय वह जमीन पर गिरा दिया गया और चारों तरफ से आदमी उसके ऊपर टूट पड़े तो पहिले तो वह कुछ घबराया पर उसके बाद वहां समझा और अपने बचाव की तदबीर करने लगा। भाग्यवश उसी समय कमरे में अंधेरा हो गया और उसके ऊपर पड़ा हुआ आदमी इतना घबड़ा गया कि डिक को छोड़ कर जमीन से उठने को

कोशिश करने लगा। उसी समय हिक मौका पाकर उसके
से निकल गया और लड़ता झगड़ता किसी तरह उस
बाहर निकल कमरे के बाहर चला गया। उसके बाहर निक
ही कमरे का दर्वाजा अन्दर से लोगों ने बन्द कर लिया। फि
उस जगह आया जहां अपनी घोड़ी बेस को छोड़ गया
और उस पर सवार हो कर एपिङ्ग की तरफ न जा कर फि
टामी के घर की तरफ चला॥

जब हिक टामी के घर पर पहुंचा उस समय रात क
आधी हो जा चुकी थी। हिक दर्वाजे पर आकर आवाज
लगा मगर बहुत देर तक चिल्लाने पर भी अंदर से नैल
दर्वाजा न खोला जिससे हिक को बहुत ताज्जुब हुआ क्यों
वह कभी इतनी गहरी नींद में न सोती थी कि आवाज
पर भी न जागे। अंतमें जब हिक को यह निश्चय हो गया कि
नैल इस मकान में नहीं है तो वह कहीं रात को सोने के लिये
जगह खोजने की फिक्र में पड़ा॥

उस मकान से थोड़ी ही दूरी पर एक झोपड़ा था जिसमें
किसी की घास पड़ी रहती थी। हिक ने उसका दर्वाजा खोला
और अपने सोने लायक जगह का इन्तजाम करने बाद थोड़ी
घास ले जाकर बेस के सामने डाल दी जिसे कि वह उसी कोठ-
री के अंदर ले आया था। इसके बाद वह बिना कपड़ा उतारे
सो रहा॥

ग्यारहवां बयान।

दिन कुछ ज्यादे चढ़ चुका था कि जब हिक की आंख खुली। उसने उठतेही अपने चारों तरफ देखा और जब कोई बात सन्देह की न पाई तथा बेस को भी एक कोने में चुपचाप पड़ा पाया तो धीरे धीरे कदम दबाता हुआ वह दर्वाजे के पास पहुंचा। इतने ही में उसे दो आदमियों के बातचीत की आवाज सुनाई पड़ी जिसे सुन वह चौंका और फिर कोठड़ी के बाहर न निकल कर वह एक खिड़की के पास गया और छिप कर बाहर की तरफ देखने लगा॥

जिस खिड़की में से वह देख रहा था उससे थोड़ीही दूरी पर उसने एक औरत और एक मर्द को देखा जो आपुस में कुछ बातें कर रहे थे, वे दोनों एक दीवार की आड़ में होने के कारण हिक को पूरी तरह से दिखाई नहीं पड़ते थे इसलिये वह उन्हें पहिचान न सका मगर जब उनकी बातें खतम हुईं और वे आड़ की जगह से बाहर निकले तो हिक को उन्हें पहिचान कर बड़ा ही अचंभा हुआ क्योंकि वह मर्द तो हिक का पुराना दुश्मन जेरी था और औरत मौल थी। कुछ देर तक और बातचीत करने बाद जिसे हिक बिलकुल न सुन सका, जेरी तो बाहर गांव की ओर चला गया और मौल अपने मकान का ताला खोल कर अन्दर चली गई॥

हिक को मौल के ऊपर पहिले ही से शक हो चुका था और अब उसे जेरी के साथ बातें करते हुए देख उसका शक निश्चय को पहुंच गया। वह करीब आधे घंटे के ठहर कर मौल के

कोशिश करने लगा। उसी समय डिक मौका पाकर उसके हाथों से निकल गया और लड़ता झगड़ता किसी तरह उस कुंडों से बाहर निकल कमरे के बाहर चला गया। उसके बाहर निकलते ही कमरे का दर्वाजा अन्दर से लोगों ने बन्द कर लिया। फिर उस जगह आया जहां अपनी घोड़ी बेस को छोड़ गया था और उस पर सवार हो कर एविङ्गू की तरफ न जाकर मिस टामी के घर की तरफ चला॥

जब डिक टामी के घर पर पहुंचा उस समय रात करीब आधी के जा चुकी थी। डिक दर्वाजे पर आकर आवाज देने लगा मगर बहुत देर तक चिल्लाने पर भी अंदर से नैल ने दर्वाजा न खोला जिससे डिक को बहुत ताज्जुब हुआ क्योंकि वह कभी इतनी गहरी नींद में न सोती थी कि आवाज देने पर भी न जागे। अन्त में जब डिक को यह निश्चय हो गया कि नैल इस मकान में नहीं है तो वह कहीं रात को सोने के लिये जगह खोजने की फिक्र में पड़ा॥

उस मकान से थोड़ी ही दूरी पर एक झोपड़ा था जिसमें किसी की घास पड़ी रहती थी। डिक ने उसका दर्वाजा खोला और अपने सोने लायक जगह का इन्तजाम करने बाद थोड़ी घास ले जाकर बेस के सामने डाल दी जिसे कि वह उसी कोठरी के अंदर ले आया था। इसके बाद वह बिना कपड़ा उतारे सो रहा॥

हिक को अपने दोस्त जिप्सी का खेमा ढूंढने में ज्यादा तरद्दुद न उठाना पड़ा क्योंकि वह जिप्सियों का सरदार था और वे लोग उसे सरदार कहकर पुकारते भी थे। हम भी उसे सरदार ही कह कर पुकारेंगे॥

जब डिक सरदार के पास पहुंचा तो उसे उसका पुराना साथी पीटर भी वहीं दिखाई दिया जिसे देख उसको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि अभी तक उसे यह नहीं मालूम था कि वह जिप्सी है या जिप्सियों से सम्बन्ध रखता है। दोनों उसी जगह पास ही पास बैठकर बातें करने लगे। पीटर ने डिक को आनरंटन और गर्टरूड का पूरा पूरा हाल कह सुनाया जिसे डिक कुछ भी नहीं जानता था। डिक इन बातों को बड़े गौर से सुनता रहा क्योंकि ये उसके मतलब की बातें थीं। सब से ज्यादे खुशी तो उसे इस बात की थी कि गर्टरूड अभी तक उसे भूली नहीं है॥

पीटर से बातचीत कर लेने के बाद डिक सरदार और उसकी स्त्री लीला से मिला जिन्होंने इसे बड़ी आवभगत के साथ लिया। उनसे कुछ देर तक बातचीत करने बाद डिक टामी से मिला जो अब अच्छा हो चला था। कुछ देर मामूली बातचीत के बाद टामी ने डिक से मौल का हाल पूछा, डिक ने जवाब दिया, "वह बहुत अच्छी तरह है, यहां आने के लिये बहुत जिद्द करती थी मगर मैंने लाना मुनासिब न समझा।" इसके बाद मौका पाकर डिक ने पूछा, "क्या तुमको पूरी तरह से भरोसा है कि मौल हमलोगों को धोखा देकर हमारा भेद न खोलेगी ?"

दर्वाजे पर पहुंचा और कुण्डा खटखटाने लगा। थोड़ी ही देर में मैाल ने आकर दर्वाजा खोला और डिक को देख कर आश्चर्य से बोली, "हैं! तुम तो टामी से मिलने न गए थे फिर लौट क्यों आये?" डिक ने जवाब में कहा, "एक जरूरी काम आ पड़ने के कारण मैं वहां न जा सका॥"

इसके बाद डिक मैाल से तरह तरह की बातें करने लगा जिसमें उसको यह न मालूम होने पाये कि उसे उसके ऊपर कुछ शक हो गया है। थोड़ी देर बाद मैाल ने खाना बनाया और डिक खाने बाद कुछ देर आराम करने की नीयत से लेट रहा। जब शाम हुई तो डिक विदा हुआ क्योंकि मैाल के बहुत जोर देने पर भी उसने रात को वहां रहना पसन्द न किया। मैाल के यह पूछने पर कि "अब किधर जाओगे?" उसने यह जवाब दिया, "इस वक्त मैं हंसली को जाता हूं क्योंकि सुना है कि एपिङ्ग के रास्ते में कई पुलिस वाले मेरी ताक में लगे हुए हैं और मैं जान बूझ कर अपने को फँसाना नहीं चाहता॥"

डिक ने मैाल से यह सिर्फ धोखा देने के लिये ही कहा था कि वह एपिङ्ग की तरफ नहीं जायगा। वास्तव में उसका इरादा एपिङ्ग जाने का ही था मगर इसलिये कि मैाल इस बात को न जान सके उसने उससे ऐसी बात कही और कुछ दूर तक हंसली की तरफ गया भी मगर इसके बाद घूम कर दुश्मनों से बचता हुआ वह फिर एपिङ्ग की तरफ रवाना हुआ॥

जब डिक एपिङ्ग के जङ्गल में पहुंचा तो उसे बहुत से जिप्सी दिखाई दिये जो कि उसी जङ्गल में टिके हुए थे। इसका कारण यह था कि उनका सालाना जलसा शुरू हो गया था।

क को अपने दोस्त जिप्सी का डेरा ढूंढने में ज्यादा तरद्-
द न उठाना पड़ा क्योंकि वह जिप्सियों का सरदार था और
लोग उसे सरदार कहकर पुकारते भी थे। हम भी उसे सर-
दार ही कह कर पुकारेंगे॥

जब डिक सरदार के पास पहुंचा तो उसे उसका पुराना
साथी पीटर भी वहीं दिखाई दिया जिसे देख उसको बड़ा
ताज्जुब हुआ क्योंकि अभी तक उसे यह नहीं मालूम था कि
वह जिप्सी है या जिप्सियों से सम्बन्ध रखता है। दोनों उसी
जगह पास ही पास बैठकर बातें करने लगे। पीटर ने डिक को
हामरटन और गर्टरूड का पूरा पूरा हाल कह सुनाया जिसे
डिक कुछ भी नहीं जानता था। डिक इन बातों को बड़े गौर
से सुनता रहा क्योंकि ये उसके मतलब की बातें थीं। सब से
ज्यादे खुशी तो उसे इस बात की थी कि गर्टरूड अभी तक
उसे भूली नहीं है॥

पीटर से बातचीत कर लेने के बाद डिक सरदार और
उसकी स्त्री लीला से मिला जिन्होंने इसे बड़ी आवभगत के
साथ लिया। उनसे कुछ देर तक बातचीत करने बाद डिक टामी
से मिला जो अब अच्छा हो चला था। कुछ देर मामूली बात-
चीत के बाद टामी ने डिक से मैाल का हाल पूछा, डिक ने
जवाब दिया, "वह बहुत अच्छी तरह है, यहां आने के लिये
बहुत जिद्द करती थी मगर मैंने लाना मुनासिब न समझा।"
इसके बाद मौका पाकर डिक ने पूछा, "क्या तुमको पूरी तरह
से भरोसा है कि मैाल हमलोगों को धोखा देकर हमारा भेद
न खोलेगी?"

दर्वाजे पर पहुंचा और कुण्डा खटखटाने लगा। थोड़ी ही देर में मौल ने आकर दर्वाजा खोला और डिक को देख कर आश्चर्य से बोली, "हैं! तुम तो टामी से मिलने न गए थे फिर लौट क्यों आये?" डिक ने जवाब में कहा, "एक जरूरी काम आ पड़ने के कारण मैं वहां न जा सका॥"

इसके बाद डिक मौल से तरह तरह की बातें करने लगा जिसमें उसको यह न मालूम होने पावे कि उसे उसके ऊपर कुछ शक हो गया है। थोड़ी देर बाद मौल ने खाना बनाया और डिक खाने बाद कुछ देर आराम करने की नीयत से लेट रहा। जब शाम हुई तो डिक बिदा हुआ क्योंकि मौल के बहुत जोर देने पर भी उसने रात को वहां रहना पसन्द न किया। मौल के यह पूछने पर कि "अब किधर जाओगे?" उसने यह जवाब दिया, "इस वक्त मैं हंसली को जाता हूं क्योंकि सुना है कि एपिङ्ग के रास्ते में कई पुलिस वाले मेरी ताक में लगे हुए हैं और मैं जान बूझ कर अपने को फँसाना नहीं चाहता॥"

डिक ने मौल से यह सिर्फ धोखा देने के लिये ही कहा था कि वह एपिङ्ग की तरफ नहीं जायगा। वास्तव में उसका इरादा एपिङ्ग जाने का ही था मगर इसलिये कि मौल इस बात को न जान सके उसने उससे ऐसी बात कही और कुछ दूर तक हंसली की तरफ गया भी मगर इसके बाद घूम कर दुश्मनों से बचता हुआ वह फिर एपिङ्ग की तरफ रवाना हुआ॥

जब डिक एपिङ्ग के जङ्गल में पहुंचा तो उसे बहुत से जिप्सी दिखाई दिये जो कि उसी जङ्गल में टिके हुए थे। इसका कारण यह था कि उनका मालाना जलसा शुरू हो गया था।

डिक को अपने दोस्त जिप्सी का खेमा ढूंढने में ज्यादा तरद्दुद न उठाना पड़ा क्योंकि वह जिप्सियों का सरदार था और वे लोग उसे सरदार कहकर पुकारते भी थे। हम भी उसे सरदार ही कह कर पुकारेंगे॥

जब डिक सरदार के पास पहुंचा तो उसे उसका पुराना साथी पीटर भी वहीं दिखाई दिया जिसे देख उसको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि अभी तक उसे यह नहीं मालूम था कि वह जिप्सी है या जिप्सियों से सम्बन्ध रखता है। दोनों उसी जगह पास ही पास बैठकर बातें करने लगे। पीटर ने डिक को जानरंटन और गर्टरूड का पूरा पूरा हाल कह सुनाया जिसे डिक कुछ भी नहीं जानता था। डिक इन बातों को बड़े गौर से सुनता रहा क्योंकि ये उसके मतलब की बातें थीं। सब से ज्यादे खुशी तो उसे इस बात की थी कि गर्टरूड अभी तक उसे भूली नहीं है॥

पीटर से बातचीत कर लेने के बाद डिक सरदार और उसकी स्त्री लीला से मिला जिन्होंने इसे बड़ी आवभगत के साथ लिया। उनसे कुछ देर तक बातचीत करने बाद डिक टामी से मिला जो अब अच्छा हो चला था। कुछ देर मामूली बातचीत के बाद टामी ने डिक से नैल का हाल पूछा, डिक ने जवाब दिया, "वह बहुत अच्छी तरह है, यहां आने के लिये बहुत जिद्द करती थी मगर मैंने लाना मुनासिब न समझा।" इसके बाद मौका पाकर डिक ने पूछा, "क्या तुमको पूरी तरह से भरोसा है कि नैल हमलोगों को धोखा देकर हमारा भेद न खोलेगी?"

दर्वाजे पर पहुंचा और कुण्डा खटखटाने लगा। थोड़ी ही दे में मौल ने आकर दर्वाजा खोला और डिक को देख कर आ श्चर्य्य से बोली, "हैं! तुम तो टामी से मिलने न गए थे फि लौट क्यों आये?" डिक ने जवाब में कहा, "एक जरूरी का आ पड़ने के कारण मैं वहां न जा सका॥"

इसके बाद डिक मौल से तरह तरह की बातें करने लग जिसमें उसको यह न मालूम होने पावे कि उसे उसके रूप कुछ शक हो गया है। थोड़ी देर बाद मौल ने खाना बनाय और डिक खाने बाद कुछ देर आराम करने की नीयत से ठे रहा। जब शाम हुई तो डिक बिदा हुआ क्योंकि मौल के बहु जोर देने पर भी उसने रात को वहां रहना पसन्द न किया मौल के यह पूछने पर कि "अब किधर जाओगे?" उसने य जवाब दिया, "इस वक्त मैं हंसली को जाता हूं क्योंकि सुन है कि एपिङ्ग के रास्ते में कई पुलिस वाले मेरी ताक में लं हुए हैं और मैं जान बूझ कर अपने को फँसाना नहीं चाहता॥"

डिक ने मौल से यह सिर्फ धोखा देने के लिये ही कहा थ कि वह एपिङ्ग की तरफ नहीं जायगा। वास्तव में उसका इरा दा एपिङ्ग जाने का ही था मगर इसलिये कि मौल इस बात को न जान सके उसने उससे ऐसी बात कही और कुछ दूर तक हंसली की तरफ गया भी मगर उसके बाद घूम कर दुश्मनों से बचता हुआ वह फिर एपिङ्ग की तरफ रवाना हुआ॥

जब डिक एपिङ्ग के जङ्गल में पहुंचा तो उसे बहुत से जिप्सी दिखाई दिये जो कि उसी जङ्गल में टिके हुए थे। इसका कारण यह था कि उनका मालामाल जलसा शुरू हो गया था।

हिक को अपने दोस्त जिप्सी का खेमा ढूंढने में ज्यादा तरद्दुद न उठाना पड़ा क्योंकि वह जिप्सियों का सरदार था और वे लोग उसे सरदार कहकर पुकारते भी थे। हम भी उसे सरदार ही कह कर पुकारेंगे॥

जब हिक सरदार के पास पहुंचा तो उसे उसका पुराना साथी पीटर भी वहीं दिखाई दिया जिसे देख उसको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि अभी तक उसे यह नहीं मालूम था कि वह जिप्सी है या जिप्सियों से सम्बन्ध रखता है। दोनों उसी जगह पास ही पास बैठकर बातें करने लगे। पीटर ने हिक को आमरंटन और गर्टरूड का पूरा पूरा हाल कह सुनाया जिसे हिक कुछ भी नहीं जानता था। हिक इन बातों को बड़े गौर से सुनता रहा क्योंकि ये उसके मतलब की बातें थीं। सब से ज्यादे खुशी तो उसे इस बात की थी कि गर्टरूड अभी तक उसे भूली नहीं है॥

पीटर से बातचीत कर लेने के बाद हिक सरदार और उसकी स्त्री लीला से मिला जिन्होंने इसे बड़ी आवभगत के साथ लिया। उनसे कुछ देर तक बातचीत करने बाद हिक टामी से मिला जो अब अच्छा हो चला था। कुछ देर मामूली बातचीत के बाद टामी ने हिक से मैरा का हाल पूछा, हिक ने जवाब दिया, "वह बहुत अच्छी तरह है, यहां आने के लिये बहुत जिद्द करती थी मगर मैंने लाना मुनासिब न समझा।" इसके बाद मौका पाकर हिक ने पूछा, "क्या तुमको पूरी तरह से भरोसा है कि मैरा हमलोगों को धोखा देकर हमारा भेद न खोलेगी?"

टामी०। मुझे पूरी तरह से विश्वास है कि जान यहां पर भी मैाल हमलोगों का भेद न खोलेगी ॥

डिक०। मगर मुझे तो इसमें कुछ शक मालूम होता है।

टामी०। (हँस कर) अगर तुम्हें मैाल के ऊपर किसी का शक है तो यह शक बिल्कुल बेजड़ है। मैाल के ऊपर करना माने अपने ही ऊपर शक करना है ॥

डिक०। तो भी यह कैसे कहा जा सकता है कि मैाल ऐसी ही रहेगी ॥

टामी०। भाई तुम चाहे जो कहो मगर मुझे तो कभी ... ऊपर शक न होगा अभी तक न मैंने कभी उसके ऊपर ... किया है और न कभी करूंगा। खैर तुम यह तो बताओ ... यह शक तुम्हें हुआ क्योंकर ॥

डिक०। नहीं कुछ नहीं मैंने योंही पूछा था ॥

इसके बाद फिर इधर उधर की बातें होने लगीं। डिक ... मैाल के ऊपर सन्देह करने का कारण टामी से कहना इसलिये ठीक न समझा कि एक तो टामी इस समय कमजोर है ऐसे हालत में उसे किसी तरह की गुस्सा दिलाने वाली बात कहना ठीक नहीं है दूसरे इस बात का कोई सबूत भी डिक के पास नहीं था। सिर्फ मैाल का जेरी के साथ बातें करना इस बात को साबित नहीं कर सकता था कि यह विश्वास घातिनी है।

उस रात को डिक को अच्छी तरह नींद नहीं आई। इसका सबब यह न था कि पत्तियों का बिछौना जिस पर वह सोया हुआ था उसे आराम से सोने नहीं देता था। नहीं डिक को इस बात की कोई तकलीफ नहीं थी। वह पत्थर की चट्टान पर,

कंकड़ीली जमीन पर, यहां तक कि अपनी घोड़ी की पीठ पर भी उसी आराम से नींद ले सकता था जिस तरह कि अच्छे मुलायम बिछौने पर। इस समय उसे कई तरह के तरद्दुद आराम से सोने नहीं देते थे।

सब से बड़ा तरद्दुद उसे मैाल के बारे में था। वह खूब समझता था कि टामी मैाल को कभी शक की निगाह से नहीं देखेगा और इस बात में भी डिक को कोई शक नहीं मालूम होता था कि वह सब भण्डाफोड़ किया चाहती है क्योंकि यदि ऐसा न होता तो वह उससे (डिक से) यह जरूर कहती कि "जेरी आजकल इसी तरफ टोह लगाता फिर रहा है और मुझ से मिल भी चुका है।" और उसका ऐसा न करना ही डिक का शक बढ़ाता था। कभी कभी डिक यह सोचता कि शायद वह जेरी को पुलिस का अफसर न समझती हो और कोई मामूली आदमी ही जानती हो और इसीसे उसका जिक्र न किया हो मगर यह ख़याल उसके दिल में जमता न था॥

गर्टरूड के बारे में भी उसे बहुत तरद्दुद हो गया था। यह तो साफ ही जाहिर था कि वह इसे प्यार करती थी और वह (डिक) भी उसे चाहता था। लेकिन डिक में और उस में जमीन आसमान का फर्क था। डिक जगह जगह मारा फिरने और लोगों का रुपया लूटने वाला मामूली डाकू था और वह एक जमींदार तथा अमीर की लड़की थी, इसलिये यह तो सम्भव ही न था कि डिक अपना असल असल हाल उसे बता कर तब उससे शादी करे क्योंकि चाहे गर्टरूड प्रेम के सबब से उसकी हालत लोगों से न कहे मगर एक तो औरत के पेट में बात पचनी

ही मुश्किल दूसरे यह भी खयाल था कि कहीं लड़ा यहां
जान कर वह नाराज न हो जाय और सब चौपट करदे।

डिक खूब समझता था कि यदि एक दफे भी पुलिस
हाथ में पड़ा तो फिर फांसी या जन्म कैद उसके लिये रक्खी
ही और इसी लिये वह बहुत फूंक फूंक कर पैर रखता था
अपना भेद किसी को कहते डरता था। यद्यपि उसने अ
तक किसी की जान नहीं ली थी और न वह ऐसा करना
ही करता था तथापि जिन अमीरों और जमीदारों को
लूटा और दिक किया करता था वे उसके बहुत बड़े विरु
हो रहे थे और यही चाहते थे कि किसी तरह उसे कैदखा
की अंधेरी कोठरी नसीब हो। यदि कोई ऐसा आदमी डिक
साथी हो जाता जिसका खूब प्रभाव होता तो शायद डिक ब
जाता मगर ऐसा होना असम्भव था और इन्हीं सब बातों के
सोच कर डिक गर्टरूड से भी अपना हाल कहते हिचकता था।

इन्हीं सब खयालों में गोते लगाते हुए डिक को नाम मा
को ही नींद आई और वह सुबह बहुत सवेरेही अपने खी
से जहां वह सोया था बाहर निकला। वह अपनी घोड़ी को
देखने के लिये उसी तरफ चला मगर रास्ते ही में उसकी निगा
उस लड़की पर पड़ी जिसे वह पहिली दफे एपिङ्ग के बाह
जाते समय जंगल में देख चुका था और जिसकी बातों ने उस
समय उसे ताज्जुब में डाल दिया था। उसका नाम लीना थ
और वह सरदार की लड़की थी तथा सरदार के सबब से उस
और डिक में जान पहिचान भी हो गई थी॥

डिक को देख लीना ने पूछा, "इतना सवेरे किधर!"

हिक०। अपनी घोड़ी को देखने जा रहा हूं ॥

लीना०। यह बहुत अच्छी बात है। आदमी को अपने
ड़े की उतनीही खबरदारी रखनी चाहिये जितनी अपनी॥

हिक०। (हंस कर) और खास कर मेरे ऐसों को जिनका
ाम बिना अच्छे घोड़े के चलही नहीं सकता और अच्छे घोड़े
ा अच्छी ही हिफाजत और खबरदारी भी चाहिये ॥

इसके बाद दोनो कुछ देर तक चुप रहे जिसके बाद फिर
हक ने पूछा, "अच्छा यह तो कहो कि उस दिन जो तुमने
झसे विचित्र ढंग की बातें की थीं उनका क्या मतलब था
ौर वे बातें तुम्हें क्योंकर मालूम हुईं?"

लीना०। तुम यह पूछ कर क्या करोगे?

हिक०। नहीं करना तो कुछ नहीं है सिर्फ......(रुक कर)
अच्छा तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं किसी को प्यार
करता हूं और चार बरस पहिले ही से उसे जानता हूं?

लीना०। इस बात का मैं पीछे जवाब दूंगी तुम को और
कुछ पूछना हो तो पूछ लो ॥

हिक०। और तुम्हारे इस कहने का क्या मतलब था "कि
यह तुमको मुनासिब नहीं कि अपनी पहिली प्रेमिका को
छोड़ कर मेरे प्रेमी बनो ॥"

लीना०। इसका सिर्फ यही मतलब था कि जब तुम एक
औरत को चाहते हो तो दूसरी को चाहने का तुम्हें कोई अधि-
कार नहीं है ॥

हिक०। मगर यह तुम कैसे जान सकती हो कि मैं तुम्हें
चाहने या प्यार करने लगा था। मुझने उस समय तुम्हारी

पहिले पहिल मुलाकात हुई थी उसके पहिले मैंने तुम्हें दे
भी नहीं था ॥

लीना० । अब इस बात का मैं क्या जवाब दूं, तुम अ
दिल से पूछ देखो कि जो मैंने कहा था वह ठीक था या नहीं

हिक० । (कुछ देर तक कुछ सोचने के बाद) अच्छा
मुझे और कुछ इस वक्त नहीं पूछना है, तुम मेरी पहिली बा
का जवाब दो ॥

लीना०। उसका ठीक ठीक जवाब तो मैं नहीं दे सकती ह
इतना कह सकती हूं कि मनुष्य का अंग प्रत्यंग तथा हाव भा
देख कर यह कहा जा सकता है कि वह कैसे स्वभाव का है
अमीर है या गरीब या सदा अमीर या गरीब ही बना रहेग
और जो लोग इस विषय में कुछ ज्यादे जानते हैं वे भूत भवि
वर्तमान का हाल भी कह सकते हैं ॥

हिक० । तो क्या तुम भी भविष्य का हाल कह सकती हो

यकायक जेरी को वहां देख डिक को बड़ाही ताज्जुब मा लूम हुआ और उसे निश्चय हो गया कि यह उसे ही गिरफ्ता करने की नीयत से यहां आया है। वह जल्दी उस जगह पहुं चा जहां घोड़े को खड़ी कर गया था और उस पर सवार है तेजी के साथ चक्कर खाता हुआ जिप्सियों के खेमों की तरफ चला। वहां पहुंचते ही उसने सरदार से सब हाल कहा और बात की बात में यह बात सब जगह फैल गई। सरदार ने डिक से कहा, "अच्छा हो अगर तुम अपनी सूरत भी कुछ बदल लो जिसमें पहिचाने जाने का कोई डर न रहे।" और इसके बाद उपाय की कोई राह न देख उसने लीना को बुलाया और उस से अपनी भाषा में कुछ कहा जिसे सुन वह एक बगल वाले खेमे में चली गई और कई तरह के रङ्ग वगैरह ले कर थोड़ी ही देर में लौट आई। पहिले तो उसने एक मसाला डिक के चेहरे पर लगाया और इसके बाद कुछ रंग रोगन भी लगाया। जब इस काम से उसे फुरसत मिल गई तो उसने डिक के बाल जि- प्सियों की तरह बांध दिये और बन्हीं की एक पोशाक भी उसे पहिना दी। यह सब करने बाद उसने एक शीशा डिक के हाथ में दिया जिसमें अपनी सूरत देखते ही डिक दंग रह गया क्योंकि अब वह साफ जिप्सी मालूम होता था और अब सूरत में इतना फर्क पड़ गया था कि अगर उसकी मां भी वहां मौ- जूद होती तो नहीं पहिचान न सकती॥

इधर जेरी जब जिप्सियों के डेरे के पास पहुंचा तो कई

लेरी ने कुछ घमण्ड के साथ जवाब दिया, "मैं पुलिस का अफसर हूं और यहां दो डाकुओं का पता लगाने के लिये आया हूं क्योंकि सुना गया है कि वे दोनों यहीं हैं॥"

जिप्सी०। उनका नाम?

लेरी०। एकका नाम डिक टर्पिन और दूसरे का टामी है?

जिप्सी०। तो तुम उन्हें खोजने के लिये यहां क्यों आये? क्या हमलोग चोर और डाकू हैं जो ऐसों को अपने पास टिकाया करेंगे? जाओ वे दोनो यहां नहीं हैं, तुम को गलत खबर मिली है॥

लेरी०। (गुस्से के साथ) तुम झूठे हो वे दोनों जरूर यहां हैं?

इतना कह कर लेरी अपने साथियों को आगे बढ़ने का इशारा करके आगे की तरफ बढ़ा मगर वह आगे जा न सका क्योंकि उसी समय इधर उधर के पेड़ों और चट्टानों की आड़ में छिपे हुए पचासों जिप्सी बाहर निकल आये और उसको घेरकर खड़े हो गये। हर एक के हाथ में एक एक लाठी थी और कइयों के पास पिस्तौलें भी दिखाई देती थीं। लाचार लेरी को रुकना पड़ा और वह कुछ कहा ही चाहता था कि इतने में सरदार भी डिक और लीना के साथ वहीं आ पहुंचा। डिक की सूरत अब ऐसी बदल गई थी कि उसे किसी से पहिचाने जाने का डर न था। सरदार के आते ही जिप्सी सब कुछ दूर हटकर खड़े हो गये और वहां सन्नाटा छा गया॥

सरदार ने लेरी से पूछा, "तुम कौन हो और यहां क्यों आये हो?

लेरी०। मैं अपने बादशाह की ओर से दो डाकुओं को

क़िस्मत कुछ जागी मालूम पड़ती है। अच्छा साहब सुनिये, आज सवेरे मैं एक दवाई बनाने के लिये कुछ बूटियां तलाश करने जङ्गल में गया था। वहां..........(कुछ रुक कर) आप तो शायद मेरी इस दवा का गुण न जानते होंगे॥

जेरी०। नहीं मुझे नहीं मालूम और तुम अपना हाल कहो दवा को जाने दो॥

हिक०। वाह साहब दवा को जाने कैसे दूं? कैसी मेहनत करने बाद तो किसी तरह यह दवा हाथ लगी है आप कहते हैं जाने दो। वैसी दवा आपने कभी देखी भी न होगी। अगर आप को गठिया हो गई हो, किसी किस्म का दर्द होता हो, या टांग टूट गई हो...........

जेरी०। (गुस्से से) अजी तुम अपना हाल कहो, मुझे गठिया नहीं हुई है॥

हिक०। अच्छा आप को नहीं तो आपकी स्त्री या लड़के...

जे०।(और भी गुस्से से)तुम अपनी दवाका जिक्र न छोड़ोगे?

हिक०। (शान्त भाव से) जाने दीजिये साहब जब आप को इसका जिक्र अच्छा नहीं लगता तो मुझे कौन सी गरज पड़ी है कि मैं कहने जाऊं, मैं तो आप ही के भले के लिये कहता था कि शायद आपको या आपके लड़के वालों को नहीं तो किसी और रिश्तेदार.........

अब जेरी बरदाश्त न कर सका और आगे बढ़ कर हिक की तरफ उंगली से इशारा करता हुआ सरदार से बोला, "देखो जी! तुम इस बेवकूफ को मना करो नहीं तो मैं बिना पीटे इसको न छोड़ूंगा!!"

पकड़ने के लिये आया हूं॥

सरदार०। तो तुम यहां उनको ढूंढने क्यों आये?

जेरी०। मुझको पता लगा है कि वे दोनों यहीं हैं॥

हिक०। (सरदार को और पूछने से रोक कर) तुम जिसने यह खबर दी है उसका नाम क्या है?

जेरी०। यह मैं तुमको नहीं बता सकता॥

हिक०। अच्छा यह बता सकते हो कि वह मर्द औरत?

जेरी०। (कुछ सोचकर) नहीं यह भी नहीं॥

हिक०। अच्छा मान लिया कि वे दोनों यहां मौजू मगर तुम उनको पहिचानोगे क्योंकर?

जेरी०। मेरे पास उनका हुलिया मौजूद है॥

इतना कहकर जेरी ने अपनी जेब से एक कागज और उसमें से पढ़ कर हिक और टामी का हुलिया उन सुनाया। हिक अपना हुलिया इस तरह बयान किये ज कारण मुस्कुरा उठा मगर अपने को रोक कर बोला:—

हिक०। अच्छा जो इन दोनों को पकड़वा दे इनाम भी मिलेगा?

जेरी०। हां. हां. चार हजार ०

रहे थे कि इस तरह जेरी को चिढ़ाने से उसका क्या मतलब है क्योंकि अगर जेरी को ज़रा भी यह शक हो जाता कि जिससे वह बातें कर रहा है वही डिक है तो फिर जो होता उसको डिक स्वयम् ही सोच सकता था ॥

जब कुछ देर बाद जेरी कुछ ठंढा हुआ तो डिक ने फिर कहा, "हां! तो आप दवा का जिक्र नहीं सुना चाहते?"

अब जेरी बरदाश्त न कर सका और डिक के पास आकर तथा जेब से पिस्तौल निकाल कर बोला, "देखो जी! अब जो तुमने दवा का जिक्र करके मुझे और तकलीफ पहुंचाई तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा ॥"

डिक ने बड़ी शान्ति के साथ कहा, "नहीं हुज़ूर आप का गलत ख्याल है। मेरी दवा तकलीफ नहीं देती वह तो तकलीफ कम करती है ॥"

इतना सुनते ही सब के सब खिलखिलाकर हँस पड़े यहां तक कि जेरी के साथी भी जो अभी तक बड़ी मुश्किल से अपने को हँसने से रोके हुए थे अब रोक न सके और जोर से हँस पड़े जिसे देख जेरी का क्रोध और भी बढ़ गया। आखिर जब उसके एक साथी ने उसकी बहुत खराब हालत देखी तो उसकी जगह पर आप बढ़ कर बातें करने लगा ॥

साथी०। अच्छा भाई तुम मुझसे कहो क्या कह रहे थे मगर अब दवा का जिक्र मत करो ॥

डिक०। हां साहब यही तो मेरी भी इच्छा है मगर बात यह है कि मैं अपनी दवा की तारीफ़ किये नहीं रह सकता ॥

साथी०। नहीं नहीं तुम्हारी दवा की किसी तारीफ़ की ज़रूरत

सरदार ने जवाब दिया, "जो आदमी अपनी दवा की तारीफ करता है वह बेवकूफ कहलाने या सजा पाने लायक नहीं है खास कर जब वह दवा वैसी ही है जैसी वह कह रहा है। मैं खुद उस दवा को कई बार आजमा चुका हूं॥"

लाचार जेरी ने फिर डिक की तरफ देखकर कहा, "अच्छा कहो क्या कहते हो, मगर इस बात का खयाल रखना कि दवा का जिक्र न आने पावे॥"

डिक, "बहुत अच्छा वैसा ही होगा। अच्छा तो मैं क्या कह रहा था? हां याद आया। आज मैं अपनी उस दवा के लिये कुछ जड़ी बूटी तलाश करने के लिये जङ्गल में गया था जिसका जिक्र करने से ही आपको गुस्सा आ जाता है और जिसके लिये ताज्जुब नहीं आपको कभी मेरी खुशामद करनी पड़े क्योंकि गठिया बाई या दर्द की उससे बढ़ कर और कोई दवा नहीं है। मैं तो उसका जिक्र सिर्फ इसीलिये करता था कि आपके बहुत से जान पहिचान वाले हैं अगर आप उनसे सिफारिश कर देंगे तो मेरी दवा की कुछ बिक्री हो जायगी और ईश्वर न करे आपको कहीं कुछ हो गया तो आप किसी तरह का खयाल न करके सीधे मेरे पास चले आइयेगा। मैं आपको बात की बात में............

इतना सुनते सुनते जेरी का गुस्सा फिर बढ़ गया और वह तरह तरह की बातें बकने लगा मगर डिक इस तरह चुपचाप खड़ा रहा मानो कुछ सुनता ही नहीं और इस सबब से उसका गुस्सा और भी बढ़ता गया। सरदार और लीना चुपचाप खड़े मन ही मन में डिक की तारीफ कर रहे थे और ताज्जुब कर

ऽ पत्थर पर बैठे हुए थे और उनके बीच में रुपयों और शर्फियों का एक ढेर लगा हुआ था॥

जेरी०। वे दोनों क्या क्या बातें कर रहे थे॥

हिक०। दूर होने के कारण मैं साफ साफ तो न सुन सका पर इतना समझ में आया कि किसी सराय में ये रुपै उनके हाथ लगे थे। कुछ देर तक बात करने बाद वे सब उठ कर एक टूटे फूटे मकान की तरफ चले गये जो वहां से थोड़ी ही दूरी पर था। मैं भी फिर वहां न ठहरा और सीधा चला आया॥

जेरी०। तुम उनकी सूरत भी देख सके थे?

हिक०। दोनों की तो नहीं मगर एक की सूरत शक्ल ठिक उस हुलिये से मिलती थी जो आपने अभी बयान किया । जहां तक मैं खयाल करता हूं वह डिक ही था॥

जेरी०। (उत्कंठा के साथ) तुमने उन को कब देखा था?

हिक०। आज ही सवेरे॥

जेरी०। (आगे बढ़ कर और हिक के कंधे पर हाथ रख कर) देखो जी! अगर तुम मुझे वह जगह दिखादो जहां तुमने उन दोनों को देखा था तो मैं तुम्हें पचास रुपये दूंगा॥

हिक०। (कुछ पीछे हट कर) क्यों पचास ही रुपै क्यों? अभी तो तुमने चार हजार बतलाया था और अब पचास हो गया?

जेरी०। चार हजार उसे मिलेगा जो उन दोनों को पकड़ा देगा। तुम तो सिर्फ उनका पता ही बताते हो॥

हिक०। हां जब तुमने सब हाल मुझसे जान लिया है तब ऐसा कहोहीगे मगर पहिले मुझे मालूम होता कि इतनी

है? मैं तो खुद कई बार उसकी तारीफ सुन चुका हूं। तुम कह रहे थे उसे जल्दी खतम करो तो मैं तुमसे वह दवा दो सौ मोल लूँगा॥

डिक०। ठीक ठीक! तुम कुछ अक्लमन्दों की तरह बातें करते हो और उतने बेवकूफ नहीं मालूम पड़ते जितना (जेरी की तरफ इशारा करके) यह आदमी है॥

बेचारे जेरी ने कुछ कहना चाहा मगर उसके साथी ने उसे रोक कर कहा, "देखो जी, तुम्हारे जी में और जो आवे सो कहो मगर किसी अफसर की निन्दा न करो॥"

डिक०। आपका कहना ठीक है मगर क्या करूं मुझे और लोगों की तरह बातें बनाना तो आता नहीं है। मेरे तो जो जी में आता है मैं साफ साफ कह देता हूं किसी की परवाह नहीं करता। (जेरी की तरफ दिखा कर) यदि इन्हें मेरी बातें अच्छी नहीं मालूम होतीं तो न सुनें कान में तेल डाल लें। और इससे कोई मतलब नहीं आप मेरी बात सुनिये, जब मैं उस दवा के लिये जिसका जिक्र ऊपर कर चुका हूं कुछ बूटियें तलाश करने जङ्गल में गया तो कुछ दूर चले जाने बाद दो आदमियों के बातचीत की आवाज सुन कर मुझे ताज्जुब मालूम हुआ और मैं उनकी बातें सुनने के इरादे से छिपता हुआ उनके पास तक चला गया॥

जेरी०। (आगे बढ़ कर) तब क्या हुआ?

डिक०। पहिले तो मैंने समझा था कि शायद ये दोनों कोई जंगली आदमी हैं जो मुझसे छिप कर इधर आ निकले हैं मगर थोड़ी देर में मालूम हुआ कि [illegible] था। ये दोनों [illegible]

एक पत्थर पर बैठे हुए थे और उनके बीच में रुपयों और अशर्फियों का एक ढेर लगा हुआ था॥

जेरी०। वे दोनों क्या क्या बातें कर रहे थे॥

हिक०। दूर होने के कारण मैं साफ साफ तो न सुन सका मगर इतना समझ में आया कि किसी सराय में ये रुपै उनके हाथ लगे थे। कुछ देर तक बात करने बाद वे सब उठ कर एक टूटे फूटे मकान की तरफ चले गये जो वहां से थोड़ी ही दूरी पर था। मैं भी फिर वहां न ठहरा और सीधा चला आया॥

जेरी०। तुम उनकी सूरत भी देख सके थे?

हिक०। दोनों की तो नहीं मगर एक की सूरत ठीक हिक के उस हुलिये से मिलती थी जो आपने अभी बयान किया है। जहां तक मैं खयाल करता हूं वह हिक ही था॥

जेरी०। (उत्कंठा के साथ) तुमने उन को कब देखा था?

हिक०। आज ही सबेरे॥

जेरी०। (आगे बढ़ कर और हिक के कंधे पर हाथ रख कर) देखो जी! अगर तुम मुझे वह जगह दिखादो जहां तुमने उन दोनों को देखा था तो मैं तुम्हें पचास रुपये दूंगा॥

हिक०। (कुछ पीछे हट कर) क्यों पचास ही रुपै क्यों? अभी तो तुमने चार हजार बतलाया था और अब पचास हो गया?

जेरी०। चार हजार रुपै मिलेगा जो उन दोनों को पकड़ा देगा। तुम तो सिर्फ उनका पता ही बताते हो॥

हिक०। हां जब तुमने सब हाल मुझसे जान लिया है तब तो ऐसा कहोहीगे मगर पहिले मुझे मालूम होता कि इतनी

मेहनत करने पर सिर्फ पचास ही रुपये मिलेंगे तो मैं क्यों, यह हाल कहता। और अब तो गलती होही गई अब इस को भी जाने देना ठीक नहीं। लाओ निकालो रुपया॥

जेरी०। अभी क्यों दूं! तुम पहिले हम लोगों को जगह ले चलो तब रुपया भी मिल जायगा॥

हिक०। और अगर वहां चल कर तुम रुपया न दो।

जेरी०।(हंसकर) नहीं नहीं ऐसा न होगा चचहार।

हिक०। अच्छा तो फिर मेरे साथ चलो। हां! एक और है। अगर वहां चल कर तुम उन दोनों को न पकड़ सके या इस समय तक वे वहां से चलेही गये तब भी मैं तुमसे पचास रुपये ले लूंगा॥

जेरी०। वाह तब तुम्हें कैसे रुपये मिलेंगे? जब हम लोग उन दोनों को पकड़ लेंगे तो तुम्हें रुपया मिलेगा॥

हिक०। अच्छा तो फिर आप ही जाकर उन्हें खोज भी लीजिये। मुझे कोई गरज नहीं है कि इतनी दूर जाऊं और फिर बैरंग वापस आऊं। मैं सिर्फ वह जगह आपको दिखा दूंगा और पचास रुपया ले लूंगा। इस बात से कोई मतलब नहीं कि आप उन्हें पकड़ सकें या नहीं। अगर मंजूर हो तो मेरे साथ चलिये नहीं जाइये हवा खाइये॥

आखिर सोच बिचार कर जेरी ने पचास रुपया देना स्वीकार किया और आप अपने साथियों से कुछ सलाह करने के लिये पीछे की तरफ हट गया। हिक ने भी कुछ हट कर लीना से कहा,"क्यों! हमारे साथ चल कर तमाशा देखना है?"लीना यह सुनते ही चलने के लिये तैयार हो गई क्योंकि वही यह

जानने की बड़ी उत्कंठा हो रही थी कि डिक इन सभों को साथ लेजाकर क्या किया चाहता है॥

थोड़ी ही देर में जेरी डिक के साथ चलने के लिये तैयार हो गया। डिक और लीना आगे आगे चलने लगे और जेरी तथा उसके साथी उनके पीछे पीछे रवाना हुए॥

तेरहवां बयान।

इस समय डिक जेरी को जिस तरफ ले चला था उधर का जंगल बहुतही घना और कुछ भयानक भी मालूम पड़ता था। ऊँचे २ पेड़ों के सबब से दिन को भी एक प्रकार का अंधकार ही छाया रहता था। उस तरफ कुछ दूर जाने बाद एक नाला भी पड़ता था जो बरसात के दिनों में नदी का रूप धारण कर लेता था तथा उसके सबब से उधर की जमीन बराबर तर रहा करती थी और कहीं कहीं दलदल भी हो जाता था जो कि आने जाने वाले मुसाफिरों के लिये बहुतही खतरनाक होता था क्योंकि अंधेरे के सबब से जल्दी इस बात का पता न लगता था कि सामने थोड़ी ही दूरी पर किस तरह की जमीन है॥

चलते चलते लीना ने डिक से धीरे से पूछा, "इसका क्या नाम है?"

डिक०। जेरी जर्विस॥

लीना०। मालूम होता है इसके साथ तुम्हारी पहिले भी मुलाकात हो चुकी है॥

डिक०। हां मैं इसे बहुत दिनों से जानता हूं और एक दफे

मेहनत करने पर सिर्फ़ पचास ही रुपये मिलेंगे तो मैं कभी यह हाल कहता। और अब तो गलती होही गई अब इस वा को भी जाने देना ठीक नहीं। लाओ निकालो रुपया॥

जेरी०। अभी क्यों दें! तुम पहिले हम लोगों को उस जगह ले चलो तब रुपया भी मिल जायगा॥

डिक०। और अगर वहां चल कर तुम रुपया न दो तो?

जेरी०।(हंसकर) नहीं नहीं ऐसा न होगा घबड़ाओ मत।

डिक०। अच्छा तो फिर मेरे साथ चलो। हां! एक बात और है। अगर वहां चल कर तुम उन दोनों को न पकड़ सके या इस समय तक वे वहां से चलेही गये तब भी मैं तुमसे पचास रुपये ले लूंगा॥

जेरी०। वाह तब तुम्हें कैसे रुपये मिलेंगे? जब हम लोग उन दोनों को पकड़ लेंगे तो तुम्हें रुपया मिलेगा॥

डिक०। अच्छा तो फिर आप ही जाकर उन्हें खोज भी लीजिये। मुझे कोई गरज नहीं है कि इतनी दूर जाऊँ और फिर बैरंग वापस आऊँ। मैं सिर्फ़ वह जगह आपको दिखा दूँगा और पचास रुपया ले लूँगा। इस बात से कोई मतलब नहीं कि आप उन्हें पकड़ सकें या नहीं। अगर मंज़ूर हो तो मेरे साथ चलिये नहीं जाइये हवा खाइये॥

आखिर सोच बिचार कर जेरी ने पचास रुपया देना स्वीकार किया और आप अपने साथियों से कुछ सलाह करने के लिये पीछे की तरफ हट गया। डिक ने भी कुछ हट कर लीना से कहा, "क्यों! हमारे साथ चल कर तमाशा देखना है?" लीना यह सुनते ही चलने के लिये तैयार हो गई क्योंकि उसे ये

से हिलाऊंगा तुमलोग तेजी से दौड़कर उन्हें गिरफ़ार कर लेना। मगर फुर्ती करना कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आने की आहट पाकर वे दोनों भाग जायँ। हां! एक बात का और खयाल रखना! जहां तक मैं समझता हूं उनके पास घोड़े जरूर होंगे सो तुम लोग भी घोड़ों पर सवार ही रहना और जब मैं बुलाऊँ आ जाना॥

इतना कह और जवाब की कुछ राह न देख हिक आगे की तरफ बढ़ा और इशारे से लीला से कहता गया कि वह कहीं खड़ी होकर तमाशा देखे॥

अब हिक जिस तरफ जा रहा था उधर एक बड़ा दलदल था, चौड़ाई में तो वह ज्यादे न था मगर लम्बाई में बहुत दूर तक फैला हुआ था और उसके उस पार जाने के लिये कोई ठीक रास्ता न था, बहुत चक्कर लगाकर जाना पड़ता था। सब से भयानक बात इस दलदल में यह थी कि इसका ऊपरी हिस्सा सूखकर ठोस हो गया था और देखने से यह नहीं मा-लूम होता था कि इसके नीचे दलदल है मगर वह ऊपरी हिस्सा इतना मजबूत भी न था कि आदमी का बोझ बरदाश्त कर सके॥

हिक ने इस दलदल को एक ऐसी जगह से पार किया जहां की जमीन कुछ ज्यादे ठोस होने के कारण आदमी का बोझ सम्हालने लायक थी। जब वह उस पार पहुंच गया तो उसने कदम दबाकर चलना शुरू किया और जब उस टूटे हुए मकान के पास पहुंचा जो वहां से थोड़ी ही दूरी पर था तो जमीन पर लेटकर चलने लगा। कुछ देर तक इसी तरह चलने और कान लगा कर सुनने के बाद वह एकाएक रुका और उसने दोनों

इसपर हाथ भी साफ कर चुका हूं ॥

लीना० । वह क्या ?

इसके जवाब में डिक वह सब हाल धीमे स्वर से ... कह गया जब उसने डिक के पीछे जाकर उसकी ... थैली लूटी थी । लीना यह सुन बहुत हँसी और बोली, तुम इसे इतना दिक कर चुके हो तो यह तुमसे बहुत ... होगा ?"

डिक० । भला यह भी कुछ पूछना है देखो खाक छानता यहां भी पहुंच गया ॥

इसके बाद कुछ ज्यादा बातचीत करने का इन्हें मौका न मिला क्योंकि अब वह जगह आगई थी जहां डिक पहुंचा चाहता था अस्तु वह रुक कर लेरी और उनके साथियों के आने का इन्तज़ार करने लगा जो कि पीछे छूट गये थे ॥

थोड़ी ही देर में साथियों सहित लेरी वहां आ पहुंचा। रास्ते में एक पेड़ की डाल की चोट बचाते समय उसे दूसरी डालकी ऐसी चोट लगी थी कि उसका सिर भिन्ना उठा था। वह अपना सिर टटोलता तथा इधर उधर देखता हुआ डिक से बोला, "तुम यह कैसी जगह हमलोगों को ले आये हो ? क्या यहीं वे दोनों डाकू हैं ?"

डिक० । हां मैंने यहीं उन दोनों को देखा था। अच्छा तो तुमलोग उनका मुकाबला करने को तैयार हो ?

लेरी० । हां हमलोग तैयार हैं ॥

डिक० । तो मैं पहिले जाकर देख आऊं कि वे दोनों हैं या नहीं अगर वे होंगे तो मैं वहीं से अपना दोनों हाथ ओर

ाता था कि वे कीचड़ही व दन से लपेटे हुए हैं। जेरीने अपना
ाट उतार डाला और चेहरे की कुछ सफाई करने बाद
ालियों की बौछार करता हुआ डिककी तरफ बढ़ा जो अब
ाड़ से बाहर आ गया था। डिक ने बड़ी मुश्किल से अपने
ो हँसने से रोका और जेरी से पूछा, "क्यों आप मुझे क्यों
ालियां दे रहे हैं?"

जेरी ने अपनेको कुछ सम्हाल कर कहा, "तुमने हमलोगों
को पहिले यह क्यों नहीं बताया कि सामने दलदल है?"

डिक०। तुम्हारे आंख थी या नहीं जो मैं तुम्हें बताता?
तुमने यह खयाल न किया कि मैं जो इतना चक्कर लगा कर
यहां आया हूं सो किस लिये? तुम भी उसी रास्ते से इधर
आ जाते जिधर से मैं आया था॥

जेरी०। अच्छा अच्छा बहुत बकवाद न करो यह बताओ
डाकू कहां हैं?

डिक०। वे कुछ आंख कान बन्द करके तो बैठे नहीं थे कि
इतना शोर, गुल, चीखना, चिल्लाना, सुनकर भी बैठे रहते। वे
तो कभी के निकल भागे और (कांप कर) जाती समय मुझ
पर गोली भी चलाई बारे मैं किसी तरह बच गया॥

जेरी का एक साथी०। हां पिस्तौल की आवाज तो मैंने
भी सुनी थी॥

जेरी०। (डिक से) अच्छा तो अब वे किस तरफ गये हैं?

डिक०। (अंगली से बता कर) "एक तो उस तरफ चला
गया मगर दूसरा किधर गया सो मैंने देखा नहीं। मैं डर के मारे
ेड़ की आड़ में छिप गया था॥

हाथ सिर से ऊपर उठाकर जोर जोर से हिलाने लगा॥

जेरी और उसके साथी भी घोड़ों पर सवार थे सि हिक की सब हरकतें देख रहे थे वह इशारा पातेही घोड़ों कर उस तरफ बढ़े जिधर हिक था। उन में से किसी को इस बात का गुमान न था कि सामने दलदल है इसलिये उन्हों किसी तरह का खयाल न किया और बराबर बढ़े गये। ए एक हिक का घोड़ा दलदल में जा फँसा और जबतक जेरी घो रोके रोके तब तक वो और भी आगे बढ़ गया और अपनी जान बचाने के लिये उछल कूद करने लगा। जेरी के साथियों की भी यही हालत हुई और वे सब अपनी अपनी जान बचाने की फिक्र में पड़ गए। घोड़ों के उछल कूद के सबब से कीच की छींटायें उड़ उड़ कर तथा उनके चेहरों पर पड़ पड़ के उन्हें और भी अन्धा बना रही थीं॥

हिक ने जब देखा कि वे सब अपनी अपनी फिक्र में प गये हैं और मेरी तरफ किसी का खयाल नहीं है तो उस अपनी पिस्तौल कमर से निकाल कर दो दफे हवा में छोड़ी औ आप डरता और कांपता हुआ इस तरह एक पेड़ की आ में जा छिपा मानो किसी ने उसपरही पिस्तौल छोड़ीहो॥

बड़ी मुश्किल से किसी तरह जेरी दलदल के बाहर आया और उसके बाद उसके साथी भी बाहर आये तथा सभों ने खींच तानकर बचे हुए घोड़ों को भी किसी तरह बाहर किया मगर इस समय उन सभों की शक्ल ऐसी हो गई थी कि हँसी रोके नहीं रुकती थी। टोपी किसी के सर पर न थी और कपड़ा कीचड़ में इतना लथपथ हो रहा था कि यही मालूम

जाय जिससे उनके पकड़ने में सुभीता हो डिक के साथ चलना
शुरू किया। सब के सब उस मकान के पास आये। यह मकान
नाम मात्र को ही मकान था असल में सिर्फ एक दालान था जो
बहुत टूट फूट गया था मगर तिस पर भी इस लायक था
कि बरसात में पानी रोक सके॥

इस समय उस दालान में पत्तल इत्यादि पड़ी हुई थी
और एक कोने में कुछ राख इत्यादि भी पड़ी हुई थी जिसे
देख जेरी को निश्चय हो गया कि जरूर वे दोनों डाकू यहां टिके
थे। वह फिर बाहर आया और घोड़े पर सवार हो जेब में से
एक अशर्फी निकाल कर डिक की तरफ फेंका और इसके बाद
साथियों को साथ ले चला गया। डिक चिल्लाता ही रह गया कि
"बाकी का बोस?" मगर किसी ने उसकी बात पर ध्यान न
दिया॥

जेरी ने अपने कपड़ों की तरफ देखा और फिर अपने
थियों की तरफ। सब की यह मैले पपथ हो रहे थे। ऐसी
में डाकुओं का पीछा करके अपनी बेइज्जती कराना उसे
न था इसलिये उसने अपने साथियों से कहा, "अब मेरी समझ
लौट चलना ही बेहतर होगा?" सभों ने उसकी हां में हां मि
और पीछे की तरफ लौटे। जब वे कुछ दूर चले गये तो डिक
जोर से पुकार कर कहा, "अजी मेरा रुपया तो देते जाओ
आगे क्यों जाते हो?"

जेरी ने पीछे घूम कर पूछा, "रुपया कैसा?"

डिक०। अब हमको बतलाना पड़ेगा कि रुपया कैसा
अजी जनाब वही रुपया जो आपने मुझे देने को कहा था॥

डेरी०। (चिढ़ कर) अब तुमको कैसा रुपया दिया जाय!
क्या तुमने डाकुओं को पकड़ा दिया जो रुपया मांगते हो!

डिक ने जहां वह खड़ा था वहां से देख लिया था कि उस
टूटे मकान के बाहर की तरफ कुछ हंडिया पत्तल पड़ी है जिससे
यह गुमान होता था कि वहां किसी मुसाफिर ने रसोई बनाई
है, अस्तु उसने जेरी के पास जाकर कहा, "मैंने आपसे यह
वादा तो किया नहीं था कि उनको पकड़ा दूंगा। मैंने तो सिर्फ
यह जगह आपको बतला देने को कहा था जहां वे दोनों थे।
यदि आप उन्हें पकड़ न सकें तो मेरा क्या कसूर? यदि आप
को इस बात का विश्वास न होता हो कि वे दोनों यहां थे तो
आप वहां चल कर देख सकते हैं कोई न कोई निशान उनके
रहने का जरूर दिखाई पड़ेगा॥"

जेरी ने यह सोच कर कि शायद कोई ऐसी चीज

भाग्य से पिकी को मार्था नाम की एक मजदूरनी भी ऐसी मिल गई थी कि जो उसी के मन लायक थी। पिकी ने उसे विश्वास दिला दिया था कि वही घर की मालकिन है और उसीके कहने के मुताबिक सब काम होने चाहिये। सब कामों में एक काम गर्टरूड के ऊपर निगरानी रखने का भी शामिल था और इसी पर ज्यादा ज़ोर भी दिया गया था॥

यद्यपि गर्टरूड को लन्दन रहते बहुत दिन बीत गए मगर वह अपने दिल से डिक का खयाल न भुला सकी जिसे वह रिचार्ड के नाम से जानती थी क्योंकि आखिरी दफे जब उस को डिक से मुलाकात हुई थी तो डिक ने कुछ सोच विचार रिचार्ड ही नाम गर्टरूड को बताया था और असली नाम छिपा रक्खा था। वह उससे मिलने के लिये घबराती और तरह तरह के बांधनू बांधती मगर ठीक एक भी न होता था॥

आखिर एक दिन उसने यह निश्चय किया कि किसी के हाथ रिचार्ड को एक चीठी भेजवावे मगर इसमें मुश्किल इस बात की थी कि उसे पता नहीं मालूम था। सोचते सोचते उसे यह खयाल आया कि पीटर शायद उसका पता जानता हो क्योंकि उसी के पास रिचार्ड (डिक) प्रायः ठहरा करता था। यह खयाल आते ही उसने पीटर के नाम की एक चीठी लिखी और उसमें उससे रिचार्ड का पता पूछा॥

चीठी ले जाने के लिये उसने मार्था को बुलाया और पीटर की सराय का पता उसको बतला कर चीठी देदी और कह दिया कि कोई सवारी करके जल्दी चली जाय और जब आवे, साथ ही यह बात भी बिता दे कि इस

चौदहवां बयान।

गर्टरूड ने लंदन आकर अपने बाप से बिल्कुल ही छोड़ दिया क्योंकि थोड़े ही दिन बाद उसके बाप ने भी शादी कर ली और इसके सिवाय कई जरूरी भी उसने गर्टरूड को नहीं बुलाया जिससे उसका दिल और खट्टा हो गया। इन बातचीतों में रंटन की बहिन प्रिसिला गर्टरूड को और भी बढ़ दे रक्खी थी क्योंकि अपने घर से निकाल दिये जाने के कारण उसे अब सिवाय के और किसी का सहारा न था और वह यह समझती थी जब तक गर्टरूड अपने बाप से बिगड़ी रहेगी तभी लिये भी खैर है॥

लेकिन गर्टरूड ने जो बात [illegible] था यह न हुआ क्योंकि थोड़े ही दिनों बाद उसने हाथ फैलाना शुरू किया और धीरे धीरे गर्टरूड के ऊपर भी हुकूमत करने लगी जो उसे (गर्टरूड को) बिल्कुल पसन्द न था। प्रिस्किला ने जिसे अब हम सुबीते के लिये पिकी कहकर पुकारें यह सोचा था और उसका यह सोचना ठीक भी था कि जब तक गर्टरूड उससे दबती रहेगी तभी तक खैर है नहीं तो जब वह खुदमुख़ार हो जायगी तो उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर करेगी। इसी बात को सोच कर पिकी इस बात का भी ख्याल रखती थी कि गर्टरूड मर्दों से ज्यादा मुलाकात बढ़ाने न पावे क्योंकि ऐसा होने से कदाचित वह जल्दी शादी कर लेती और ऐसा होने पर भी उसे गर्टरूड का साथ छोड़ना पड़ता॥

इसके बाद लन्दन जाकर वहां की एक सराय में डेरा डाल दिया। एक दिन मौका पाकर उसने गर्टरूड को एक चीठी लिख कर यह पूछा कि वह किस दिन उससे मिलने के लिये आवे॥

गर्टरूड ने अपनी चीठी के जवाब की राह इतने दिनों तक देखी और जवाब न पाकर निश्चय कर लिया था कि वह चीठी पीटर को नहीं मिली मगर आज खुद रिचार्ड की चीठी पाकर उसे बहुत खुशी हुई। कुछ देर तक तो वह तरह तरह के खयालों में डूबी रही और इसके बाद वह सोचने लगी कि रिचार्ड को क्या जवाब दिया जाय या उसे कब बुलाया जाय। वह बहुत देर तक इसपर गौर करती रही मगर कुछ निश्चय न कर सकी। अन्त में उसने यह निश्चय किया कि मार्था को भी अपने इस भेद में शामिल कर ले और उससे इस बारे में सलाह पूछे॥

जब शाम हुई तो उसने मार्था को अपने कमरे में बुलाया और जब वह आई तो उससे बाल साफ करने को कहा। मार्था चुपचाप उस कुर्सी के पीछे जा खड़ी हुई जिसपर गर्टरूड बैठी थी और उसका बाल साफ करने लगी। गर्टरूड ठहर ठहर कर लम्बी सांसें लेती थी जिससे मार्था ने पूछा, "क्या आप की तबीयत कुछ खराब है?" गर्टरूड ने जवाब दिया, "नहीं कुछ नहीं एक बात सोच रही हूं।"

मार्था०। क्या मैं भी वह बात जान सकती हूं?

गर्टरूड०। हां अगर तू किसी से कहे नहीं तो॥

मार्था०। नहीं अगर आप मना कर देंगी तो फिर मैं कहां किसी से कहने लगी। आप इस बात से घबड़ाइये नहीं मैं कभी

चीठी का हाल किसी को मालूम न हो अगर मालूम जायगा तो उसके लिये अच्छा न होगा। मार्था बड़ी पूर्त उसने देख लिया कि अगर यह काम ठीक तरह से हो तो उसे कुछ इनाम मिलने की उम्मीद है अस्तु उसने के समझाने बुझाने को तो ताक पर रख दिया और चीठी जाने के लिये तैयार हो गई। यह कह कर कि "एक रि को देखने जाना है।" उसने मिकी से एक दिन की छुट्टी ली और पीटर की सराय में पहुंची जो लन्दन शहर के बाहर तरफ थी॥

मार्था ने पीटर को अपनी सराय में न पाया क्योंकि वह तो आजकल जिप्सियों के साथ था मगर उसकी स्त्री ने वह चीठी लेली और वादा किया कि कल तक पीटर को चीठी मिल जायगी। मार्था ने लौट कर गर्टरूड को सब हाल सुनाया और वह उत्कंठा के साथ जवाब का इन्तजार करने लगी॥

जब पीटर को वह चीठी मिली तो उसने डिक को दिखलाया और उससे पूछा कि इसका क्या जवाब दिया जाय। डिक वहां रहते रहते घबड़ा गया था इससे उसने यही निश्चय किया कि कुछ दिनों के लिये लन्दन चला चले और वहीं गर्टरूड से मुलाकात भी करे। यद्यपि लन्दन जाने से उसके पकड़े जाने का बड़ा डर था मगर उसे इन बातों का कुछ खयाल ही न था और वह यह जानता ही न था कि डर किस चिड़िया का नाम है। उसने कह सुन कर टामी और जिप्सियों से कुछ दिनों के लिये छुट्टी लेली और पीटर की सराय में आया जहां दो तीन दिन रहकर उसने सब हाल चाल की खबर लेली और

र यस उनका प्रेम भी हवा हो जाता है। इसी तरह औरतों
न भी हाल समझिये। जब तक मर्द अमीर रहे और उनके
हने कपड़े की फरमाइश अच्छी तरह पूरी करता रहे तब तक
ो ठीक है नहीं इसके बाद बस॥

गर्टरूड०। तो फिर तू यह क्यों कहती है कि "मैं सच्चा
प्रेम कर चुकी हूं॥"

मार्था०। मैं मामूली तरह से औरतों की गिनती के बाहर
तो हूं नहीं। जैसा ये लोग कहती हैं और जैसा मैं सुना करती
हूं वही आप से भी कहती हूं॥

गर्टरूड०। (कुछ देर तक चुप रहने बाद) तो तेरे कहने
का यह मतलब है कि कोई किसी से सच्चा प्रेम नहीं कर सकता॥

मार्था०। नहीं मेरा यह मतलब नहीं है। सभी लोग ऐसे
नहीं होते। कुछ लोगों में सच्चा प्रेम भी देखा जाता है मगर
ऐसों की गिनती बहुत कम है। शायद आप भी किसी को......

गर्टरूड०। हां मैं भी एक आदमी को प्यार करती हूं।
उससे पहिले पहिल मेरी जान पहिचान कई बरस हुए मेरे
बाप के यहां हुई थी जब मैं वहां रहा करती थी। उसके बाद
बहुत दिनों तक मैंने उसे नहीं देखा मगर अब थोड़े दिन हुए
फिर मुलाकात हुई है॥

मार्था०। उनकी उमर क्या होगी?

गर्ट०। यही कोई अट्ठाईस उन्नीस बरस की। रंग रूप में
बहुत अच्छे हैं। आज ही उनकी एक चीठी भी मुझे मिली है,
ठहर मैं तुझे वह चीठी दिखाऊं॥

इतना कह कर गर्टरूड उठी और हिक की चीठी खोल

किसी से जिक्र न करूंगी॥

गर्टरूड०। (कुछ सोच कर) अच्छा तू ने कभी प्रेम किया है?

मार्था०। हाँ कइयों से॥

गर्टरूड०। कइयों से। इसका क्या मतलब?

मार्था०। यही कि जब मैं जवान थी तो कई आदमि की चहेती थी॥

गर्टरूड०। सो मैं नहीं पूछती, यह बतला कि कभी कि से सच्चा प्रेम भी किया है॥

मार्था०। अब जब आप पूछती ही हैं तो मैं क्यों कोई आप से छिपाऊँ। बात यह है कि मैं प्यार तो सच्चे ही तौर करती थी मगर वह प्यार ज्यादा दिनों तक नहीं रहता थोड़े ही दिनों के लिये होता था॥

गर्टरूड०। वाह! जब सच्चा प्रेम था तो थोड़े दिनों के लि क्यों?

मार्था०। इस बात का जवाब तो मैं नहीं दे सकती हां यह कह सकती हूं कि जो मैंने कहा वह सच कहा है। एक बात और भी है॥

गर्टरूड०। वह क्या?

मार्था०। यही कि मैंने अभी तक किसी को किसी से सच्चा प्रेम करते देखा भी नहीं, जितना देखा वह सब एक तरह का लेनदेन या सौदा ही देखा। मर्द औरतों को तभी तक प्यार करते हैं जब तक उनमें खूबसूरती रहती है, मगर किसी कारण से या बीमारी से औरत की खूबसूरती में फर्क आ गया

पन्द्रहवां बयान।

दूसरा दिन और रात भी किसी तरह बीत गई और वह दिन आ गया जिस दिन गर्टरूड ने रिचार्ड को आने को कहा था। जब गर्टरूड और उसकी चाची करीब दस बजे के खाना खा कर उठे तो गर्टरूड ने पिकी से कहा, "चाची! परसों मेरा जन्म-दिन है और मेरे पास पहिनने को कोई अच्छा कपड़ा नहीं है अगर तुम जाकर मेरे लिये कोई अच्छा कपड़ा ले आतीं तो बहुत अच्छा होता॥"

पिकी को बाजार में घूम घूम कर चीजें खरीदने का बड़ा शौक था आज जब उसने गर्टरूड की यह बात सुनी तो बहुत खुश हुई और बोली, "हां बेटी मैं जरूर जाऊंगी, मेरे पास भी कोई अच्छा कपड़ा नहीं है लगे हाथ अपने लिये भी कुछ लेलूंगी, तुम जाओ जल्दी से कपड़ा पहिन कर तैयार हो जाओ। दोनों साथ ही बाजार चलेंगे॥"

मगर गर्टरूड यह कब चाहती थी कि अपनी चाची के साथ बाहर जाये। उसे तो अपनी चाची ही को आज घर से टालना था। इसलिये जब उसने देखा कि पिकी उसे भी साथ ले जाया चाहती है तो सोच में पड़ गई कि किस तरह उसे टालें॥

उसको सोचते देख पिकी ने पूछा, "क्यों किस सोच में पड़ गई?"

गर्ट०। कुछ नहीं यही सोचती हूं कि आज सवेरे से मेरा सिर कुछ दर्द कर रहा है सो मेरा इस समय धूप में निकलना ठीक होगा या नहीं॥

कर मार्था को दिखाई। जब मार्था पढ़ चुकी तो बोली, आपने इसका क्या जवाब दिया है?"

गर्ट०। बस इसी सोच में तो हूं कि क्या जवाब दूं। बात करने की तो बड़ी इच्छा होती है॥

मार्था०। तो फिर इसमें रुकावट क्या है?

गर्ट०। यही कि मैं अपनी चाची को इस बात की खबर नहीं होने दिया चाहती॥

मार्था०। यह तो मुश्किल बात है। वह तो थोड़ी दे लिये भी आप से अलग नहीं होतीं॥

इतना कह कर मार्था कुछ देर तक इस तरह खड़ी मानो किसी बड़े भारी सोच में डूबी हुई है इसके बाद बोल "अच्छा कल तो नहीं आप उन्हें परसों बुलाइये तब तक कोई न कोई ढंग सोच लूंगी॥"

गर्टरूड ने बड़ी खुशी से यह बात मान ली और उसी च चीठी भी लिख डाली जो कि उसी दिन डिक के पास भेजवा दी गई॥
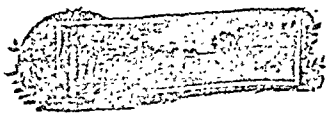
जाती तथा इस तरह से दुतर्फी नफा उठाती थी।
इस समय जैसे ही विकी घर से बाहर निकली वह गर्ट-
कमरे में चली आई और उससे कह दिया कि "तुम्हारी
चली गई॥"
गर्टरूड जो अभी तक मुंह ढांपे पड़ी हुई थी यह सुन
उठ खड़ी हुई और हंसकर मार्था से बोली, "तेरी तर्कीब
कारगर हुई! अच्छा तू अब नीचे जाकर बैठ जब कोई
जा खट खटाये तो खोल दीजियो॥"
मार्था नीचे चली गई और गर्टरूड खिड़की के पास बैठ
आने जाने वाले आदमियों और घोड़ों पर निगाह दौ-
लगी। उसे ज्यादे देर तक राह न देखनी पड़ी। थोड़ी ही
के बाद एक गाड़ी दरवाजे पर आकर खड़ी हुई और उस
उतर तथा गाड़ी बिदाकर रिचार्ड दरवाजा खटखटाने
। गर्टरूड बड़ी खुशी से आकर एक कुर्सी पर बैठ गई और
ही मार्था के साथ रिचार्ड या डिक भी कमरे के अन्दर
ता हुआ दिखाई दिया॥
हम यह लिख कर पाठकों का समय नष्ट नहीं किया
हते कि दोनों में किस तरह से बातें हुई, कैसी कैसी शिका-
हुई या किस किस तरह के वादे किये गये। अगर इन
मौका मिलता तो न जाने कितनी देर तक वे उसी तरह
तें करते रहते मगर ऐसा न हुआ क्योंकि यकायक मार्था
कमरे के बाहर चली गई थी अन्दर आई और घबड़ाई हुई
ज से बोली, "अब क्या किया जाय! अब क्या किया
ी तो अभी ही लौट आई और दर्वाजे पर

पिकी० । नहीं नहीं अब तबीयत खराब है तो जाना ठीक नहीं। मैं भी आज न जाऊंगी बल्कि यहीं

गर्ट० । नहीं नहीं मुझे कुछ ऐसी तकलीफ नहीं है सबब से तुम अपना जाना छोड़ दो, कुछ सिर भारी मालूम है कोई बात नहीं है कुछ देर सो रहने से ठीक हो जा

पिकी ने चलने की तैयारी की। जब कपड़े वगैर तैयार हुए तो मार्था को बुला कर कहा, "मार्था! मैं देर के लिये एक काम से बाहर जाती हूं। गर्टरूड की कुछ खराब है सो तू उसी के पास रहियो और उसकी ता होशियार रहियो कुछ लड़कपन न करने पाये॥"

मार्था०। जैसा आप कहती हैं वैसा ही होगा आप रहें॥

पिकी० । जब मैं लड़की थी तो कोई धोखे फरेब का भी नहीं जानता था मगर आज कल की लड़कियां तो बात में धोखा देती हैं। देखने में तो बड़ी सीधी मगर नस नस में खुटाई भरी रहती है, शायद गर्टरूड भी किसी चालाकी की फिक्र में हो। सिवाय मेरे और कोई आवे तो दर्वाजा न खोलियो॥

पिकी इसी तरह से कुछ देर तक मार्था को तरह तरह की नसीहत देती रही और इसके बाद मकानके बाहर चली गई। उसे यह खबर न थी कि मार्था भी दूसरे मेल में मिली हुई है और उसकी सब नसीहत पानी में मिल गई है। मार्था ऐसी धूर्त थी कि जब पिकी के सामने रहती तो उसके मेल की बातें करती और जब गर्टरूड से बात करती तो उसके दम

मार्था ने जवाब दिया, "मुझे इस बात का खयाल नहीं कि आप इतनी जल्दी लौट आवेंगी। इसी से दर्वाजा खोलने में देर हो गई॥"

विकी ने और गर्म होकर कहा, "तो क्या तुझे यह बात नहीं सूझी कि कोई दर्वाजा खटखटा रहा है तो अन्दर आने के लिये ही खटखटाता होगा?"

मार्था०। हां यह बात तो मैं समझ गई थी मगर तुम्हीं ने तो कहा था कि मेरे सिवाय और कोई अन्दर आना चाहे तो दर्वाजा न खोलना॥

विकी ने अब कुछ ठंडी होकर कहा, "हां यह तो मैं कह गई थी मगर तू खिड़की से झांक कर देख तो सकती थी कि कौन है॥"

मार्था०। हां यही तो मैंने किया और इसीसे तो इतनी देर होगई॥

अब विकी को इस विषय में और कुछ कहने सुनने को न मिला इससे उसने पूछा, "गर्टरूड कहां है?"

मार्था०। वह अपने कमरे में सो रही हैं॥

विकी गर्टरूड के कमरे की तरफ चली। कमरे में पहुंचते ही आहट पाकर गर्टरूड ने आंखें खोल दीं और ताज्जुब से पूछा, "हैं! तुम अभी ही लौट आई?"

विकी०। हां मैं जल्दीही लौट आई। अब तुम्हारी तबीयत कैसी है?

गर्टरूड०। अब तो कोई शिकायत नहीं है। तुम्हारे जाने के थोड़ी ही देर बाद मुझे नींद आगई और तब से मैं अभी

रही हैं !!"

गर्टरूड यह सुनतेही भौंचकसी रहगई। उसे ज़रा इस बात का खयाल न था कि उसकी चाची इतनी जल्दी आयेगी और उसकी सब करी कराई मेहनत तबाह कर देगी। आखिर कुछ देर के बाद उसने अपने को और यह सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये। दे ही देर में उसने एक ढंग सोच लिया और डिक का हाथ कर यह कहती हुई एक कोठड़ी में चली गई, "जल्दी तुम चले आओ।" उस कोठड़ी में से एक दूसरी कोठड़ी में रास्ता था। गर्टरूड ने उस दूसरी कोठड़ी का दर्वाजा खोल उसमें दीवार में लगी हुई खूटियों के सहारे कपड़े लटक रहे और वह कोठड़ी कपड़े ही रखने के लिये बनी हुई थी गर्ट ने थोड़े कपड़े खूंटियों से उतार कर जमीन पर डाल दिये डिक को उस पर बैठा कर कहा, "जब तक मैं आकर दर्वाजा खोलूं इसके बाहर निकलने की कोशिश न करना इसके बा वह कोठड़ी के बाहर आई और दरवाजा बन्द कर तथा उसमें एक ताला लगा और ताली अपनी जेब में रख अपने कमरे में आई और मार्था को जो अभी तक वहीं खड़ी थी दर्वाजा खोल‑ने के लिये कहा॥

उधर विकी इतनी देर तक दर्वाजे पर खड़ी घबरा उठी और उसने फिर जोर से कुन्डा खटखटाया। इसके साथ ही मार्था ने जाकर दर्वाजा खोला और वह भीतर आई। अन्दर आतेही विकी ने गुस्से के साथ मार्था से पूछा, "क्यों रे। दर्वाजा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?"

तक सोई ही रही थी, अभी तुम्हारे पांव की आहट पाकर मैं खुली है। नींद आजाने के कारण अब तबीयत बिलकुल अच्छी।

पिकी०। चलो यह बहुत अच्छा हुआ कि तुम्हारी तबीयत ठीक हो गई। मैं इसी वास्ते यहां आई हूं कि तुम्हें अपने साथ कपड़े वाले की दूकान पर ले चलूँ। कई नए ढङ्ग के कपड़े आये हैं तुम अपनी आंख से देख कर पसन्द कर लेना॥

गर्टरूड०। मगर........

पिकी०। (बात काट कर) अब अगर मगर कहने का समय नहीं है तुम जल्दी उठो और कपड़े पहिन कर तैयार हो जाओ। मैंने गाड़ी दर्वाजे पर रोक रक्खी है। उठो उठो जल्दी करो कपड़े पहिन कर तैयार हो मैं अभी आई॥

इतना कह कर पिकी कमरे के बाहर चली गई और गर्टरूड खड़ी होकर उसको मन ही मन बुरा भला कहने लगी। पाठक स्वयम् ही सोच सकते हैं कि इस वक्त का बाहर जाना उसे कैसा अखरा। वह डिक को कोठरी में बन्द छोड़ कर जा नहीं सकती थी और न अपना बाहर जाना ही रोक सकती थी। इसके सिवाय यह बात भी नहीं हो सकती थी कि पिकी की मौजूदगी में किसी तरह डिक को निकाल दे। खैर उसने यह सोच कर ढाढ़स किया कि जाती दफे ताली मार्था को देती जाऊँगी और उससे कह दूँगी कि डिक को मौका पा सब हाल समझाकर घर के बाहर कर दे॥

पिकी जब अपनी कोठरी में पहुंची तो टोपी उतारने पर उसे मालूम हुआ कि उसमें कीचड़ की दो तीन छीटायें [illegible] गई हैं जिससे वह कुछ मैली हो रही है। [illegible]

पिको ने कहा, "बिना रूमाल के क्या काम नहीं चल
कता?" मगर गर्टरूड क्यों मानने लगी थी? उसने मार्था को
काम के अन्दर भेजा और उसके लौटने की राह देखने लगी।
र्था थोड़ी ही देर में रूमाल ले कर लौट आई और उसके
हरे की तरफ देखने से गर्टरूड को मालूम हो गया कि रिचार्ड
काम के बाहर हो गया ॥

सोलहवां बयान ।

जब डिक को गर्टरूड ने कोठड़ी में बन्द कर दिया तो वह
बहुत ही घबड़ाया और इसका सबब सोचने लगा मगर कुछ
समझ में न आया। कभी कभी उसको यह खयाल होता कि
शायद गर्टरूड ने उसे धोखा दिया मगर यह बात उसके दिल
में बैठती न थी। आखिर जब उसे बैठे बैठे बहुत देर हो गई
और कोई दरवाजा खोलने न आया तो वह यह सोचकर दर्वाजे
के पास आया कि पिस्तौल की गोली से ताला तोड़कर बाहर
निकले मगर उसे ऐसा करने की जरूरत न पड़ी क्योंकि उसी
समय मार्था ने आकर दर्वाजा खोल दिया। डिक ने उससे अपने
कोठरी में बन्द किये जाने का सबब पूछा और उसने जल्दी से
सब हाल उसे सुना कर एक पिछले दरवाजे से मकान के बाहर
कर दिया। जाती समय डिक ने एक अशर्फी मार्था के हाथ में
रख दी जिसे उसने कुछ नाकर नूकर के बाद अपनी जेब में
रख लिया ॥

अपने डेरे पर लौट कर उसने गर्टरूड को एक चीठी लिखी

लिये कुछ देर और ठहरी और जब यह मिलती नज़र नहीं आई तो मार्था से बोली, "ख़ैर इस वक्त रहने दे फिर तोशिये जा गर्टरूड को कपड़े पहिना॥"

मार्था तो यह चाहती ही थी। यह जल्दी गर्टरूड के कम में गई और उसे कपड़े पहिनाते २ सब हाल कह सुनाया गर्टरूड ने उससे कहा, "मैं साथ जाती हूं तू उस कोठरी की ताली ले, रिचार्ड को सब हाल कह कर मकान के बाहर क दीजिये।" इतना कह उसने अपने जेब से ताली निका मार्था के हाथ में दी मगर उसी समय विकी उस कमरे में आ और मार्था की तरफ देख कर बोली, "जा तू भी कपड़े पहिन कर तैयार होजा हम लोगों के साथ चलना होगा॥"

अब गर्टरूड के बदन में काटो तो लहू नहीं। उसकी इस उम्मीद पर भी पानी पड़ गया। यह मार्था से कुछ कहा चाहती थी मगर विकी ने मैाका न दिया और मार्था कमरे के बाहर चली गई॥

थोड़ी देर बाद मार्था भी तैयार होकर आगई और तीनों आदमी मकान के बाहर आये। दरवाजेही पर गाड़ी खड़ी थी। गर्टरूडऔर विकी गाड़ी में बैठ गई। मार्था बैठा ही चाहती थी कि यकायक चौंक कर गर्टरूड से बोल उठी, "कैसी भारी गलती होगई! आपका रूमाल तो टेबुल ही पर छूट गया॥"

गर्टरूडने भी जेब में हाथ डाल कर कहा, "हां, हां, रूमाल तो है नहीं, तू कैसी भुलक्कड़ है, मैंने चिता दिया था कि रूमाल लेती आइयो फिर भी भूल गई। जा जल्दी लेकर

पिकी ने कहा, "बिना रूमाल के क्या काम नहीं चल सकता?" मगर गर्टरूड क्यों मानने लगी थी? उसने मार्था को मकान के अन्दर भेजा और उसके लौटने की राह देखने लगी। मार्था थोड़ी ही देर में रूमाल ले कर लौट आई और उसके चेहरे की तरफ देखने से गर्टरूड को मालूम हो गया कि रिचार्ड मकान के बाहर हो गया ॥

सोलहवां बयान।

जब डिक को गर्टरूड ने कोठड़ी में बन्द कर दिया तो वह बहुत ही घबड़ाया और इसका सबब सोचने लगा मगर कुछ समझ में न आया। कभी कभी उसको यह खयाल होता कि शायद गर्टरूड ने उसे धोखा दिया मगर यह बात उसके दिल में बैठती न थी। आखिर जब उसे बैठे बैठे बहुत देर हो गई और कोई दरवाजा खोलने न आया तो वह यह सोचकर दर्वाजे के पास आया कि पिस्तौल की गोली से ताला तोड़कर बाहर निकले मगर उसे ऐसा करने की जरूरत न पड़ी क्योंकि उसी समय मार्था ने आकर दर्वाजा खोल दिया। डिक ने उससे अपने कोठरी में बन्द किये जाने का सबब पूछा और उसने जल्दी से सब हाल उसे सुना कर एक पिछले दरवाजे से मकान के बाहर कर दिया। जाती समय डिक ने एक अशर्फी मार्था के हाथ में रख दी जिसे उसने कुछ नाकर नूकर के बाद अपनी जेब में रख लिया ॥

अपने डेरे पर लौट कर उसने गर्टरूड को एक चीठी लिखी

मगर दो दिन तक राह देखने पर भी उसे उसका कोई पता नहीं मिला जिससे उसे कुछ ताज्जुब हुआ। एक जगह बैठे बैठे उसे बड़ी घबराहट मालूम हुई और वह घूमने के लिये बाहर निकलने की इच्छा करने लगा। यद्यपि ऐसा करने में खतरा था मगर उसकी प्रकृति ही ऐसी थी कि वह ऐसी बातों का खयाल नहीं करता था। आखिर उससे न रहा गया और वह शाम के वक्त एक बगीचे की तरफ चला जहां किसी तरह का जलसा था। अपनी सूरत उसने बदल ली थी और कपड़े भी अमीरों की तरह पहिने हुए था तथा एक सोने की घड़ी भी लगाई हुई थी जिसे उसने कुछ दिन हुए एक अमीर से छीना था।

बाग के पास पहुंचने पर सब से पहिले जिस चीज पर उस की नजर पड़ी वह एक नोटिस थी जिसमें मोटे मोटे हरफों में हिक का हुलिया तथा उसके पकड़ने वालों को इनाम वगैरह मिलने की बात लिखी हुई थी। नोटिस के नीचे एक आदमी खड़ा उसे देख रहा था और जब हिक उस आदमी से कुछ पूछने के लिये उसके पास गया तो उसे यह देख बड़ाही ताज्जुब हुआ कि वह आदमी स्वयम् जेरी ही था॥

जेरी को देखते ही एक दफे तो हिक झिझका मगर फिर सम्हल कर आगे बढ़ा गया और उसके बगल से होता हुआ बाग के अन्दर चला गया। जेरी ने इसको देखा तो जरूर मगर पहिचान न सका और बात की बात में हिक बाग के अन्दर घुस कर भीड़ में मिल गया॥

बाग के अन्दर पहुंच कर हिक इधर उधर घूमने फिरने लगा। उसके दो तीन साथी भी उसे वहां दिखाई दे रहे थे

र हिक ने इस समय उनसे मिलना उचित न समझा। वह
से पहिले कभी इस बाग में नहीं आया था इससे इस समय
शौक के साथ घूम फिर कर अपना दिल बहलाने लगा॥

घूमते घूमते हिक एक ऐसी जगह पहुंचा जहां कई तरह के
लो कुंज बने हुए थे और फूल पत्ता से अच्छी तरह ढँके
ने के कारण बहुत ही सुहावने मालूम होते थे। हिक भी
कुंज के अन्दर घुस गया। अन्दर बैठने के लिये जगह बनी
थी जहां हिक बैठ गया और फिर कुछ सुस्ताने के इरादे
लेट रहा॥

इस कुंज के बगल में एक दूसरा कुंज था जिसमें इस समय
मर्द और दो औरतें बैठी हुई बातें कर रही थीं। नजदीक
ने के कारण उनकी बातें साफ सुनाई देती थीं इससे हिक
ध्यान भी उसी तरफ चला गया और वह उन की बातें
ने लगा॥

एक औरत ने कहा, "सुना है कि हिक टर्पिन आज कल
सी शहर में आया हुआ है॥"

मर्द०। सुना तो मैंने भी है मगर मुझे विश्वास नहीं होता
योंकि अभी कल ही मेरी मुलाकात पुलिस के अफसर सेरी
विंस से हुई है उन्होंने मुझसे इस विषय में कुछ नहीं कहा॥

दूसरी औरत०। सुना था कि सेरी उसकी खबर पाकर
एपिङ्ग" गए थे फिर क्या हुआ?

अब हिक कुछ गौर से सुनने लगा क्योंकि उसे यह जानने
ी बड़ी इच्छा हो रही थी कि सेरी ने अपने नौकर से खाम
रने का हाल लोगों पर ज़ाहिर किया है या नहीं॥

मर्द०। हां वह एपिङ्ग गए थे। वहां जाने
पर मालूम हुआ कि डिक वहां नहीं है हां एक
इतना पता मिला कि वह उसी तरफ एक दिन दिखाई
था मगर इसके बाद फिर कहां गया सो मालूम नहीं
इससे वह लौट आये॥

डिक के यह जान कर ताज्जुब हुआ कि जेरी ने
हाल बहुत कुछ घटा कर लोगें के सुनाया है।
उसे उस पहिली औरत की आवाज सुनाई दी और वह
गौर से सुनने लगा॥

पहिली औरत०। मगर मैं ने तो कुछ औरही
मर्द०। वह क्या ?

औरत०। मैं ने सुना है कि जेरी और उनके साथियों
एक आदमी डिक के पकड़ा देने की लालच देकर घने
ले गया और वहां सभों के धोखा देकर एक दलदल
दिया जिसमें से बड़ी मुश्किल से उन सभों की जान बची॥

मर्द ने इस बात का क्या जवाब दिया वो डिक सुन न सका
क्योंकि उसी समय और भी कई आदमी उसी कुञ्ज में चले आ
जिसमें डिक था और उनकी बातचीत के कारण उस मर्द
आवाज सुनाई न दी। डिक भी फिर वहां न ठहरा और
दोनें औरतें और उस मर्द की शकल एक झलक देखने
इरादे से उस कुञ्ज की तरफ चला जिसमें से उनके बातचीत
आवाज आती मालूम होती थी॥

बाहर ही से डिक ने देख लिया कि वह आदमी जो
... औरतें से बातें कर रहा था अब वहां नहीं है। डिक

एक सरसरी निगाह में उन दोनों औरतों को देख लिया जो एक टेबुल के पास बैठी हुई बातें कर रही थीं और इसके बाद वह फिर इधर उधर घूमने लगा। अब शाम हो गई थी बल्कि अंधेरा हो चला था और लम्प वाले आ रहे थे। बहुत से आदमी जो इस बाग में थे इस समय बाग के बीच वाले एक बड़े चौतरे की तरफ जा रहे थे। डिक भी सभों के साथ उसी तरफ चला मगर वहां जाने पर उसे मालूम हुआ कि वहां लेक्चर होगा। डिक को लेक्चरों से कुछ शौक न था इस लिये वह वहां न ठहरा और फिर उसी तरफ चला जहां से उसने ऊपर लिखी बातें सुनी थीं, शायद उसने यह सोचा हो कि इतनी देर में वह मर्द यहां आ गया हो जो उन औरतों से बातें कर रहा था। यह ठीक २ नहीं कहा जा सकता कि डिक को उस आदमी के देखने की इतनी क्यों चाह हो गई थी? शायद इसका सबब यह हो कि वह अपने को जेरी का दोस्त बताता था॥

डिक का खयाल ठीक था। इस समय वह आदमी भी वहां मौजूद था और उन औरतों में तथा उसमें बातचीत हो रही थी। वह कोई बहुत ही अमीर आदमी मालूम होता था। उस की पोशाक बहुत कीमती थी और हाथ की उंगलियों में कई अंगूठियें भी थीं जो कीमती मालूम होती थीं। ऐसा अच्छा शि-कार देख कर डिक के मुंह में पानी भर आया और वह उसपर हाथ साफ करने की फिक्र में पड़ गया। यकायक उसकी निगाह एक छड़ी पर पड़ी जो कि उस आदमी के पास ही में पड़ी हुई थी और सोने की मालूम होती थी। छड़ी की मूठ सोने की थी और उसमें बड़े बड़े हीरे जड़े हुए थे जिस से वह कुछ [illegible]

तो मालूम होती थी मगर डिक ने पहिलेही निगाह में ता
लिया कि बहुत कीमती है॥

छड़ी देख डिक की लालच और भी बढ़ गई और उसने
बिना किसी तरह का खयाल किये जेब में से पिस्तौल निका
कर हाथ में लेली और इसके बाद वह कुञ्ज के अन्दर घुस
वे सब अपनी बातचीत में इतने डूबे हुए थे कि उन्हें डिक
आना जरा भी मालूम न हुआ और वह बेखटके उनके
पहुंच गया। पास पहुंच कर उसने एक दफे खखारा जिससे
कर उस आदमी ने पीछे की तरफ घूम कर देखा, इसके
ही डिक ने अपनी पिस्तौल उस आदमी के माथे से लगा
कहा, "कृपा कर अपनी वह छड़ी आप मुझे दे दीजिये नहीं
आपके लिये भला न होगा॥"

यह सुनते ही वह आदमी बहुत घबड़ा गया। पिस्तौ
का ठंडा लोहा उसके माथे से लगते ही वह कांप उठा और
अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया। डिक ने हाथ बढ़
वह छड़ी उठा ली और उसके बाद उसको अपनी उँगली में
एक अँगूठी भी उतार कर दे देने को कहा जो सब से
कीमती मालूम होती थी। उस आदमी ने बगैर उज्र वह अँगू
उतार कर डिक को दे दी और डिक ने उसे अपने जेब में र
लिया। इसके बाद डिक ने चिढ़ाने की नीयत से बहुत ही झु
कर उसे सलाम किया और कुञ्ज के बाहर निकल आया जहां
वह उस तरफ भागा जिधर भीड़भाड़ कुछ कम थी और जहां
तक लम्प न बाले जाने के कारण अँधेरा था॥

डिक के बाहर जाते ही उस आदमी की अक्ल कुछ ठिकाने

हुई और वह कुञ्ज के बाहर निकल ज़ोर ज़ोर से "चोर! चोर!!" पुकारने लगा जिससे थोड़ीही देर में वहां भीड़ इकट्ठी होगई। जब उसने देखा कि अब भीड़ होगई है और कोई डर की बात नहीं है तो फिर उसने ज़ोर से चिल्ला कर कहा, "मेरी छड़ी और अँगूठी लेकर भागा है जो कोई उसे पकड़ेगा उसे सौ रुपया इनाम दिया जायगा॥"

इनाम की लालच से बहुत से आदमी इधर उधर दौड़ने लगे। इतनेही में एक पुलिस का अफसर भी गुल शोर सुनकर वहां आ पहुंचा और उस आदमी से तरह तरह के सवाल करने लगा जिसकी छड़ी और अँगूठी गई थी। यह हज़रत वास्तव में हमारे पुराने साथी जान रंटन थे और उन दोनों औरतों में से एक उनकी नई व्याही हुई स्त्री थी॥

रंटन ने उस आदमी का पूरा पूरा हुलिया पुलिस के अफसर से कह दिया जिसे उसने उसी समय ज़ोर से चिल्लाकर और सभों को भी सुना दिया। साथ ही उसने बाग के सब फाटक बन्द करवा दिये जिससे चोर का बाहर निकलना उसकी समझ में एक प्रकार से असम्भव हो गया॥

थोड़ीही देर में चोर चोर की आवाज़ चारो तरफ फैल गई और लोग इधर उधर पागलों की तरह दौड़ने लगे क्योंकि रंटन ने इनाम एक सौ से बढ़ाकर अब दो सौ कर दिया था, मगर इस बात का किसी को पता भी न था कि चोर भागा किस तरफ है॥

~~~
~~~

तो मालूम होती थी मगर डिक ने पहिलेही निगाह में ताड़ लिया कि बहुत कीमती है॥

छड़ी देख डिक की लालच और भी बढ़ गई और तब बिना किसी तरह का खयाल किये जेब में से पिस्तौल निकाल कर हाथ में लेली और इसके बाद वह कुञ्ज के अन्दर घुस गया वे सब अपनी बातचीत में इतने डूबे हुए थे कि उन्हें डिक का आना जरा भी मालूम न हुआ और वह बेखटके उनके पास पहुंच गया। पास पहुंच कर उसने एक दफे खखारा जिसके सुनकर उस आदमी ने पीछे की तरफ घूम कर देखा, इसके साथ ही डिक ने अपनी पिस्तौल उस आदमी के माथे से लगा कर कहा, "कृपा कर अपनी यह छड़ी आप मुझे दे दीजिये नहीं तो आपके लिये भला न होगा॥"

यह सुनते ही वह आदमी बहुत घबड़ा गया। पिस्तौल का ठंढा लोहा उसके माथे से लगते ही वह कांप उठा और अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया। डिक ने हाथ बढ़ाकर वह छड़ी उठा ली और उसके बाद उसको अपनी उंगली में से एक अँगूठी भी उतार कर दे देने को कहा जो सब से ज्यादे कीमती मालूम होती थी। उस आदमी ने बगैर उज्र वह अँगूठी उतार कर डिक को दे दी और डिक ने उसे अपने जेब में रख लिया। इसके बाद डिक ने चिढ़ाने की नीयत से बहुत ही झुक कर उसे सलाम किया और कुञ्ज के बाहर निकल आया जहां से वह उस तरफ भागा जिधर भीड़भाड़ कुछ कम थी और अभी तक लम्प न बाले जाने के कारण अँधेरा था॥

डिक के बाहर जाते ही उस आदमी को अक्ल कुछ ठिकाने

र दौड़ना शुरू किया। यहां पर लम्पों की रोशनी न होने और
ने पेड़ों की छाया रहने के कारण बहुत अँधेरा था मगर डिक
रावर दौड़ता ही गया॥

कुछ देर तक दौड़ते जाने के बाद डिक ऐसी जगह पहुंचा
हां की दीवार बहुत ही टूटी फूटी और नीची थी। उसने
सी जगह से बाग के बाहर निकल जाने का इरादा किया
ौर बिना कुछ सोचे विचारे एक फलांग में दीवार पार कर
उस पार कूद गया॥

दीवार के उस पार एक बड़ा सा गड्हा था जिसमें इस समय
कमर भर से ज्यादे पानी था। डिक को यह बात नहीं मालूम
थी और न अँधेरे के सबब से यह गड्हा ही उसको दिखाई
दिया था अस्तु वह दीवार के इस पार आकर उस गड्हे में
गिर पड़ा और उसके सब कपड़े पानी से तर हो गये॥

किसी तरह से डिक ने अपने को गड्हे से बाहर निकाला
और कुछ दूर हटकर एक पेड़ की आड़ में खड़ा हो गया। उस
का पीछा करने वाले भी थोड़ी ही देर में वहां आ पहुंचे और
छपाकों की आवाज ने डिक को बता दिया कि वे भी उसी
तरह पानी में गिर रहे हैं। डिक को यह बात ऐसी हँसी
मालूम पड़ी कि वह अपने को रोक न सका और खिलखिला
कर हँस पड़ा॥

डिक ने थोड़ी ही देर में अपने को सम्हाला और गीले ही
कपड़ों से एक तरफ को भागना शुरू किया। अब उसको अपना
पीछा करने वालों की कुछ आहट नहीं मालूम होती थी क्यों-
कि पानी में गोता खा लेने बाद लोगों की यह हिम्मत नहीं रह

सत्रहवां बयान।

डिक मुश्किल से पचास कदम गया होगा कि पीछे से चोर चोर की आवाज आने लगी और थोड़ीही देर में यह आवाज चारों तरफ फैल गई। पहिले तो डिक फाटक की तरफ गया मगर उसको बन्द पाकर वह कुछ घबरा गया। आखिर हिम्मत बाँधकर वह फिर उस तरफ लौटा जिधर अँधेरा था॥

डिक थोड़ीही दूर गया होगया कि किसी आदमी ने उस को भागते हुए देख लिया और यकायक "यहां है! यहां है!" कहकर चिल्ला उठा। उसके चिल्लाते ही बहुत से आदमी जो अभी तक बेमतलब इधर से उधर दौड़ रहे थे अब उस तरफ लपके जिधर डिक था। डिक ने यह देख लुक छिप कर बचने का खयाल छोड़ दिया और अपने पैरों पर भरोसा कर तेजी के साथ दौड़ने लगा। थोड़ी ही देर बाद वह बाग की चारदीवारी के पास जा पहुंचा मगर वह इतनी ऊंची थी कि उसको टपकर या और किसी तरह से पार कर जाना असम्भव था।

अगर डिक पहिले कभी इस बाग में आ चुका होता तो उसको इतनी घबराहट न होती जितनी अ

ताये हुए बिस्तर पर जो कि वास्तव में एक पुआल के ऊपर
रखा हुआ टाट था लेट रहा॥

जब सवेरा हुआ तो डिक ने उठकर अपने कपड़े पहिने
और बूढ़े से बिदा हो तथा उसके हाथ पर एक पचास रुपये
का नोट और वह अँगूठी जो जान रंटन से छीनी थी रख वह
बाहर निकला और थोड़ीही देर में उस जगह पहुंच गया जहां
वह टिका हुआ था। वहां पहुंचकर उसने दिन भर आराम
किया और फिर रवाना होने की फिक्र में लगा क्योंकि उसे
भरोसा हो गया था कि अब उसका कुछ दिनों के लिये बाहर
चले जाना ही ठीक होगा॥

इस बीच में यह बात अच्छी तरह मशहूर हो गई कि कोई
डाकू जान रंटन की घड़ी जो बहुत ज्यादे दाम की थी जबर-
दस्ती छीन कर ले गया। डिक को यह जान कर तो खुशी हुई
कि जिसकी उसने घड़ी छीनी थी वह जान रंटन था मगर जब
उसने यह खबर सुनी कि "अच्छा हुआ कि वह डाकू उनकी
घड़ी भी नहीं ले गया क्योंकि उस दाम की घड़ी इस प्रान्त में
किसी के पास नहीं है।" तो उसकी खुशी कुछ कम हो गई और
उसे घड़ी के न लेने पर इतना अफसोस हुआ जितनी छड़ी छीन
लेने पर खुशी नहीं हुई थी॥

जाती थी कि किसी का पीछा करें अन्तु वे चोर को देते हुए पीछे लौट जाते थे॥

जब डिक को यह निश्चय हो गया कि अब कोई पीछा नहीं कर रहा है तो उसने दौड़ना बन्द किया और धीरे जाने लगा। कुछ दूर जाने बाद उसे एक रोशनी दी और वह उसी तरफ चला। वह रोशनी एक झोंपड़े से आ रही थी और जब डिक झोंपड़े के पास पहुंचा तो एक बूढ़े आदमी को अन्दर बैठे आग तापते पाया॥

डिक बेधड़क झोंपड़े के अन्दर घुस गया और उस अपनी तरफ ताज्जुब से देखते हुए देख बोला, "मैं एक का लड़का हूं। किसी काम से इधर से जा रहा था। रास्ते लुटेरों ने अकेला पाकर जो कुछ मेरे पास था सब छीन और मेरा घोड़ा भी अपने कब्जे में कर लिया। इससे भी कम्बख्तों की तबीयत न भरी और वे मुझे एक गड़हे में फं चलते बने। तुम तो मेरी हालत देख ही रहे हो अब कृपा रात भर मुझे यहां रहने और आराम करने दो॥"

डिक ने ये बातें कुछ ऐसे ढङ्ग से मुँह बना कर कहीं कि को उसपर विश्वास हो गया। उसने डिक के रहने को कहा और सोने के लिये एक कर दिया। इसके बाद डिक के कपड़े ग पहिरने के लिये तलाश करने लगा मग सिवाय एक दोहर के और कोई कपड़ा को वही दोहर दिखाई और डिक ने उ कर अपने कपड़े सूखने को डाल दिये

लीना०। तुम यह बात नहीं जान सकते और न मैं अभी तुम्हें बतायाही चाहती हूं॥

हिक०। "अभी नहीं बताया चाहती हूं।" से क्या मतलब? क्या तुम कुछ दिनों के बाद मुझे यह बतला दोगी कि तुम्हें इन सब बातों की खबर क्योंकर लग जाती है?

लीना ने हिक की इस बात का कुछ जवाब न दिया और यह कहती हुई कि "तुम जाकर टामी से मुलाकात करो वह तुमसे मिलने के लिये बहुत घबड़ा रहा है।" एक तरफ़ को जाने लगी। हिक उससे और भी बहुत कुछ पूछा चाहता था मगर यकायक उसे किसी आदमी के पाँव की आहट सुनाई पड़ी और पीछे घूमकर देखने पर उसने पीटर को अपनी तरफ़ आते पाया। पीटर के सामने लीना से कुछ पूछना उसने अच्छा न समझा इसलिये उसने लीना को तो जाने दिया और आप आगे बढ़कर पीटर से बोला, "हैं! तुम अभी तक यहीं हो?"

पीटर०। हां मैं यहीं हूं मगर तुम अपना हाल तो कहो यहां से जाने बाद क्या क्या हुआ?

इसके जवाब में हिक ने जो कुछ हुआ था सब पीटर से कहा जिसे वह बड़े गौर से सुनता रहा। जब हिक ने कहना बन्द किया तो वह बोला, "तो यह विकी ही तुम्हारे रास्ते का कांटा है?"

हिक०। हां उसी के सबब से मेरी दाल गलती नजर नहीं आती॥

पीटर०। तो उसे किसी तरह हटाना चाहिये॥

हिक०। यह तो मुश्किल ही मालूम होता है॥

अठारहवां बयान।

लन्दन से भाग कर डिक सीधा [illegible] पहुंचा [illegible] अपनी [illegible] को [illegible] छोड़ आया था। यहां [illegible] उसकी मुलाकात लीना से हुई जो खिड़कियों के नीचे हुए सड़क के किनारे फूल तोड़ रही थी। वह डिक को देखकर खुश हुई मगर यकायक बोल उठी, "अबकी दफे तो तुम के[illegible] फँसे थे?"

सुनतेही डिक चिहुंक कर बोल उठा, "तुम्हें कैसे मा[illegible] हुआ?" मगर इसके साथही अपनी बात काटकर फिर बे[illegible] "तुम किस बात का जिक्र कर रही हो? मुझ को कुछ भी [illegible] नहीं!!"

लीना ने हँसकर कहा, "सो तो तुम्हारे यह कहने से [illegible] मालूम हो गया कि "तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" और जो तुम [illegible] बात को छिपाया चाहते हो तो मैं भी फिर उसका जिक्र [illegible] किया चाहती और न यही कहा चाहती हूं कि किस त[illegible] तुम्हारा कई आदमियों ने पीछा किया और तुम्हें उनके [illegible] से पानी में कूदना पड़ा या फिर किस बूढ़े के यहां तुमने [illegible] कर अपनी जान बचाई। मुझे भला इन बातों के कहने से [illegible] फायदा है॥"

यह सुन डिक समझ गया कि लीना को सब बा[illegible] खबर है अस्तु उसने कुछ ठहर कर जवाब दिया, "हां तु[illegible] कहना कुछ कुछ तो बेशक ठीक है। भला तुम्हें इन सब[illegible] की खबर क्योंकर मिली?"

लीना०। तुम यह बात नहीं जान सकते और न मैं अभी तुम्हें बतायाही चाहती हूं॥

हिक०। "अभी नहीं बताया चाहती हूं।" से क्या मतलब? क्या तुम कुछ दिनों के बाद मुझे यह बतला दोगी कि तुम्हें इन सब बातों की खबर क्योंकर लग जाती है?

लीना ने हिक की इस बात का कुछ जवाब न दिया और यह कहती हुई कि "तुम जाकर टामी से मुलाकात करो वह तुमसे मिलने के लिये बहुत घबड़ा रहा है।" एक तरफ को जाने लगी। हिक उससे और भी बहुत कुछ पूछा चाहता था मगर यकायक उसे किसी आदमी के पाँव की आहट सुनाई पड़ी और पीछे घूमकर देखने पर उसने पीटर को अपनी तरफ आते पाया। पीटर के सामने लीना से कुछ पूछना उसने अच्छा न समझा इसलिये उसने लीना को तो जाने दिया और आप आगे बढ़कर पीटर से बोला, "हैं! तुम अभी तक यहीं हो?"

पीटर०। हां मैं यहीं हूं मगर तुम अपना हाल तो कहो यहां से जाने बाद क्या क्या हुआ?

इसके जवाब में हिक ने जो कुछ हुआ था सब पीटर से कहा जिसे वह बड़े गौर से सुनता रहा। जब हिक ने कहना बन्द किया तो वह बोला, "तो यह पिको ही तुम्हारे रास्ते का कांटा है?"

हिक०। हां उसी के सबब से मेरी दाल गलती नजर नहीं आती॥

पीटर०। तो उसे किसी तरह हटाना चाहिये॥

हिक०। यह तो मुश्किल ही मालूम होता है॥

पीटर०। क्यों मुश्किल क्या है? भला गर्टरूड यह चाहती होगी कि पिकी उसी के घर में रहकर और उसी का रुपया खा कर उसी के ऊपर हुकूमत करे? नहीं कभी नहीं, वह तो हु यह चाहती होगी कि पिकी किसी तरह से टले। इसके सिवा तुम इतना करनेही क्यों जाओ, खुद गर्टरूड को यहां बुलालो।

डिक०। (हँसकर) खूब कहो! भला गर्टरूड यहां क्यों आने लगी? उसे कौन गरज पड़ी है कि मेरे लिये जङ्गल जङ्गल मारी मारी फिरे? यह बिलकुल नामुमकिन है॥

पीटर०। वाह! डिक टर्पिन जिसके नाम से लोग कांपते ऐसे सहज काम को कहे कि नामुमकिन है!!

डिक०। नहीं वह बात तो नहीं है मगर मुश्किल यह कि मुझे रिचार्ड बने रहकर यह सब काम करना पड़ेगा। अगर कहीं गर्टरूड को यह मालूम हो गया कि मैं डाकू हूं तब तो वह मुझसे बिलकुल ही बदल जायगी, कभी भूल कर भी मेरा नाम न लेगी बल्कि ताज्जुब नहीं कि मुझे पकड़ा देने की को-शिश करे॥

पीटर०। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या सोच रहे हो? भला गर्टरूड को इन सब बातों की खबर क्यों होने लगी!

डिक०। अभी कहते हो खबर क्यों होने लगी। भला यह भी कभी हो सकता है कि गर्टरूड मेरे साथ अकेली कहीं भा-ग जाना मंजूर करे और सो भी इस एपिङ्ग के जङ्गल में और जिप्सियों के डेरों के पास?

पीटर०। क्यों इसमें बात ही क्या है?

डिक०। अच्छी बात है अगर तुम्हारी समझ में यह गहज

ाम है तो तुम कोशिश करो। अगर वह अपनी मर्ज़ी से यहां
ाजाय तो जो कहो मैं देने को तैयार हूं॥

पीटर०। अच्छी बात है मैं कोशिश करूंगा। अगर वह
पनी मर्ज़ी से यहां आजाय तो मैं एक हजार रुपये लूंगा॥

डिक०। एक हजार नहीं मैं दो हजार देने को तैयार हूं
गर हो भी तो सही॥

पीटर०। अच्छा मैं आजही इस फ़िक्र में रवाना होता हूं॥

इतना कह कर पीटर वहां से चला गया और डिक भी
ामी से मिलने उसके रोमे की तरफ चला॥

उन्नीसवां बयान।

डिक को देख टामी बहुत ही खुश हुआ। उसकी तबीयत
इस बीच में बहुत कुछ सम्हल गई थी और वह उठ कर चलने
फिरने के लायक हो गया था। उसने डिक को अपने पास बैठा
लिया और बड़ी देरतक उससे तरह तरह की बातें पूछता रहा।
डिक ने भी अपना हाल उसको पूरा पूरा सुना दिया मगर
मर्टल के बारे में बहुत कमबेश करके॥

बात ही बात में डिक ने इशारे से यह बात कहनी चाही
कि शायद बेरी का यहां (एपिङ्ग में) उसको खोजते हुए आना
कहीं भील के पता देने से न हो मगर टामी को इस बात पर
बिल्कुल विश्वास ही न था और वह इसके ज़िक्र से भी चिढ़ता
था। लाचार डिक ने भी कुछ ज्यादा ज़ोर न दिया और मन ही
मन उस समय का इन्तज़ार करने लगा जब वह इस बात को

पूरी तरह से साबित कर सके क्योंकि अब उसे इस बात का निश्चय हो चुका था कि मीरुल के मन में कुछ बुराई है चाहे उस बात का उसे कोई सबूत न मिला हो ॥

पांच छः दिन के बाद टामी में इतनी ताकत आ गई कि वह घोड़े पर सवार हो सके। यह जानते ही उसने अपने घर जाने का विचार किया और डिक से अपनी इच्छा बताई। डिक ने उसको बहुत समझाया कि अभी वह कमजोर है और घोड़े की पीठ पर लम्बा सफर करने लायक नहीं है मगर उसने एक न सुनी और घर जाने के लिये जिद्द करने लगा। जब डिक ने देखा कि समझाने से टामी नहीं मानता तो लाचार उसने भी उसके साथ जाने का निश्चय कर लिया ॥

दूसरे दिन सबेरे ही दोनों ने चलने की तैयारी की और आठ बजते बजते वे जिप्सियों से बिदा होकर अपने घोड़ों पर सवार हो टामी के घर की तरफ चले। चलने से पहिले टामी ने पीटर से एक दफे और मुलाकात करके इस बात का निश्चय कर लिया कि उसने जो छः सात रोज पहिले गर्टरूड को ले आने के बारे में बातचीत की थी वह भूला तो नहीं क्योंकि डिक को पीटर के पांच छः रोज रुक जाने से यह खयाल हो गया कि कहीं वह उस बात को भूल न गया हो ॥

डिक ने चलते समय लीना से भी मुलाकात करना चाहा था मगर ताज्जुब की बात थी कि वह जिप्सियों के खेमे में कहीं दिखाई न दी और डिक को उससे मुलाकात करने का खयाल छोड़ देना पड़ा ॥

डिक की घोड़ी बेस इतने दिनों तक बेकार रहने के कारण

ड़ी ही चंचल हो रही थी और डिक को उसकी चाल पर इतनी खुशी हो रही थी कि अगर कोई उसको उस घोड़ी का एक लाख रुपया भी देता तो कभी वह अपनी घोड़ी बेचने पर तैयार न होता ॥

ठीक समय पर दोनों टामी के घर पर पहुंचे, मौल घर पर ही थी। उसने टामी और डिक को देखकर इतनी खुशी जाहिर की कि टामी की आंखों में पानी आगया और उसने डिक की तरफ देखकर इशारे ही में कहा, "देखो यह हमको कितना चाहती है और तुम इसी पर शक करते हो !!"

डिक ने टामी के इस इशारे का कुछ जवाब न दिया और कुछ गौर में पड़ गया। कदाचित ऐसाही हो कि मौल सची हो और उसका उसके ऊपर शक करना गलत हो !! डिक कुछ निश्चय न कर सका मगर उसने यह सोच लिया कि बहुत जल्द इस बात का वारा न्यारा कर डालना चाहिये कि मौल वास्तव में कैसी है ?

दूसरे दिन सवेरे ही दोनों आदमी घोड़ों पर सवार हो हवा खाने को निकले। ठंढी २ हवा चल रही थी और समय बड़ाही सुहावना मालूम होता था इस लिये टामी ने निश्चय कर लिया कि कहीं दूर निकल चलें। अस्तु यह सोचकर चलते हुए उसने मौल से कहा, "हम लोग टहलने जाते हैं। लौटने में देर होगी सो तुम हमारी राह न देखना हम लोग कहीं किसी सराय में भोजन कर लेंगे।" और इसके बाद वह डिक के साथ साथ चल निकला ॥

उन दोनों को गये मुश्किल से आधा घंटा हुआ होगा कि

मैाल भी घर के बाहर निकली और एक खेत की ... जहां कई आदमी काम कर रहे थे। उसने एक आदमी ... में कुछ पैसे और एक चीठी दी और उसे चीठी को जेरी के ... आने को कहा जिसका पता उसे मालूम था॥

दोही घंटे के बाद जेरी उस जगह आ पहुंचा। उसके ... चार और आदमी भी थे जो देखने में बड़े ... घर मालूम होते थे। जेरी ने उन सभों को टामी के ... दरवाजे पर छोड़ दिया और आप अन्दर जाकर मैाल से ... बातचीत करने लगा जिससे अब इस बात में कोई शक न ... गया कि डिक ने जो मैाल के ऊपर शक किया था ... था॥

किसी तरह से जेरी को यह मालूम होगया था कि टामी इस गांव में भले आदमियों की तरह रहता है और यहीं कभी डिक भी उससे मुलाकात करने आता है। मगर यह ... उसको तब लगी जब टामी बीमार होकर जिप्सियों के ... था और इसी सबब से इस बात के मालूम होजाने पर भी ... टामी को पकड़ न सका था॥

जब जेरी को इस बात का निश्चय हो गया कि टामी यहां रहता है तो उसने मैाल से जान पहिचान बढ़ाना शुरू किया। थोड़े ही दिनों में उसे मालूम होगया कि मैाल बड़ी लालची और थोड़े ही रुपये की लालच से वह सब भेद खोल देगी अस्तु उसने मैाल को कुछ रुपये दे दिलाकर अपने बस में कर लिया और इस बात का वादा करा लिया कि ज्योंहीं डिक या टामी उस जगह आवेंगे वह उसको खबर देगी। उसी वादे के मुता-

क आज मील ने चीठी भेजकर जेरी को बुलवाया और जब
ह आगया तो उससे सब हाल कहा तथा उस सराय का नाम
ी बता दिया जहां टामी टिकने को कह गया था ॥

इससे पहिले टामी जब एपिङ्ग में था और डिक मील से
मिलने यहां आया था उस समय भी मील ने जेरी को सब हाल
ताकर एपिङ्ग भेजा था मगर जेरी को वहां डिक की चालाकी
 कारण बहुत तकलीफ उठानी और बेरंग लौटना पड़ा था
सी से उसने यह निश्चय किया कि अब की दफे ऐसे इन्तजाम
 साथ जाय कि उन दोनों के पकड़ने में कोई शक न रहे। यह
ोच उसने मील को भी अपने साथ चलने को कहा और उस
ी नाबरनूकर पर ध्यान न दे उसे अपने साथ ले मकान के
ाहर आया जहां अपने साथियों को छोड़ गया था ॥

अपने साथियों और मील के साथ जेरी थोड़ी ही देर में
उस सराय के पास जा पहुंचा जहां डिक और टामी थे। जेरी
े मील को तो अपने साथियों के साथ सराय से थोड़ी दूर पर
खड़ा कर दिया और आप अकेले जाकर सराय के मालिक से
मिला। थोड़ी ही देर की बात चीत से उसे मालूम होगया कि
डिक और टामी अभी तक यहीं हैं मगर अब रवाना हुआ ही
चाहते हैं ॥

यह जानते ही जेरी ने सराय के मालिक से यह कहकर कि
"ये दोनों डाकू हैं और इनको पकड़ने के लिये पुलिस बहुत
दिनों से हैरान है।" चार पांच आदमी और लिये और इनको
तथा अपने साथियों को ऐसे ढंग से सराय के चारों तरफ़ बैठा
दिया कि किसी का सराय के बाहर निकल जाना असम्भव हो।

मैाल भी घर के बाहर निकली और एक खेत की तरफ जहां कई आदमी काम कर रहे थे। उसने एक आदमी के हाथ में कुछ पैसे और एक चीठी दी और उसे चीठी को जेरी के पास ले आने के कहा जिसका पता उसे मालूम था॥

दोही घंटे के बाद जेरी उस जगह आ पहुंचा। उसके साथ चार और आदमी भी थे जो देखने में बड़े मजबूत और दिलावर मालूम होते थे। जेरी ने उन सभों को टामी के मकान के दरवाजे पर छोड़ दिया और आप अन्दर जाकर मैाल से बातचीत करने लगा जिससे अब इस बात में कोई शक न रह गया कि डिक ने जो मैाल के ऊपर शक किया था वह ठीक था॥

किसी तरह से जेरी को यह मालूम होगया था कि टामी इस गांव में भले आदमियों की तरह रहता है और वहीं कभी कभी डिक भी उससे मुलाकात करने आता है। मगर यह खबर उसको तब लगी जब टामी बीमार होकर जिप्सियों के यहां चला गया था और इसी सबब से इस बात के मालूम होजाने पर भी वह टामी को पकड़ न सका था॥

जब जेरी को इस बात का निश्चय हो गया कि टामी यहीं रहता है तो उसने मैाल से जान पहिचान बढ़ाना शुरू किया। थोड़े ही दिनों में उसे मालूम होगया कि मैाल बड़ी लालची और थोड़े ही रुपये की लालच से वह उसका काम कर सकती है। उसने मैाल को कुछ रुपये दे दिये और इस बात का वादा करा लिया कि टामी जब कभी उस जगह आवेंगे वह उसको

THE UPANYAS LAHARI

॥ श्रीः ॥

उपन्यास लहरी।

मासिक पत्र।

—बाबू देवकीनन्दन खत्री द्वारा—

सम्पादित और प्रकाशित।

वर्ष ११ । मूल्य वार्षिक २) रुपया । मूल्य एक प्रति का ।) आना । सं. [illegible]

गया। मील को उसने ऐसी जगह खड़ा कर दिया
सराय में से निकलने वालों को बखूबी देख और
और आप घोड़े पर सवार होकर डिक और टामी के
निकलने का इन्तज़ार करने लगा॥

बीसवां बयान।
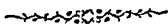
डिक या टामी दोनों में से किसी को भी इस ख्याल न था कि सराय के बाहर उन को पकड़ने के लिये जाल फैलाये जा रहे हैं। जब जेरी सराय के मालिक से बातचीत कर रहा था उस समय वे दोनों बड़ी खुशी के साथ कपड़े पहिन कर चलने की तैयारी कर रहे थे। ... तो उन का दुश्मन बन ही बैठा था क्योंकि जेरी ने उस को इनाम को लालच दे दी थी मगर उस सराय का एक नौकर को इन सब बातों की खबर थी टामी का दोस्त था और टामी को अलग बुलाकर धीरे से सब हाल कहा। सुनते ही टामी घबराया हुआ डिक के पास आया और उसने वह डिक से कहा जिसे सुनते ही डिक बोल उठा, "बेशक मील का है॥"

डिक की यह बात सुन टामी कुछ देर के लिये चुप होगया तब इसे भी इस बात का विश्वास होने लगा कि डिक का ख्याल ठीक है। अभी तक उसके दिल में कभी एक मिनट के लिये भी यह बात नहीं आई थी कि मील उसके साथ दगा करेगा मगर अब जो उसे यह मालूम हुआ बल्कि कहना चाहिये कि
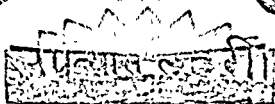
"उपन्यास-लहरी" में विज्ञापन की छपाई के नियम:—

	एकबार	३—मास	६—मास	१—वर्ष
एक पृष्ठ	४)	८)	१५)	२४)
आधा "	२॥)	६)	१०)	१५)

(१) आधे पृष्ठ से कम का विज्ञापन फुटकर समझा जायगा और उसकी छपाई एकबार की ।) पंक्ती, तीन बार की ≡) पंक्ती, छः बार की ≶)॥ पंक्ती और सालभर की ≶) पंक्ती के हिसाब से ली जायगी ॥

(२) विज्ञापन की छँटाई के पांच रुपये पेशगी लिये जायंगे ॥

नोट—(१) एक पृष्ठ में चौबीस पंक्ति होती हैं ॥

(२) जितने दिनों के लिये नोटिस देना निश्चय किया जायगा उसके अन्दर नोटिस का मजमून बदला न जायगा ॥

मैनेजर—उपन्यास-लहरी, बनारस सिटी।

ाोक ! शोक !! महाशोक !!!

गत सावन बदी १४ शुक्रवार ताः १ अगस्त सन् १९१३
सूर्योदय के समय मेरे पूज्य पिता बाबू देवकीनन्दन जी
वन वर्ष की अवस्था में इस असार संसार के छोड़ परम-
 के प्राप्त हो गये। यद्यपि ये तीन वर्ष से बहुमूत्र रोग से
ड़ित हो रहे थे परन्तु पिछले कई महीनों के बुखार ने उन्हें और
ी पीड़ित और अशक्त कर दिया था। इतना होने पर भी अंत
मय में उन्होंने तीन रात्रि गङ्गा तट पर निवास करके जिस चै-
न्यता से शरीर त्याग किया वह बहुत कम देखा गया है। जब
न्हें खाट से नीचे उतारा गया तो उन्होंने गङ्गाजल मांगा
ार उससे आचमन कर तथा पलथी बांध ध्यान मग्न हो
ारीर त्याग किया !! काशी से उन्हें जैसा प्रेम था और जैसे
म तथा नियम के साथ वे अपना नित्यकृत्य किया करते थे
से ही ज्ञान के साथ उन्होंने अन्त समय में काशी प्राप्त की॥

मेरे लिए यह बड़े ही दुःख का समय उपस्थित हुआ है।
ाद्यपि इस समय मेरी अवस्था बहुत ही कम है तथापि इतने
ी समय में पितृसुख का जो कुछ अनुभव मुझे हो चुका है वह
कदाचित् ही किसी को प्राप्त हुआ होगा। कोई चार वर्ष हुए मेरे
पितामह का देहान्त हुआ। वे भी मुझ पर बड़ी कृपा रखते थे
परन्तु उनकी मृत्यु का दुःख मुझे पिता के स्नेह के कारण बहुत
ही कम मालूम हुआ। आज मैं सचमुच ही अनाथ और निः
सहाय हो रहा हूं. मेरे लिये चारों ओर घोर अन्धकार दिखाई

देरहा है, आज मुझे दिलासा देने और चुप कराने वाला दिखाई नहीं देता और आज मुझे यह मालूम हो रहा है यह संसार असार है। यद्यपि इस संसार में छोटे बड़े प्रायः को पितृ वियोग का दारुण दुःख भोगना पड़ता है क्योंकि दैव आधीन बात है परन्तु इसमें न्यूनाधिकता अवश्य है वही इस समय मेरे लिये दुःसह हो रही है। ऐसी कम में मुझे यह दुख भी देखना पड़ा। केवल देखना ही नहीं प मैं इस योग्य भी न रह गया कि भर पेट रोकर अपने दुःखां कुछ कम कर सकूं! क्योंकि मुझे दूसरों को शान्त्वना देना अपना दुःख छिपा कर समझाना पड़ रहा है, इसे मैं अ दुर्भाग्य के सिवाय और क्या कहूं !!

इस चित्र के देखने से आप उनका कुछ कुछ परिचय सकेंगे। इनके कारण मुझे जो कुछ सुख प्राप्त हो चुका है किसी भाग्यवान को भी कदाचित ही प्राप्त हो सका हो क्योंकि ये मेरे शान्त स्वभाव, क्षमाशील और दयालु पिता अस्तु आप स्वयम् ही विचार सकते हैं कि इनका वियोग मु कैसा दुःखप्रद हुआ है। इनके विषय में इस समय मैं अपने कातर हृदय के कारण कुछ विशेष रूप से नहीं लिख सकता तथापि इन का संक्षिप्त जीवनचरित्र पाठकों के अवलोकनार्थ प्रकाशित करता हूं। यदि ईश्वर की कृपा हुई तो कुछ समय उपरान्त इन का पूरा जीवनचरित्र पाठकों के आगे रखने की चेष्टा करूंगा॥

सन्तप्तहृदय

दुर्गाप्रसाद।

की मेहता की पुत्री थीं इस कारण इनके पिता का
वहीं होता था। इनका जन्म भी मुजफ्फरपुर में हो
वहीं लालनपालन भी हुआ। कुछ वयस्क होजाने
हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा दी गई। फारसी
धार्मिक शिक्षा भी जिससे आपको स्वाभाविक प्रे
वहीं दी गई थी पर इस भाषा की पूरी योग्यता
स्वतंत्र रूपसे गयाजी और काशीजी में रहने लगे तभी
और तभी कुछ कुछ अंगरेजी का भी इन्होंने

यौवन—इनके पिता का गया जिले के टि
(रियासत से) व्यापारिक संबन्ध था और वहां इनका
सन्मान भी था अस्तु इन्होंने गयाजी में एक कोठी
ली और उसका स्वतंत्र रूप से प्रबन्ध करने लगे।
इनको अच्छी आय थी। बस एक तो रुपया पास, दूसरे
तीसरे स्वतंत्रता तीनों ने अपना चमत्कार दिखाया।
को पूर्ण रूप से अपने वश में कर लिया॥

कुछ दिनों पीछे टिकारी राज्य में सरकारी प्रबन्ध
और उस राज्य से इनके पिता का सम्बन्ध टूट गया
पिता ने इनको काशी बुला लिया और ये यहीं आ
लगे। इस समय इनकी अवस्था कोई चौबीस वर्ष

टिकारी राज्य में सनातन

स्वर्गीय

बाबू देवकीनन्दन जी

का

संक्षिप्त जीवन चरित्र ।

वंशपरिचय—लाला नवनिधिराय मुलतान के दीवान तथा तालुकेदार और बड़े धनाढ्य मनुष्य थे। उनसे कोई नौ पीढ़ी बाद उनके वंश के कई लोग लाहौर (पञ्जाब) जा बसे परन्तु राजा रणजीतसिंह की मृत्यु के उपरान्त जब पंजाब में एक प्रकार से अराजकता का राज्य होगया तब उनमें से लाला अचरजराम जी सपरिवार लाहौर छोड़ कर काशी में आ बसे। लाला अचरजरामजी के पांच पुत्र हुए-लाला नन्दलाल, लाला ईश्वरदास, लाला लालचन्द, लाला रामदास और लाला कन्हैयालाल। लाला नन्दलालजी के तीन पुत्र हुए बाबू देवीप्रसाद, बाबू भगवानदास और बाबू नारायणदास। लाला ईश्वरदासजी के एकमात्र पुत्र बाबू देवकीनन्दन थे। लाला लालचन्द, लाला रामदास और लाला कन्हैयालाल के कोई सन्तान न हुई॥

जन्म—बाबू देवकीनन्दनजी का जन्म विक्रमीय संवत् १९१८ मिती आषाढ़ कृष्ण सप्तमी को हुआ था। इनके नाना मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध रईस और जमींदार बाबू जीवनलाल

जी मेहथा की पुत्री थीं इस कारण इनके पिता का रहना प्रायः वहीं होता था। इनका जन्म भी मुजफ्फरपुर में ही हुआ था और वहीं लालनपालन भी हुआ। कुछ वयस्क होजाने पर आपको हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा दी गई। फारसी भाषा की प्राथमिक शिक्षा भी जिससे आपको स्वाभाविक प्रेम था इन्हें वहीं दी गई थी पर इस भाषा की पूरी योग्यता इन्हें जब ये स्वतंत्र रूपसे गयाजी और काशीजी में रहने लगे तभी प्राप्त हुई और तभी कुछ कुछ अंगरेजी का भी इन्होंने अभ्यास किया॥

यौवन—इनके पिता का गया जिले के टिकारी राज्य में (रियासत से) व्यापारिक संबन्ध था और वहां इनका अच्छा सन्मान भी था अस्तु इन्होंने गयाजी में एक कोठी खोल ली और उसका स्वतंत्र रूप से प्रबन्ध करने लगे। कोठी से इनको अच्छी आय थी। बस एक तो रुपया पास, दूसरे यौवन, तीसरे स्वतंत्रता तीनों ने अपना चमत्कार दिखाया और इन को पूर्ण रूप से अपने वश में कर लिया॥

कुछ दिनों पीछे टिकारी राज्य में सरकारी प्रबन्ध होगया और उस राज्य से इनके पिता का सम्बन्ध टूट गया तो इनके पिता ने इनको काशी बुला लिया और ये वहीं जाकर रहने लगे। उस समय इनकी अवस्था कोई चौबीस वर्ष की थी॥

टिकारी राज्य में बनारस के स्वर्गीय महाराज ईश्वरीप्रसादनारायणसिंहजी की बहिन ब्याही थीं इसी से बनारस में कुछ महाराज से आपका परिचय हो गया। इन्होंने गुसाहब बन कर महाराज के साथ रहना तो स्वीकार न किया परन्तु बहिश्त और नौगड़ के ताल्लुकों का ठीका ले लिया। इन ताल्लुकों

से लाह, लकड़ी, रेशम आदि की अच्छी आय थी। इसी अवस्था में इन्होंने यहां के जङ्गल पहाड़ और प्राचीन किले इत्यादि की अच्छी और पूरी तरह से सैर की तथा देखने योग्य और स्थान भी बड़ी सावधानी से देखे परन्तु दो बरस के बाद किसी कारण से इन्होंने ठीका छोड़ दिया और फिर काशी में आकर अपने घर पर रहने लगे॥

पुस्तक लेखन—इसी समय इन्हें पुस्तक लिखने की इच्छा हुई और इन्होंने हिन्दी भाषा में चन्द्रकान्ता नामक उपन्यास लिखने में हाथ लगा दिया। इस पुस्तक में इन्होंने अपने (गयाजी के) युवावस्था के अनुभव और ठीका लिए हुए जङ्गलों के देखे हुए दृश्य का वर्णन किया है। इस पुस्तक का प्रथम भाग काशी के हरि प्रकाश यन्त्रालय में सन १८८१ में छपा था। इस पुस्तक के लिखने बाद सन् १८९३ में नरेन्द्रमोहिनी नामक उपन्यास इन्होंने लिखा जिसका प्रथम संस्करण मुजफ्फरपुर के नारायण प्रेस में छपा था। इसके बाद सन् १८९४ में इन्होंने चन्द्रकान्ता सन्तति नामक उपन्यास लिखना आरम्भ किया जिसमें चन्द्रकान्ता के लड़कों का हाल लिखा है। चन्द्रकान्ता सन्तति के ११ भाग तक तो काशी के हरिप्रकाश यन्त्रालय में ही छपे थे पर इसके बाद सन् १८९ में इन्होंने "लहरी प्रेस" नामक अपना एक स्वतंत्र प्रेस स्थापित किया और इसके बाद की उनकी लिखी सब पुस्तकें इसी प्रेस से प्रकाशित हुईं। चन्द्रकान्ता सन्तति "उपन्यास लहरी" नामक मासिकपत्र द्वारा छप कर पाठकों के सामने क्रमशः उपस्थित की गई थी और जब चन्द्रकान्ता सन्तति समाप्त हो

गईं तो इन्होंने उसी "उपन्यास लहरी" नामक मासिकपत्र द्वारा भूतनाथ नामक उपन्यास निकालना आरम्भ किया था कि इनका अन्तिम उपन्यास है और इनकी असमय मृत्यु के कारण छः ही भाग तक छपकर रह गया है। भूतनाथ को इन्हें चन्द्रकान्ता सन्तति से भी रोचक और मनोहर बनाना चाहा था परन्तु उनकी यह इच्छा उनके साथ ही चली गई और वे भूतनाथ की जीवनी लिखते हुए ही भूतनाथ की पुरी में भूतनाथ में लीन होगए। इन पुस्तकों के सिवाय इन्होंने कुसुमकुमारी, वीरेन्द्रवीर, काजर की कोठड़ी और गुप्त गोदना आदि उपन्यास और भी लिखे हैं जो इनकी निज कल्पना शक्ति द्वारा लिखे गये हैं ॥

इन्होंने अपने व्यय से और पं० माधवप्रसाद जी मिश्र के सम्पादकत्व में सुदर्शन नामक हिन्दी मासिकपत्र निकाला था जोकि अपने समय में हिन्दी का एक प्रसिद्ध मासिक पत्र गिना जाता था परन्तु सम्पादक की असमय मृत्यु के कारण सुदर्शन का भी अदर्शन होगया ॥

इन्होंने अपने उपन्यासों द्वारा हिन्दीका जो उपकार और उसके प्रचार में जो सहायता दी है उसका वर्णन करना हमारे लिये व्यर्थ और अनुचित होगा। यद्यपि कुछ लोगों का कथन है कि "इनके लिखे उपन्यासों से न कोई अच्छी शिक्षा मिल सकती है और न इनके पाठ से चरित्रसुधार में सहायता मिलती है इत्यादि।" बल्कि कुछ लोग तो यहां तक कहते हैं कि "इनके लिखे उपन्यास उपन्यास कहलाने के योग्य ही नहीं हैं।" परन्तु इन वाक्योंमें कितना गुरुत्व है यह इनके रचित उपन्यासों

कि पाठक ही समझ सकते हैं। हम इस बारे में कुछ नहीं कह सकते पर इनकी रचित पुस्तकों की जितनी प्रशंसा हुई है और हिन्दी पठित समाज में इनका जितना आदर हुआ है वह नीचे लिखी गवर्नमेंट रिपोर्ट से ही विदित होजायगा :—

N. W. P. GOVT. ADMINISTRATION REPORT
of
1897-98

सन्तति—इनके इस समय तीन पुत्र और दो कन्याएँ

रोग और मृत्यु—प्रायः तीन वर्षों से ये बहुमूत्र रोग से पीड़ित रहा करते थे। बहुत सी औषधियें भी हुईं पर किसी से कुछ लाभ न हुआ और रोग क्रमशः जड़ पकड़ता गया। इधर दो महीने से रोग की यंत्रणा बढ़ गई और अन्त में रोग ने कर दिखाया जो उसका अभीष्ट था अर्थात् गत सावन कृष्ण (सं० १९३०) को आप इस असार संसार को छोड़ परम-धाम को सिधार गए !!

इस बात का निश्चय हो गया कि मील विश्वासघातिनी है तो उसके दिल में बड़ी चोट लगी। वह कुछ देर तक सिर झुकाये कुछ सोचता रहा और इसके बाद बोला, "हां डिक! अब तो मुझे भी यही मालूम होता है कि यह सब मील ही का किया हुआ फसाद है, अफसोस! मुझे उससे इस बात की आशा न थी और न मैंने कभी यह सोचा था कि एक दिन ऐसा भी आवेगा!!"

डिकने इस बारे में और कुछ कहकर टामी का दिल दुखाना ठीक न समझा और वह इस फिक्र में लगा कि उसकी और टामी की जान किस तरह से बचेगी। इस सराय में से सिवाय एक सदर दर्वाजे के और कोई रास्ता ऐसा न था जिस रास्ते से कोई घोड़े पर सवार होकर बाहर निकल जा सके और बिना घोड़ों के सराय के बाहर निकलना इस समय बुद्धिमानी के बाहर बात थी क्योंकि अगर उनकी जान इस समय कोई बचा सकता था तो उनके घोड़े ही। हां एक रास्ता इस सराय में से अस्तबल में जानेका जरूर था जिसमें इस समय डिक और टामी के घोड़े बँधे थे और जो सराय के साथ ही सटा हुआ था। अस्तबल में जाकर वे लोग उसके पिछवाड़े वाले रास्ते से निकल जा सकते थे और यह सोच कर अन्त में डिक ने इस दम उसी रास्ते से बाहर जाना निश्चय किया॥

जब डिक अपने और टामी के घोड़े को जीन वगैरह कसकर तैयार कर चुका तो टामी के पास आया और बोला, "अब हमलोगों को यहां से निकल चलने की कोशिश करनी चाहिये। मैंने घोड़े कसकर तैयार कर लिये हैं। हमलोग इस अस्तबल

वाले पिछले दर्वाजे की राह निकल चलेंगे॥"

इसके जवाब में टामी ने सिर हिला कर कहा, "भाई! जाओ और मुझे यहीं मेरी किस्मत पर छोड़ दो। क्यों मेरे अपनी जान आफत में डालते हो? तुम अगर अकेले रहोगे तो निकल जा सकोगे और अगर मैं तुम्हारे साथ रहूंगा तो अ[illegible] साथ तुम्हें भी डुबा दूंगा॥"

डिक को यह सुनकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ क्योंकि उसने इससे पहिले टामी को कभी इस तरह से हिम्मत हारते नहीं देखा था, अस्तु उसने कहा, "क्यों क्यों ऐसा क्यों? तुम इस त[illegible] हिम्मत क्यों हारते हो? भला इसमें घबड़ाने की कौन बात है? इससे पहिले कितनी दफे हमलोग इससे बड़ी बड़ी आफतों में पड़ चुके हैं और फिर भी अछूते बच गये हैं, तब तुम इतना घबड़ाये क्यों जाते हो?"

टामी०। हां तुम्हारा कहना ठीक है मगर मुझे निश्चय हो गया है कि इस बार मैं जरूर पकड़ जाऊंगा। एक तो मैं पहिले ही से कमजोर हूं दूसरे भीलू के इस बर्ताव ने तो मेरी तबीयत बिल्कुल ही तोड़ दी है॥

डिक ने बहुत कुछ समझा बुझा कर उसे उठाया और अपने साथ लेकर सराय के पीछे अस्तबल की तरफ चला। वहां पहुंच कर दोनों आदमी घोड़ों पर सवार हुए और पिछवाड़े वाले उस दर्वाजे के पास पहुंचे जिस से डिक बाहर निकला चाहता था। डिक ने पहिले से एक आदमी को कुछ दे दिलाकर [illegible] के [illegible] कर दिया था और उसे समझा दिया था कि वह दोनों को देखते ही फाटक खोल दे, अस्तु इस समय [illegible]ही

हक और टामी दर्वाजे के पास पहुंचे उस आदमी ने फुर्ती से
फाटक खोल दिया और दोनों आदमी घोड़े दौड़ा कर बाहर
निकले। मगर अफसोस! टामी की खुशकिस्मती ने उसका साथ
बिल्कुलही छोड़ दिया! फाटक से बाहर निकलते ही उसके घोड़े
का पैर एक पत्थर से टकराया और वह एकदम आगे को झुक
गया। टामी भी अपने को बचा न सका और लुढ़क कर घोड़े
के नीचे आ रहा॥

इक्कीसवां बयान।

जेरी ने पहिले ही से यह सोच लिया था कि दोनों डाकू
अपने भरसक अस्तबल वाले फाटक से ही निकलने की कोशिश
करेंगे क्योंकि उसी रास्ते से उनके घोड़े पर सवार भागने का
सुभीता होगा। यह सोचकर उसने ज्यादा आदमियों को इसी
फाटक के पास बुला लिया था और आप भी वहीं आ गया
था। अपने आदमियों को उसने समझा दिया था कि वे जहां
तक हो सके उन दोनों को जीता ही पकड़ने की कोशिश करें
और हथियार या पिस्तौल न चलावें जब तक कि वह ऐसा
करने का हुक्म न दे॥

जैसे ही टामी घोड़े से गिरा और फिर उसको उठाने की
नौबत से रुका उसी समय जेरी और उसके साथी उन दोनों
पर आ पड़े और उनको चारो तरफ से घेर लिया। टामी अभी
मुश्किल से जमीन पर से उठा होगा कि जेरी ने पास आकर
उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और घूम कर उसके साथी की तरफ

था उसे फिर जमीन पर गिरा देने की कोशिश करने लगा। उसी समय एक तरफ से आवाज आई, "जिसको लेरी पकड़े हुए है वह तो टामी है और दूसरा जो अभी तक घोड़े पर सवार है डिक है !!"

यह सुनतेही टामी ने सिर उठाकर उस तरफ देखा जिधर से आवाज आई थी। मौल एक पेड़ के नीचे खड़ी हुई थी और उसी ने यह कहा था। मौल को देखतेही टामी की आंखों में खून उतर आया और वह बड़ेही गुस्से से अपने को लेरी की पकड़ से छुड़ाने की कोशिश करने लगा॥

उधर डिक भी खाली न था, उसे भी आठ दस आदमियों ने घेरा हुआ था मगर इतनी कुशल थी कि वह घोड़े पर था और उसको पकड़ने की कोशिश करने वाले पैदल, मगर यह होने पर भी उन सभों से डिक इस तरह घिरा हुआ था कि वह भाग नहीं सकता था। जो लोग उसको पकड़ने की कोशिश कर रहे थे उनके हाथ में बड़े बड़े डण्डे थे और वे उन्हीं से डिक की घोड़ी को बेकाम करने की कोशिश कर रहे थे॥

यकायक उन आदमियों में से एक ने आगे बढ़कर बेस की पीठ पर एक डण्डा मारा जिसके लगते ही वह भड़की और इधर उधर दौड़ने और दुलत्ती चलाने लगी। उसके भड़कजाने से इतना तो जरूर हुआ कि उन आदमियों में से दो डिक को घेरे हुए थे दो जमीन पर दिखाई देने लगे और बाकी अपने इन दोनों साथियों को बेस की दया पर छोड़ कर कुछ दूर दूर हट गए मगर फिर भी उन्होंने डिक को किसी तरफ से निकल भागने की जगह न दी॥

इतने ही में टामी जो अब जेरी तथा उन दो आदमियों से जो जेरी की मदद को वहां पहुंच गए थे लड़ते लड़ते बिल्कुल थक गया था डिक को पुकार कर बोला, "अजी तुम गोली क्यों नहीं चलाते ?"

जेरी ने यह सुनते ही टामी को अपने आगे की तरफ कर दिया और आप उसके पीछे उसकी आड़ में हो जाने की कोशिश करने लगा। डिक ने यह देख टामी से कहा, "नहीं सो मेरे किये न होगा कदाचित गोली तुम्हीं को लग जाय ?"

टामी ने यह सुन कर कहा, "अजी मुझी को गोली लग जायगी तो क्या होगा वह मौत फांसी पड़ कर मरने से तो अच्छी होगी।"

टामी के इस कहने पर डिक ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली और निशाना साध कर जेरी की तरफ गोली चलाई मगर गोली जेरी की टोपी में छेद करती हुई निकल गई। टामी ने फिर पुकार कर कहा, "फिर चलाओ! क्या तुम मेरा फांसी पर चढ़ के मरना ही पसन्द करते हो!"

डिक ने फिर गोली चलानी चाही मगर उसी समय जेरी के उन दोनों साथियों में से एक ने आगे बढ़ कर डिक की तरफ गोली चलाई जो कि डिकका कन्धा छीलती हुई निकल गई। डिक ने यह देख उसे अपनी गोली का निशाना बनाया और थोड़ीही देर में वह जमीन पर गिरा हुआ दिखाई देने लगा। यह देख टामी ने जोश से कहा, "शाबाश! फिर चलाओ!"

डिक ने यह सुनकर पिस्तौल उठाई और जेरी की तरफ गोली चलाई, मगर अफसोस! उसी समय टामी ने जेरी के

हाथ से छूटने के लिये ज़ोर से एक झटका दिया और ह
हाथ से अलग हो गया मगर ऐसा होने से वह जेरी के
आ गया और वह गोली जो जेरी की तरफ चलाई गई
टामी की छाती में लगी जिससे वह ज़ोर से चिल्लाकर ज़
पर गिर पड़ा ॥

टामी के चिल्लाकर ज़मीन पर गिरते ही मौल भी
आड़ की जगह से छिप कर यह सब देख रही थी अप
सम्हाल न सकी और एक चीख मार कर उस जगह प
जहां टामी ज़मीन पर पड़ा तड़प रहा था। अब मौल के
लूम हुआ कि उसके विश्वासघात का क्या नतीजा निकल
टामी के ऊपर झुक कर रोती हुई उसके चेहरे की तरफ देख
लगी। उसकी आवाज़ सुन टामी ने आंख खोल कर उस
तरफ देखा और उसको पहिचानते ही उसने एक दफे बड़
ही कोशिश करके अपनी कमर से एक छुरा निकाला औ
उसे मौल की छाती में घुसेड़ दिया ॥

बस यही टामी का आखिरी काम था। इसके साथ
उसकी जान निकल गई और मौल भी उसी की लाश पर गि
कर परलोक को सिधार गई ॥
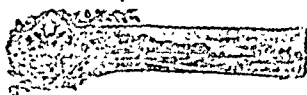
बाईसवां बयान।

मील और टामी की मौत इस जल्दी से हुई कि जेरी या उसके साथी जो पास ही खड़े थे कुछ भी न कर सके और सकते की सी हालत में खड़े देखते रह गए। ये लोग जो डिक को घेरे हुए थे उसी तरफ आ गए जिधर मील और टामी की लाश पड़ी हुई थी और डिक इस मौके को गनीमत समझ तेजी के साथ एक तरफ को भागा॥

डिक को अपने दोस्त की इस तरह की मौत से कितना रंज हुआ उसका न कहना ही ठीक है। उसको इस बात की कुछ भी खबर न थी कि वह किस तरफ जा रहा था सिर्फ सिर झुकाये घोड़ी की पीठ पर बैठा था। उसके मन में तरह तरह के ख्याल आ रहे थे। जिन जिन मौकों पर टामी ने उसकी मदद की थी और उसके साथ अपनी जान देने को तैयार हो गया था वे सब डिक की आंखों के सामने घूमने लगे। उसने गुस्से के साथ वह पिस्तौल जिसके सबब से टामी की मौत हुई थी दूर फेंक दी जो एक गड्ढे में जाकर गिर पड़ी॥

न जाने कितनी देर तक डिक इसी तरह ख्याल में डूबा रहता अगर उसे अपने पीछे किसी की आवाज न सुनाई देती। यह आवाज जेरी की मालूम देती थी जिसे सुनते ही डिक ने चौंक कर पीछे की तरफ देखा और जेरी को तीन सवारों के साथ तेजी से अपनी तरफ आते पाया। जेरी ने डिक की तरफ देख कर कहा, "बस अब बदी बेफायदा भागने की कोशिश करते हो! अब तुम किसी तरह अपने को बचा नहीं सकते।"

यकायक जेरी को इतने नज़दीक आगया हुआ पाकर डि
को बड़ा ताज्जुब मालूम हुआ क्योंकि वह अपने ख्यालों में
ऐसा डूबा हुआ था कि उसे घोड़ों के टापों की आवाज़ नहीं
सुनाई दी थी और उसे इस बात का गुमान भी न था कि जेरी
उसका पीछा कर रहा है ॥

अभी तक डिक को यह सोचने का मौका न मिला था कि
वह भाग कर कहां जाय मगर अब जेरी को अपने से इतना
नज़दीक आगया हुआ पाकर उसे इस बात पर गौर करना ही
पड़ा। पहिले तो उसने "एबिङ्गटन" जाने का इरादा किया मगर
फिर इस ख्याल से कि "ऐसा करने पर उसके दोस्त जिलियटों
के ऊपर आफ़त आजाने का डर है क्योंकि पुलिस को पहिले
ही से उनके ऊपर शक है।" उसने वहां जाने का ख्याल छोड़
दिया और कोई दूसरी जगह सोचने लगा ॥

यकायक उसे "यार्क" शहर का खयाल आगया। डिक अ-
पने लड़कपन में बहुत दिनों तक "यार्क" में रह चुका था और
इस लिये वह उसके आस पास की जगहों तथा सड़कों से बख़ू-
बी वाकिफ़ था मगर डिक को मुश्किल यही दिखाई देता था
कि वह शहर यहां से करीब सवा सौ मील के फासले पर था।

डिक अभी इस बात के सोच में ही पड़ा हुआ था कि
"यार्क" जाय या नहीं कि उसे पीछे की तरफ से जेरी के ये
कहने की आवाज़ सुनाई पड़ी, "बस अब ले लिया है देखो जाने
न पावे !!"

डिक ने चिहुक कर पीछे की तरफ देखा और जेरी तथा
उसके साथियों को अब पहिले से भी नज़दीक आगया हुआ

गया। यह देखते ही उसने घोड़े के एक एड़ मारी और बात की बात में जेरी से बहुत आगे निकल गया ॥

जेरी ने जब डिक को इस तरह निकल जाते देखा तो पहिले तो उसने अपने घोड़े की चाल कुछ और तेज की मगर जब इससे कोई काम निकलता न देखा तो उसने जेब से पिस्तौल निकाल कर डिक की तरफ चलाई मगर दूरी ज्यादे होने के कारण गोली डिक तक नहीं पहुंची। जेरी ने यह देख पिस्तौल जेब में रखली और कुछ किसानों की तरफ जो एक खेत में काम कर रहे थे देखकर कहा, "पकड़ो पकड़ो! डाकू भागा जाता है। वही मशहूर डाकू डिक टर्पिन है। देखो भागने न पावे!!" मगर जब तक वे किसान सड़क पर आवें डिक आगे निकल गया और जेरी को सिर्फ चिल्लाने की मेहनत हाथ लगी ॥

अब सड़क कुछ ढालुई मिलने लगी और इस सबब से डिक को अपनी घोड़ी की चाल कुछ कम करनी पड़ी। जेरी ने यह देख अपने साथियों से कहा, "मालूम होता है अब उसकी घोड़ी कुछ थक रही है।" मगर उसके एक साथी ने जो कि गौर से डिक की सब चालें देख रहा था कहा, "नहीं यह बात नहीं है! सड़क ढालुई होने के कारण उसने अपनी घोड़ी की चाल कम की है।" जिसे सुन जेरी चुप होरहा क्योंकि वह भी इस बात को समझता था मगर अपने साथियों को बढ़ावा देने के खयाल से उसने यह बात कही थी ॥

थोड़ी ही देर में ढाल खतम होगई और अब सड़क कुछ ऊँची मिलने लगी यानी अब डिक को ढाल चढ़ना पड़ा। थोड़ी दूर तक चले जाने बाद जब डिक ने पीछे घूम कर देखा

तो जेरी और उस के साथी साफ साफ दिखाई पड़ने लगे क्योंकि यह उनसे कुछ ऊंचे पर भी था और बीच में किसी तरह की रुकावट भी देखने में नहीं मालूम पड़ती थी। इसी तरह जेरी और उस के साथी भी डिक को अच्छी तरह देख सकते थे।

अब फिर डिक को इस बात का मौका मिला कि वह अपने "यार्क" जाने या न जाने के विषय में निश्चय कर सके। बहुत कुछ सोचने विचारने बाद उसने यही निश्चय किया कि यार्क ही चलना चाहिये क्योंकि उसके सिवाय और कोई ऐसी जगह डिक के ध्यान में न आई जहां वह कुछ दिन तक आराम के साथ रह कर पुलिस की नजरों से बच सकता॥

तेईसवां बयान।
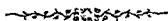
डिक ने यार्क जाने का निश्चय कर चुकने पर अपनी घोड़ी की चाल कुछ कम कर दी क्योंकि इतने लंबे सफर के शुरू ही में वह अपनी घोड़ी को थकाया नहीं चाहता था॥

अब डिक तथा उसका पीछा करने वाले एक दूसरे को ख़ूबी देख सकते थे। जेरी ने जब डिक की चाल फिर कम होते देखी तो वह अपने मन में बहुत ही खुश हुआ और उसे निश्चय होगया कि अब डिक उसके फंदे से नहीं निकल सकता। उसने डिक की घोड़ी बेस की तारीफ तो बहुत सुनी थी मगर वह यह नहीं जानता था कि वह कितना तेज जाने वाली है या कितना दम रखती है। अस्तु इस समय उसने बेस की चाल का कम होना उसके थकने का कारण समझा क्योंकि वह यह तो सुन

ाहीं सकता था कि दिक ने जान बूझ कर उसकी चाल कम कर दी है॥

शेरी ने यह देख अपने साथियों को बढ़ावा देते हुए कहा, "अब वह किसी तरह भाग नहीं सकता। तुम लोग उस को आंख की ओट न होने देना। अगर हम लोग इस दफे भी उस को न पकड़ सके तो हम लोगों की बड़ी हँसी होगी॥"

शेरी के एक साथी ने जिसका नाम तीतू था कुछ कुड़बुड़ा कर कहा, "सो तो होगा ही है। हम लोग उसको पकड़ तो कभी न सकेंगे॥"

शेरी०। क्यों?

तीतू०। उस की घोड़ी बहुत तेज जाने वाली है॥

शेरी०। तो क्या हम लोगों के घोड़े कुछ उससे चाल में कम हैं? तुम तो बेफायदा ही घबड़ा रहे हो, इस दफे वह किसी तरह नहीं भाग सकता॥

तीतू ने शेरी की इस बात का कोई जवाब न दिया और चुप हो रहा क्योंकि वह घोड़ों की अच्छी पहिचान रखता था और बेस की चाल देख कर अच्छी तरह समझ गया था कि वह अभी इससे ज्यादा तेज जा सकती है। शेरी ने अपने घोड़े की चाल कुछ तेज की और इस सबब से उसके साथियों ने भी घोड़े तेज किये मगर दिक ने यह देख कर भी अपनी चाल तेज न की जिसे देख शेरी खुश होकर बोल उठा, "हा! हा! देखो घोड़ी और तेज नहीं चला सकता, जरूर अब

बे ो घो ि वह

एक गांव के नजदीक आ पहुंचा था और गांव के बीच से होकर जाना खतरनाक समझ कर किसी और राह से घूम कर जाया चाहता था। आखिर कुछ दूर आगे जाने बाद उसे एक पतली सी गली दिखाई दी जो कि गांव के बगल से एक तरफ को निकल गई थी। डिक ने बेस का मुंह इसी गली की तरफ फेर दिया क्योंकि वह समझता था कि यह आगे जाकर किसी सड़क में मिल गई होगी, मगर असल में ऐसा न था।

जेरी ने जब डिक को इस गली में जाते देखा तो वह बहुत ही खुश हुआ क्योंकि वह जानता था कि यह गली आगे जाकर एक फाटक से बंद होगई है जिसके दूसरी तरफ खेत है। जेरी समझता था कि डिक को फाटक खोलने के लिये जरूर उतरना पड़ेगा और तब तक हम लोग पास जा पहुंचेंगे क्योंकि अब उनके बीच का फासला बहुत ही कम था मगर जेरी का यह खयाल गलत निकला क्योंकि फाटक के पास पहुंचते ही डिक ने बेस को एक एड़ मारी जिसके साथ ही वह छलांग मार कर फाटक के उस पार चली गई और डिक को उतरने की कोई जरूरत न पड़ी॥

डिक को इस तरह से फाटक के पार जाते देख कर जेरी के मुंह से एक गुस्से की चीख निकल गई क्योंकि उसको फाटक के उस पार जाने के लिये घोड़े से उतर कर फाटक खोलना पड़ा और ऐसा करने में कई मिनटों की देरी होगई क्योंकि फाटक मजबूती के साथ बंद किया हुआ था। जब तक जेरी और उस के साथी फाटक के इस पार आये तब तक डिक उनसे बहुत आगे निकल गया॥

मन ही मन कुड़कुड़ाता और डिक को गालियें देता हुआ
ी घोड़े पर सवार हुआ और फिर पीछा शुरू हुआ मगर
सको यहा ही ताज्जुब मालूम हुआ जब उसने डिक को खेत
ार कर चुकने बाद एक सड़क पर जाते देखा जो सीधी गांव के
ाच में से होती हुई गई थी। उसने अपने साथियों से कहा,
अगर डिक गांव के बीच में से गया तो फिर उसका निकल
ागना जरा टेढ़ी खीर है॥'

अब जेरी और उसके साथी भी उस सड़क पर पहुंच गये
सि पर डिक जा रहा था। जेरी और डिक के बीच का फा-
सला अब दो सौ गज से ज्यादा न था क्योंकि गांव के बीच में
ुक अपनी घोड़ी को तेज नहीं चला सकता था। यकायक
री को डिक के आगे की तरफ आठ या दस सवार दिखाई
ये जो इसी तरफ आरहे थे। जेरी ने उन को देख जोर से
ुकार कर कहा, "डाकू भाग जाता है! देखो भागने न पावे।
ड़क के बीच में खड़े होकर उसका रास्ता रोक लो!! जो कोई
सको रोकेगा उसे सौ रुपया इनाम मिलेगा॥"

कुछ तो "डाकू" का शब्द सुन और कुछ इनाम की लालच
े ये सवार वहीं ठिठक गये और सड़क रोक कर डिक के वहां
पहुंचने का इन्तजार करने लगे। मगर डिक इस बात से कुछ
भी न घबड़ाया। सवारों के पास पहुंचकर उसने झुक कर बेस
के कान में बढ़ावा देने वाले शब्द कहे और उसकी गरदन
थपथपाई जिसके साथ ही बेस बिना किसी की तरह की
हिचकिचाहट दिखाये उछल कर सवारों के सिर पर से हो उस
पार चली गई। सवार एक दूसरे का मुंह ताकते ही रह गये

और डिक दूर निकल गया ॥

बेस के टाप की ठोकर लगने से एक सवार की टोपी उड़ कर दूर जा गिरी थी और उसके सिर में भी हलकी चोट लगी थी। वह दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ कर साथी सवारों से बोला, "बाप रे बाप! मेरा तो सिर टूट गया।" मगर जब उसके साथियों ने उसे इस बात का विश्वास दिलाया कि उसका सिर कहीं से फूटा नहीं है तो वह शान्त हुआ और पीछे घूमकर बेस की तरफ देखता हुआ बोला "यह घोड़ा नहीं है शैतान है। भला कभी कोई घोड़ा इतनी ऊंची उछाल मार सकता है॥"

इतने ही में जेरी भी साथियों के साथ वहीं पहुंच गया और कह सुन तथा इनाम की लालच दे उसने उन सवारों को साथ ले लिया और फिर डिक का पीछा शुरू हुआ। अब दौड़ बड़ी ही दिलचस्प हो गई। सब सवार आपस में दूसरे के आगे निकलने की कोशिश करते और यही चाहते सब से पहिले ये ही पहुंच कर डिक को पकड़ने की बाजी तथा इनाम लूटें। डिक इन सभों का शोर गपाड़ा और को चाबुक मार मार कर और तेज चलाने की कोशिश देख मन ही मन बहुत हंसता था क्योंकि उसको अपने अपनी घोड़ी के ऊपर भरोसा था और जानता था कि जब चाहे तभी अपने पीछा करने वालों को पीछे छोड़ सक है। मगर वह बेस को इस रफ्तार से तेज नहीं चलाया चाहता था कि इसमें कई प्रकार से शुरू में उसका पता देना ठीक होता। वह अपने और पीछा करने वालों के बीच में

गज का फासला रक्खे चला जाता था और न उस फासले बढ़ाता और न घटने ही देता था ॥

अब गांव खतम होगया और उसके सिरे पर का दूसरा टक दिखाई देने लगा। यह फाटक बहुत ही ऊंचा था और र की तरफ नोकदार छड़ लगे रहने के कारण और भी रा मालूम होता था ॥

जेरी ने अपने साथियों से पुकार कर कहा, "फाटक वाले दमी को कहो फाटक बंद करदे और इस आदमी को जाने दे।" उसकी इच्छानुसार एक आदमी ने पुकार कर उस दमी से जो फाटक के पास हर दम तैनात रहता था कहा, ाटक बन्द कर दो। यह आदमी जो भागा जा रहा है डाकू जल्दी फाटक बन्द कर दो, भागने न पावे॥"

यह आदमी इन सवों का चिल्लाना सुन कर अपनी झोपड़ी से निकला। पहिलीही नजर में उसको सब हाल मालूम हो ा और उसने फुर्ती से फाटक बन्द कर दिया। इसके बाद भाग कर फिर अपनी झोपड़ी में घुस गया क्योंकि उसको बात का डर लगा कि कहीं वह आदमी जिसको यह सब कू बता रहे हैं उसके फाटक बन्द कर देने पर नाराज होकर गोली न मार दे ॥

अब जेरी को कुछ खुशी मालूम हुई क्योंकि उसे विश्वास ा कि इक इतना ऊंचा फाटक पार न कर सकने के कारण क रुकेगा,मगर उसकी यह प्रसन्नता कुछ ही देरकी थी क्योंकि स ने बगैर किसी तरह की तकलीफ के इस फाटक को भी ार कर लिया और जेरी तथा उसके साथी देखते ही रह गये॥

जब तक जेरी उस फाटक के पास पहुंचे तब तक वह फा-टक वाला भी अपनी झोपड़ी में से निकलकर वहां आ पहुंचा। जेरी ने उससे फाटक खोल देने को कहा मगर उसने बिगड़कर जवाब दिया, "अब फाटक घड़ी घड़ी खोला और बन्द किया नहीं जा सकता। एक आदमी बिना महसूल दिये निकल गया अब तुम लोग भी इसी तरह भागा चाहते हो। जब तक तुममें से हर एक आदमी मुझे महसूल नहीं दे लेगा फाटक खोला न जायगा॥"

डिक के अछूते निकल भागने के कारण जेरी का मिज़ाज पहिले ही से बिगड़ रहा था और जब उसने फाटक वाले को इस तरह कहते सुना तो वह और भी भभक उठा और बोला, "अबे बेवकूफ! तू जानता नहीं मैं कौन हूं? मैं पुलिस का अफसर हूं और यह आदमी जो भागा जाता है मशहूर डाकू डिक टर्पिन है। जल्दी दर्वाजा खोल देर न कर॥"

डिक टर्पिन का नाम सुन फाटक वाले के कान कुछ खड़े हुए मगर उस जिद्दी ने फिर भी फाटक न खोला और बोला, "तुम चाहे कहीं के राजा हो क्यों न हो मगर मैं तो बिना महसूल लिये फाटक नहीं खोलने का॥"

ऐसे जिद्दी से बहस करके समय नष्ट करना भी बेवकूफी समझ कर जेरी के साथी लोगों ने सभों का महसूल निकाल कर बूढ़े के हाथ पर रक्खा और तब उसने सब आदमियों को गिन कर महसूल ठीक पाया तो फाटक खोला॥

इतना समय निकल जाने से डिक को और भी सुभीता हो गया। उसने अपनी घोड़ी बहुत धीरे धीरे चला कर उसको

स्ताने का मौका दिया और इसके बाद जब जेरी वगैरह को फाटक पार कर अपनी तरफ आते देखा तो फिर बेंत को तेज किया ॥

अब आगे की तरफ एक दूसरा गांव दिखाई देने लगा, डिक उस को अगर बचा कर निकल सकता तो बहुत ही खुश होता क्योंकि यह गांव बहुत बड़ा था मगर ऐसा होना असम्भव था क्योंकि सड़क ठीक गावके बीचोबीच से जाती थी, जब डिक गांव में पहुंचा तो घोड़ों के टापों की आवाज और पीछा करने वालों की चिल्लाहट से होशियार होकर बहुत से आदमी अपने अपने घरों से बाहर निकल आये और डिक को रोकने की कोशिश करने लगे। बहुत से लोग हाथों में ईंट पत्थर या और कोई भारी चीज लेकर सड़क के दोनों तरफ खड़े होगये और जब डिक पास पहुंचा तो उसके ऊपर ईंट पत्थरों की एक अच्छी खासी वर्षा होगई मगर उसका इससे कुछ ज्यादे नुकसान न हुआ और वह बेंत को तेज कर के गांव के बाहर निकल गया ॥

दस बारह मील तक जाते जाते डिक का पीछा करने वालों की गिनती बहुत कम होगई क्योंकि ज्यों ज्यों उनके घोड़े थकते जाते थे त्यों त्यों वे इस दौड़ से हाथ धोकर अलग होते जाते थे यहां तक कि एडमन नामक गांव के पास आते तक सिर्फ जेरी और उसके तीनों साथी ही डिक का पीछा करते दिखाई दे रहे थे ॥

एडमन में पहुंच कर फिर एकबार वैसाही हुआ जैसा कि पहिले दो गावों में हो चुका था अर्थात डिक को रोकने की बहुत कोशिशें की गईं मगर सब बेकार हुईं। हां इतना जरूर हुआ

तुम्ही उसका पीछा कर सकोगे॥"

अंधकार पल पल में बढ़ता जाता था। पीछा करने वालों ने अब चिल्लाना और शोर मचाना छोड़ दिया था बल्कि उनमें से बहुतसे तो इस समय डिक का पीछा करने की बनिस्बत घर पर आराम के साथ लेटना मना रहे थे और चाहते थे कि इसी तरह डिक आगे निकल जाय तो इस दौड़से छुट्टी मिले क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया था कि अब अंधेरे में डिक का पकड़ा जाना असम्भव है॥

डिक को कुछ ध्यान मालूम पड़ी और इस समय में उसने बेस की लगाम ढीलदी जिससे वह और भी तेजी के साथ भागी और थोड़ी ही देर में पीछा करने वालों के टापों की आवाजें सुनाई देना भी बन्द हो गया। पांच मील के करीब तक डिक इसी तरह तेजी के साथ भागा गया और तब एक गांव के नजदीक पहुंच कर उसने एक सराय के आगे बेस को खड़ा किया॥

डिक घोड़ी से उतर पड़ा और बेस की लगाम उसी जगह लटका कर सराय के अन्दर गया। अपने लिये कुछ लेने के पहिले उसने दो बोतल शराब बेस के लिये ली और उसे एक बालटी में डाल कर बेस को पिलाया। इसके बाद उसने अपने लिये कुछ लिया मगर उसे खाने के पहिले उसने बेस की जीन वगैरह उतार दी और उसे ठंढा होने दिया। जब तक डिक भोजन करता रहा तब तक बेस को सुस्ताने का मौका मिला और उसकी थकावट कुछ दूर हो गई॥

करीब बीस मिनट तक डिक सराय में रहा और इसके

बाद उसे घोड़ों के टापों की आवाजें सुनाई देने लगीं जिसे वह समझ गया कि पीछा करने वाले आ पहुंचे। उसने जल्दी बेस पर जीन कसी और इसके बाद सराय के मालिक की तरफ एक अशर्फी फेंक यह बेस पर सवार हो वहां से रवाना हुआ॥

जैसे ही डिक रवाना हुआ वैसे ही जेरी भी अपने साथियों समेत वहां आ पहुंचा। डिक को भागे जाते देख उसकी तरफ इशारा कर उसने कुछ रुखाई के साथ सराय वाले से कहा, "क्यों जी तुमने उस आदमी को रोका क्यों नहीं?"

सरायवाले ने ताज्जुब से पूछा, "क्यों मैं उसे क्यों रोकता?"

जेरी ने कहा, "वह डाकू है क्या तुम उसे नहीं जानते?"

सरायवाला०। भला मैं यह क्योंकर जान सकता था कि यह डाकू है! मैं तो उसे कोई भला आदमी समझता था और समझता हूं॥

जेरी ने ज्यादा बकवाद करना बेफायदा समझ कर कहा, "अच्छा यह बताओ तुम्हारे पास घोड़े हैं? हमारे ये घोड़े बिलकुल थक गए हैं और अब एक कदम चलने लायक नहीं रहे हैं॥"

सराय वाले के पास घोड़े नहीं थे अस्तु उसने साफ जवाब दे दिया मगर इतना कह दिया कि आगे जाने पर एक दूसरी सराय में घोड़े मिल सकते हैं। लाचार जेरी मन ही मन ताव पेच खाता हुआ किसी तरह उस दूसरी सराय तक पहुंचा और वहां नये घोड़ों का इन्तजाम किया। एक ऐसे आदमी के बिना जो इधर की सड़कें वगैरह अच्छी तरह जानता हो अब —— जाना मुश्किल था क्योंकि जेरी इस तरफ कभी आया

न था और न इधर की सड़क वगैरह का हाल जानता था। अस्तु जेरी ने खोज ढूंढ कर एक ऐसे आदमी को भी ठीक कर लिया जो इस प्रान्त का सब हाल जानता था॥

इस ढूंढाढांढी में बहुत देर होगई और अब पूरी तरह से अंधकार हो गया। यह देख जेरी के एक साथी ने जेरी से पूछा "क्या अब इस अंधेरे में पीछा करना मुनासिब होगा?" जेरी ने कुछ चिढ़ कर जवाब दिया, "क्यों मुनासिब न होने की इसमें क्या बात है? मैंने तो कह दिया न कि चाहे मुझे आज रात भर और कल का दिन तथा कल की रात भी यदि घोड़े ही की पीठ पर बितानी पड़े तो भी मैं पीछा करने से नहीं हटने का! अगर तुम्हें डर मालूम हो तो तुम यहां रह सकते हैं॥"

इतना कह कर जेरी ने उस आदमी से जो राह बताने के लिये मुकर्रर किया गया था कहा, "तुम्हारी समझ में अब कौन सी सड़क पर चलना चाहिये॥"

उस आदमी ने जवाब दिया, "मैं समझता हूं कि अब उस डाकू ने उत्तर तरफ वाली सड़क पसन्द की होगी क्योंकि उधर से आमदरफ़ बहुत कम होती है। मगर मैं यह बात निश्चयतः नहीं कह सकता क्योंकि वे डाकू लोग सब सड़कें बहुत अच्छी तरह जानते हैं और वे कब किस तरफ घूम जायेंगे इस बात का जानना बहुत ही मुश्किल है॥"

इस बात को सुन कर जेरी की हिम्मत को बहुत बड़ा धक्का लगा मगर उसने कुछ कहा नहीं और अपने साथियों के साथ उस सड़क पर तेज़ी के साथ जाने लगा जिधर उस डाकू के जाने का ख़याल था॥

चौबीसवां बयान।

जेरी अपने साथियों सहित चुपचाप चला जा रहा था। बहुत दूर तक जाने पर भी अभी तक उसे डिक की कुछ आहट न मिली थी इससे वह मन ही मन घबरा रहा था और इस फिक्र में था कि कहीं कोई आदमी मिले तो उससे डिक के बारे में दरियाफ्त करे मगर रात अंधेरी और कुछ कुछ बदली छाये रहने के कारण सड़क पर कहीं कोई आदमी चलता दिखाई न देता था॥

बहुत दूर तक इसी तरह चुपचाप चले जाने के बाद वे सब एक गांव के नजदीक पहुंचे जिसके सिरे पर एक छोटी सी सराय थी। गर्मी और उमस के कारण कई आदमी सराय के बाहर सड़क के किनारे कुर्सियों पर बैठे हुए बातें कर रहे थे। जेरी ने पास पहुंच डिक के बारे में कुछ जानने की आशा से घोड़ा रोका और एक आदमी की तरफ देख पूछा, "क्यों जी! तुमने किसी सवार को इधर से जाते देखा है?"

वह आदमी कुछ देर तक तो जेरी का मुंह देखता रहा इसके बाद बोला, "कैसा सवार?"

जेरी यह सुन चिढ़ कर बोला, "कैसा सवार? सवार कैसा होता है? जो घोड़े पर सवार हो उसे ही तो सवार कहते हैं? फिर यह क्या पूछते हो कि कैसा सवार?"

वह आदमी यह सुन कुछ हँस कर बोला, "जो घोड़े पर सवार हो उसे ही तो सवार नहीं कहते हैं। जो घुड़सवारी के फन को अच्छी तरह जानता हो उसे सवार कहना चाहिये।"

ागर कोई किसी मन्दर को घोड़े पर सवार करा दे तो वह
न्दर सवार नहीं कहलायेगा॥"

जेरी के एक साथी ने जेरी को ज्यादे बनाये जाने से बचा
र उस आदमी से कहा, "भले आदमी! तुम दिल्लगी मत करो
ेक ठीक बात का जवाब दो? हमलोग पुलिस के आदमी
और एक डाकू का पीछा कर रहे हैं। क्या तुमने किसी आ-
मी को घोड़े पर सवार इधर से जाते देखा है?"

अब उस आदमी ने जवाब दिया, "हां हां हमलोगों ने
क सवार को इधर से जाते देखा है। वह बड़ा खुशमिजाज
ालूम होता था, एक गीत गाता जा रहा था॥"

जेरी ने यह सुन जल्दी से पूछा, "कब कब! कितनी देर हुई?"

आदमी०। करीब डेढ़ घंटे हुए॥

जेरी ने यह सुन एक लम्बी सांस खींची। वह खूब समझता
ा कि डिक को डेढ़ घंटे का समय मिल जाना उतना ही है
ितना बहुतों को डेढ़ दिन का मगर तो भी उसने अपने सा-
थियों को रुकने का हुक्म न दिया क्योंकि अपने इस कहने का,
ो खयाल था कि "चाहे मुझे आज रात भर और कल का दिन
ा कल की रात भी यदि घोड़े की पीठ पर बितानी पड़े तो
ी मैं पीछा करने से नहीं हटने का।" जो कि उसने थोड़ी ही
र पहिले अपने साथी से कहा था। जेरी का साथी तो मन
ी मन चिढ़ रहा था क्योंकि उसे निश्चय होगया था कि अब
डिक का हाथ में आना बहुत मुश्किल है दूसरे इस अंधेरी रात
ौर बदली ने और भी उसकी, उसकी ही क्यों और भी उसके
ई साथियों की, हिम्मत तोड़ दी थी क्योंकि अंधकार के मारे

हाथ को हाथ नहीं सूझता था और चन्द्रमा के निकलने
अभी पूरे एक घंटे की देर थी॥

~~~

पचीसवां बयान।

डिक बराबर उसी चाल से भागा जा रहा था। वह
की सड़कों को बखूबी जानता था। अंधेरी रात में उसे कि
तरह का खतरा न था और न उसकी घोड़ी ही अंधेरे में कि
तरह से झिझकती या तेज जाने में डरती थी। डिक अब
बहुत ही धीरे धीरे चला रहा था क्योंकि एक तो उसने
पार्क तक जाने का निश्चय कर लिया था दूसरे उसे विश्वास
कि अंधेरे में उसका पीछा करने वाले कभी उसको पा न सकें
थोड़ी ही देर में बदली साफ होगई और चन्द्रमा
निकल आया। डिक घोड़े पर से उतर पड़ा और जमीन
साथ कान लगा बड़े गौर से सुनने लगा मगर उसे किसी त
की आवाज सुनाई न दी जिससे उसे निश्चय हो गया कि
का पीछा करने वाले अभी बहुत पीछे हैं। यह जान उसने
को सड़क के एक किनारे लाकर खड़ा करने बाद उसकी जं
वगैरह उतार दी और उसे आराम करने दिया॥

कोई आधे घंटे बाद डिक को घोड़ों के टापों की
आहट मालूम पड़ी जिसे सुन वह समझ गया कि जेरी औ
उसके साथी आ रहे हैं। उसने बेस को जीन वगैरह कस
दुरुस्त किया और उसपर सवार हो फिर आगे का रास्ता लिय
बेस आधे घंटे तक सुस्ता लेने से बिल्कुल ताजी हो ग
~~~

॥ श्रीः ॥

मोतियों का खजाना।

पहिला हिस्सा।

पहिला बयान।

मारसलीज़ में एक जहाज की आमद।

सन् १८१० ई० की अठाइसवीं फरवरी को मारस-लीज बन्दर में खबर पहुंची कि फरन नामी जहाज जो मुल्क फ्रांस और दूसरे कई एक शहरों से सफर करता हुआ आ रहा था बन्दर में पहुंचा ही चाहता है। यह खबर पाते ही एक मल्लाह किश्ती पर सवार होकर फौरन उस तरफ रवाना हुआ जिस तरफ से वह जहाज आ रहा था। इस दर्मियान में तमाशा देखनेवालों का बन्दर के प्लैटफार्म पर ठट्ठ जम गया। मारसलीज़ के बन्दर में जब कोई जहाज आता था तो उसको देखने के वास्ते हजारों ही आदमी पहुंच जाते थे परन्तु इस जहाज की आमद सुन कर ज्यादा चहलपहल होने की एक खास वजह यह थी कि यह जहाज मारसलीज़ ही में बना था और अभी तक मारसलीज के ही बाशिन्दे उसके मालिक थे।

इतने में ज्योंहीं जहाज दूर से आता दिखाई दिया मारसलीज के बाशिन्दों की खुशी का पारावार न रहा मगर यह खुशी उनके चेहरों पर बहुत देर तक न रही क्योंकि जब वह जहाज और करीब पहुंचा और लोगों ने देखा कि उसकी चाल बहुत ही धीमी है तो उनके मन में तरह तरह के सन्देह उठने लगे। अगर एक आदमी जो जहाज चलाने में बड़ा तजर्बेकार गिना जाता था उनके पास खड़ा न होता तो उन लोगों को निश्चय हो जाता कि जरूर जहाज में कोई खराबी पैदा हो गई है मगर उसने यह कहकर कि "जहाज की चाल बहुत दुरुस्त है" सब लोगों के दिल से सन्देह दूर कर दिया।

इतने में वह जहाज और करीब पहुंच कर लंगर डालने की तैयारी करने लगा। अब लोगों को साफ २ दिखाई देने लगा कि वह मल्लाह भी जो किश्ती पर सवार हो कर उस तरफ गया था उस जहाज पर पहुंच कर एक जवान आदमी के पास खड़ा है और वह जवान जहाज की हर एक हरकत पर ध्यान देता हुआ अपने मातहत मल्लाहों को ऊंची आवाज में जरूरी हुक्म दे रहा है।

पाठक महाशय! यह सब कुछ था और तमाशबीनों के दिल से सन्देह भी दूर हो गये थे मगर फिर भी उस भीड़ में एक आदमी ऐसा था जिसकी बेचैनी बराबर बढ़ती ही जा रही थी। उसको इतना सब्र न हुआ कि

जहाज के किनारे तक पहुंचने का यह इन्तजार करे अस्तु एक छोटी सी किश्ती पर बैठ कर यह भी जहाज की तरफ रवाना हुआ और बात की बात में जहाज के पास जा पहुंचा। जब उस नैाजवान की जो मल्लाहों को हुक्म दे रहा था किश्ती वाले आदमी पर नजर पड़ी तो वह टोपी उतार कर जहाज के किनारे तक चला आया और उन दोनों में इस तरह बातचीत होने लगी:—

किश्ती वाला०। ओह! डोनर तुम हो! कहो सब खैरियत तो है? मगर तुम्हारे चेहरे पर खुशी मालूम नहीं होती!

डोनर०। (किश्ती वाले से) मारल! हम पर बड़ी मुसीबत आ पड़ी! अफसोस! हमारा कप्तान हमलोगों से जुदा कर दिया गया!

मारल०। (ताज्जुब और जल्दी से) और असबाब?

डोनर०। असबाब सब मौजूद है मगर हमको कप्तान की जुदाई का बड़ा दुःख है।

मारल०। (रंज के साथ) कप्तान का तो बेशक मुझे भी बड़ा रंज हुआ! आखिर उसे हुआ क्या था?

डोनर०। होना क्या था, मौत आ गई!

मारल०। क्या समुद्र में गिर गया?

डोनर०। नहीं, सिर्फ बुखार ने उसको मार डाला।

यह कह कर उसने मल्लाहों की तरफ देख कर हुक्म दिया, "देखो लंगर डालने के लिये सब लोग तैयार हो

इतने में जब जहाज गोल बुर्ज के नीचे जा पहुंचा तो डोनर ने पुकार कर मल्लाहों से कहा, "पाल गिराने के लिये तैयार हो जाओ।"

इस हुक्म की फौरन तामील की गई। "नीचे गिरा कर समेट दो" इस आखिरी हुक्म पर सब पाल गिरा कर समेट दिये गये और जहाज धीरे २ मस्तानी चाल से आगे बढ़ा।

डोनर०। (मारल को बेचैन देख कर) मारल! अगर अब आप जहाज पर आ जाओ तो बहुत अच्छा हो। देखिये दंगली भी अपनी कोठड़ी में से निकल कर इधर ही आ रहा है, वह आप की हर एक बात का जवाब देगा और तबतक मैं जहाज का लंगर गिरवाता हूं।

यह कहकर उसने एक रस्सा मारल की तरफ फेंका। मारल ने भी फिर कुछ कहना सुनना मुनासिब न समझा और रस्सा पकड़ कर वह मल्लाहों की सी फुर्ती से जहाज के ऊपर चढ़ आया। उसके आते ही डोनर अपने काम की तरफ रवाना हुआ और मारल को उस आदमी के साथ बातचीत करने के लिये छोड़ गया जिसका नाम उसने दंगली बताया था। दंगली की उम्र पचीस वर्ष के लगभग थी और चेहरा उसका बड़ा खूबसूरत था। अपने मालिक का यह आज्ञाकारी सेवक था और अपने मातहतों पर सदा सख़्ती का बर्ताव रखता था। चूंकि जहाज की बिल्कुल जवाबदेही उसी के ऊपर थी इस लिये सब मल्लाह उससे नफरत किया करते थे।

जाओ।" हुक्म की देर थी, फौरन ही आठ दस मल्लाह लंगर के पास खड़े हो गये और उस जवान ने जब देखा कि मेरे हुक्म की पूरी २ तामील हो गई है तो उसने मारल की तरफ फिर देखा।

मारल०। (डोनर को अपनी तरफ देखते देख) यह मुसीबत कैसे आई?

डोनर०। साहब इसका तो किसी को ध्यान गुमान भी नहीं था! फ्रांस से हम लोग राजी खुशी रवाना हुए मगर रवाना होने के दूसरे ही दिन उनको ऐसा बुखार आया कि तीन दिन में बेचारे को इस दुनियां ही से बिदा होना पड़ा अस्तु बड़े दुःख के साथ उसको समुद्र में फेंक कर हमलोग उसकी तलवार और तमगे उसकी औरत के लिये लेते आये हैं। देखिये जिस शख्स ने दस बरस तक अंग्रेजों के साथ घोर युद्ध किया उसकी मौत ऐसे साधारण तौर पर बदी थी!

मारल०। प्यारे डोनर! एक रोज हम सब की यही हालत होनी है! जो पैदा हुआ है वह अवश्य मरेगा इसलिये बूढ़ों को हमेशा अपनी जगह नौजवानों को देने के लिये तैयार रहना चाहिये। अच्छा यह जो तुमने कहा है कि जहाज का असबाब........

डोनर०। (उसकी बात काट कर) उसके बारे में तो मैं पहिले ही कह चुका हूं कि उसमें जरा भी खराबी नहीं पहुंची। आप विश्वास रखिये इस सफर का मुनाफा आपको पचीस हजार रुपये से कौड़ी कम न मिलेगा

इतने में जब जहाज गोल बुर्ज के नीचे जा पहुंचा
। डोनर ने पुकार कर मल्लाहें से कहा, "पाल गिराने
। लिये तैयार हे जाओ।"

इस हुक्म की फौरन तामील की गई। "नीचे गिरा
र समेट दो" इस आखिरी हुक्म पर सब पाल गिरा
र समेट दिये गये और जहाज धीरे २ मस्तानी चाल
आगे बढ़ा।

डोनर०। (मारल के बेचैन देख कर) मारल! अगर
ब आप जहाज पर आ जाओ ते बहुत अच्छा हो।
लिये दंगली भी अपनी कोठड़ी में से निकल कर इधर
ी आ रहा है, वह आप की हर एक बात का जवाब
गा और तबतक मैं जहाज का लंगर गिरवाता हूं।

यह कहकर उसने एक रस्सा मारल की तरफ फेंका।
ारल ने भी फिर कुछ कहना सुनना मुनासिब न समझा
ौर रस्सा पकड़ कर वह मल्लाहें की सी फुर्ती से जहाज
ं ऊपर चढ़ आया। उसके आते ही डोनर अपने काम
ी तरफ रवाना हुआ और मारल के उस आदमी के
ाथ बातचीत करने के लिये छोड़ गया जिसका नाम
सने दंगली बताया था। दंगली की उम्र पचीस वर्ष के
गभग थी और चेहरा उसका बड़ा खूबसूरत था। अपने
ालिक का वह आज्ञाकारी सेवक था और अपने मा-
हतों पर सदा सख़्ती का बर्ताव रखता था। चूंकि
हाज की बिलकुल जवाबदेही उसी के ऊपर थी इस
लिये सब मल्लाह उससे नफरत किया करते थे।

दंगली ने मारल से चार आंखें होते ही झुक कर सलाम किया और फिर उनमें इस तरह बातचीत होने लगी:—

दंगली०। मारल साहब! रास्ते में हमलोगों पर जो आफत आई उसका हाल तो आपने सुना ही होगा!

मारल०। हां, मुझको कप्तान के यकायक मरजाने का बड़ा रंज है! वह बड़ा ईमान्दार आदमी था।

दंगली०। वह अव्वल दर्जे का मल्लाह था। लड़कपन से बुढ़ौती तक उसने सिर्फ जहाज का ही काम किया और आपके कारखाने का भी ऐसा बन्दोबस्त कर गया जैसा शायद ही कोई कर सके!

मारल०। (डोनर की तरफ देख कर जो लंगर डलवा रहा था) मगर दंगली! मेरे खयाल से तो जहाज के कप्तान का ज्यादा बूढ़ा होना ठीक नहीं है क्योंकि बुड्ढा हो जाने से न तो वह फुर्ती का काम ही कर सकता है और न उसमें गैार करने की ही शक्ति रह जाती है। देखो जिस खूबी के साथ डोनर इस समय काम कर रहा है क्या बुड्ढे आदमी ऐसा कर सकते हैं?

दंगली०। (नफरत से मारल की तरफ देख कर) बेशक वह नैाजवान है और अपनी जवानी का उसे घमंड भी बहुत ज्यादा है। अभी कप्तान बेचारे ने आखिरी दम भी नहीं तोड़ा था कि बगैर किसी से पूछे ही यह उसकी जगह पर काम करने लग गया और फिर उसके मरने के बाद सीधा मारसलीज को न आकर

उसने हमारा डेढ़ दिन फजूल एलबा के टापू देखने में बर्बाद कर दिया।

मारल०। कप्तान की जगह पर काम करना तो उसका फर्ज ही था क्योंकि वह कप्तान का मेट था परन्तु यदि जहाज को मरम्मत की कुछ जरूरत नहीं थी तो एलबा में फजूल डेढ़ दिन लगाना बेशक उसकी गलती थी!

दंगली०। जहाज तो ऐसा मजबूत था जैसे कि आप हैं मगर उसने सिर्फ अपनी कप्तानी की खुशी में ही हमारा डेढ़ दिन बर्बाद कर दिया और कोई बात नहीं थी!

मारल०। (डोनर की तरफ देख कर) डोनर! इधर आओ!

डोनर०। जरा ठहरिये साहब, मैं अभी हाजिर होता हूं (फिर मल्लाहों से) फौरन लंगर छोड़ दो।

उसके इस हुक्म की फौरन तामील की गई। लंगर गिरा और उसकी जंजीर खड़खड़ाती हुई लंगर के साथ तह तक जा पहुंची। यह देखकर उसने फिर कहा "मस्तूल को नीचा करो, निशान को उसकी जगह में रक्खो और झण्डी तिर्छी करदो।"

दंगली०। (चुगली खाने के ढंग से) देखिये उसने आपके बुलाने की भी रत्ती भर परवाह न की! जनाब! यह तो कप्तान के मरने के वक्त से ही अपने को कप्तान समझने लग गया है।

मारल०। तो उसके कप्तान होने में अब बाकी ही क्या है?

दंगली०। क्या आपके और आपके शरीक के हुक्म के बगैर ही?

मारल०। जब वह काम बखूबी कर सकता है तो हुक्म क्यों न दिया जायगा? यह सच है कि उसकी उम्र अभी बहुत कम है मगर मेरे देखने में अपना काम वह बखूबी कर सकता है।

इतने में डोनर आपहुंचा और बोला, "बेअदबी माफ हो क्योंकि जिस समय आपने बुलाया था लंगर गिराया जा रहा था इसलिये मैं फौरन हाजिर न हो सका।"

इस समय दंगली कुछ दूर हट गया था अस्तु मारल ने डोनर से कहा, "तुम एलबा में किसलिये ठहरे थे?"

डोनर०। इसका सबब तो ठीक ठीक मैं नहीं कह सकता क्योंकि वहां मैं सिर्फ अपने कप्तान के हुक्म से उतरा था। मरते समय उन्होंने एक पार्सल देकर मुझसे कहा था कि इसे एलबा के बादशाह को दे देना।

मारल०। तो क्या तुम्हारी उनके साथ मुलाकात हुई?

डोनर०। हां।

मारल०। (चारों तरफ निगाह दौड़ाकर धीरे से) वह कैसा है?

डोनर०। जब मैंने देखा था तब तो चंगा भला था।

मारल०। तो तुमने उससे बात चीत की ?

डेनर०। (मुस्करा कर) जनाब ! उसने खुद मुझसे बात की थी !

मारल०। तुमसे उससे क्या कहा था ?

डेनर०। उसने मुझसे जहाज के बारे में कई एक सवाल किये थे–उसने पूछा तुम किस वक्त मारसलीज से रवाना हुए थे, किस रास्ते से आये और क्या माल लाये हो ? मैं समझता हूं अगर हमारा जहाज माल से भरा न होता और मैं जहाज का मालिक होता तो वह जरूर उसे खरीद लेता। परन्तु जब मैंने कहा कि मैं सिर्फ इस जहाज का मेट हूं और मालिक इसका मारल कम्पनी है तो वह खामोश हो रहा। उसने कहा मैं मारल कम्पनी के मालकों को खूब जानता हूं, वे लोग बड़े पुराने जमाने से जहाजों का काम करते चले आये हैं, बल्कि इस खान्दान का एक आदमी मेरे साथ उस जमाने में पलटन की नौकरी भी करता था जब मैं वेनिस में था।

मारल०। (खुश होकर) हां यह ठीक है, वह मेरा चचा था जो पीछे फौज का कप्तान हो गया। अच्छा डेनर यह हाल तुम मेरे चचा को भी सुना देना कि एलवा का बादशाह तुम्हें याद करता था (डेनर की पीठ पर हाथ फेर कर) डेनर ! इस बात से मुझे बड़ी खुशी हुई कि अपने कप्तान की मरते समय की आज्ञा का तुमने पूरा २ पालन किया। चाहे हमारी सर्कार को यह

सुन कर बुरा मालूम हो कि तुम एलबा के बादशाह के
पास कोई पार्सल पहुंचाने गये थे और ताज्जुब नह
कि उससे तुमको कुछ तकलीफ भी पहुंचे मगर मैं तुम्हा
तारीफ ही करूंगा क्योंकि तुमने अपने अफसर के हुक
की पूरी २ तामील की है।

डोनर०। मैं नहीं समझ सकता कि इस बात से य
की सर्कार क्यों मुझे तकलीफ पहुंचायेगी क्योंकि न
मुझे यही मालूम था कि जो पार्सल मैं एलबा में पहुं
आया हूं उसके अन्दर क्या था और न वहां के बादश
ने मुझसे कोई वहां का गुप्त हाल ही दरियाफ्त कि
या। सिर्फ उन्होंने मामूली बातें पूछी थीं जो वह ह
एक राह चलतू से पूछ सकते थे (यकायक डाक्टर औ
चुङ्गी के अफसर को जहाज की तरफ आते देख
जनाब! थोड़ी देर के लिये मेरी गैरहाजिरी म
कीजियेगा क्योंकि डाक्टर और चुङ्गीवाले अफसर
बातचीत करना बहुत जरूरी है।

यह कह कर वह तेजी के साथ उधर रवाना हु
और उसके जाते ही दंगली ने मारल के करीब पहुंच
कहा, "मालूम होता है एलबा में उतरने की ब
उसने पूरी २ आपको बयान कर दी है।"

मारल०। हां भाई वजह तो उसने बेशक ठीक
बयान कर दी है।

दंगली०। आपको यकीन आ गया तो अब ठी
ही है। मैंने तो सिर्फ अपना फर्ज अदा किया है क्यों

मगर मैं न कहता और आपको किसी दूसरे जरिये से मालूम होता तो आप जरूर समझते कि मैं भी उसकी साजिशों में शरीक हूं।

मारल०। तुम्हारा कहना ठीक है मगर डोनर यहां अपनी खुशी से नहीं ठहरा था, कप्तान ने उसको हुक्म दिया था कि मेरा एक काम यहां करके तब आगे बढ़ना इसीलिये यह रुका था।

दंगली०। क्या डोनर ने कप्तान का कोई खत आपको नहीं दिया ?

मारल०। नहीं खत तो मुझे कोई नहीं दिया! क्या कोई था ?

दंगली०। मुझे विश्वास है कि पार्सल के साथ एक खत भी उसने दिया था।

मारल०। पार्सल कैसा ?

दंगली०। जो वह एलबा में पहुंचाने गया था।

मारल०। तुम्हें यह बात क्योंकर मालूम हुई कि वह एलबा में पार्सल पहुंचाने गया था ?

दंगली०। मैं उस समय कप्तान के कमरे के पास से आ रहा था जब उसने डोनर को एक पार्सल और खत दिया था।

मारल०। मगर खत का डोनर ने मुझसे कोई जिक्र नहीं किया, अगर होगा तो वह दे देगा।

दंगली०। (कुछ देर गौर में पड़े रहने के बाद) मारल साहब! मैं आपसे मिन्नत करता हूं कि खत के

बारे में आप डोनर से कुछ न पूछियेगा, सम्भव है मेरी ही आंखों ने धोखा खाया हो !

ठीक उसी समय डोनर फिर मारल के पास आ पहुंचा और दंगली पहिले की तरह अब भी दूर हट गया ।

मारल० । क्यों डोनर ! क्या अब तुम अपना काम खत्म करके आये हो ?

डोनर० । जी हां ।

मारल० । मगर बहुत जल्द तुम्हें छुट्टी मिल गई !

डोनर० । मैंने चुङ्गी के अफसर को जहाज के माल की पूरी फेहरिस्त देदी है और बाकी के कागज उस अफसर के हवाले कर दिये हैं जो मल्लाह के साथ आया था।

मारल० । तो फिर जहाज के बाबत अब तुम्हें यहां कोई काम करना बाकी नहीं रहा ?

डोनर० । जी नहीं ।

मारल० । तब तो मैं आशा करता हूं कि आज रात का खाना तुम मेरे यहां ही खाओगे ।

डोनर० । जनाब इस बात की तो मैं आपसे माफी चाहता हूं क्योंकि मेरा फर्ज यह है कि पहिले जाकर मैं अपने बाप से मिलूं ।

मारल० । बहुत अच्छा, मैं इस काम से तुम्हें रोक नहीं सकता । लायक लड़कों को अपने बड़ों का ऐसा ही खयाल रखना चाहिये ।

डोनर० । क्या आपको मालूम है कि मेरा बाप

कैसा है ?

मारल०। यह तो मैं जरूर कह सकता हूं कि वह भले में है मगर मेरी उसकी मुलाकात बहुत रोज से नहीं हुई!

डोनर०। वे अपनी कोठड़ी से बाहर ही बहुत कम निकला करते हैं।

मारल०। इस बात से तो यही पाया जाता है कि तुम्हारे पीछे उनको किसी चीज की जरूरत ही नहीं पड़ती।

डोनर०। जी नहीं, यह बात नहीं है बल्कि उनकी कुछ आदत ही ऐसी पड़ गई है और मांगने को पूछिये तो मांगना तो परमेश्वर के सिवाय वे किसी से जानते ही नहीं। वे भूख प्यास से मर जाना कबूल करेंगे मगर किसी से मांग कर कोई चीज न लेंगे।

मारल०। तब तो तुम्हें सब काम छोड़ कर पहिले उनसे मिलना चाहिये। उनसे छुट्टी पाकर तब यहां आना।

डोनर०। (कुछ शर्मा कर) मारल साहब! मैं फिर मिन्नत करता हूं कि मुझे जल्द आने की आज्ञा न दीजिये क्योंकि पिता से मिलने के बाद मुझे एक और मुलाकाती से भी मिलना है।

मारल०। (कुछ सोच कर) ठीक है, ठीक है, डोनर! मैं भूल गया था। प्यारी मरियम तुम्हारे बाप से भी बढ़ कर बेकरारी के साथ तुम्हारा इन्तजार कर रही

है। तीन चार महीना तो वह यहां आकर मुझसे पूछ गई है कि फारन जहाज की कोई खबर आई है या नहीं। वास्तव में तुम्हारी सहेली बड़ी खूबसूरत लड़की है।

डोनर०। यह खाली मेरी सहेली ही नहीं है बल्कि उसकी सगाई भी मेरे साथ हो चुकी है।

मारल०। (हँस कर) तब भी तो वही बात हुई।

डोनर०। नहीं साहब, मैं तो इसे एक बात नहीं समझता।

मारल०। खैर इस झगड़े से कोई वास्ता नहीं। तुमने अपना काम ऐसी खूबीसे किया हैकि जितने दिनों की छुट्टी तुम चाहो मैं तुम्हें खुशी से दे सकता हूं, क्या तुम्हें कुछ रुपयों की भी जरूरत है?

डोनर०। नहीं साहब—मैंने अभी अपनी ही तीन महीने की तनखाह लेनी है।

मारल०। डोनर! तुम बहुत नेक आदमी हो। अच्छा पहिले जाकर अपने बाप से मिलो क्योंकि मेरा भी एक बेटा है, अगर तीन महीने के सफर के बाद उसे कोई रोके तो मुझे भी बहुत बुरा लगे।

डोनर०। तो फिर आप खुशी से मुझे इजाजत देते हैं!

मारल०। हां, अगर तुम्हें मुझसे और कुछ कहना नहीं है तो जा सकते हो।

डोनर०। कहना तो अब कुछ भी नहीं है।

मारल०। क्या कप्तान ने मरने से पहिले मेरे लिये

कोई चीठी नहीं दी थी?

डेनर०। जनाब! उसकी मौत तो ऐसी यकायक आ गई जिसका उसको या हमलोगों को ग्रान गुमान भी नहीं था, इसके अलावा अगर वह कुछ लिखना भी चाहता तो उसमें उस समय लिखने की ताकत नहीं थी। आपके यह पूछने से एक बात मुझे बेशक याद आ गई—अगर आप खुशी से इजाजत दें तो मैं कुछ दिनों की और आपसे रुखसत चाहता हूं।

मारल०। शादी करने के लिये?

डेनर०। जी हां! पहिले शादी और फिर पैरिस को जाने के लिये।

मारल०। अच्छा मैं इजाजत देता हूं—जितने दिनों की छुट्टी तुम्हें चाहिये तुम ले सकते हो। छः हफ्ते तो जहाज पर से माल उतारने में ही लग जायँगे और तीन महीने उसके बाद हम तुम्हें सफर पर नहीं भेज सकते। बस तीन महीने के बाद तुम लौट आना क्योंकि जहाज अपने कप्तान के बगैर सफर नहीं कर सकता।

डेनर०। (खुशी से उछल कर) क्या हकीकत में आपका इरादा है कि आप मुझे इस जहाज का कप्तान बना देंगे?

मारल०। अगर मेरा ही अख्तियार होता तब तो मैं इसी समय तुम्हें कप्तान बना देता मगर तुम जानते हो कि मेरा एक शरीक भी है और यह कहावत मशहूर है कि शरीक शरीक नहीं होता बल्कि मालिक होता है

है। तीन चार मर्तबा तो यह यहां आकर मुझसे पूछ ग
है कि फरन जहाज की कोई खबर आई है या नहीं
वास्तव में तुम्हारी चहेती बड़ी खूबसूरत लड़की है

डोनर०। यह खाली मेरी चहेती ही नहीं है ब
उसकी सगाई भी मेरे साथ हो चुकी है।

मारल०। (हँस कर) तब भी तो यही बात हुई

डोनर०। नहीं साहब, मैं तो इसे एक बात न
समझता।

मारल०। खैर इस झगड़े से कोई वास्ता नह
तुमने अपना काम ऐसी खूबीसे किया हैकि जितने दि
की छुट्टी तुम चाहो मैं तुम्हें खुशी से दे सकता हूं,
तुम्हें कुछ रुपयों की भी जरूरत है?

डोनर०। नहीं साहब—मैंने अभी अपनी ही त
महीने की तनखाह लेनी है।

मारल०। डोनर! तुम बहुत नेक आदमी है
अच्छा पहिले जाकर अपने बाप से मिलो क्योंकि
भी एक बेटा है, अगर तीन महीने के सफर के बाद
कोई रोके तो मुझे भी बहुत बुरा लगे।

डोनर०। तो फिर आप खुशी से मुझे इजा
देते हैं!

मारल०। हां, अगर तुम्हें मुझसे और कुछ क
नहीं है तो जा सकते हो।

डोनर०। कहना तो अब

मारल०। क्या कप्तान

नहीं कह सकता। जिस तरह उसने अपना काम किया है उसे सुन कर आप जरूर खुश होंगे!

मारल०। परन्तु यदि तुम कप्तान हो जाओ तो क्या दंगली को देख कर खुश होगे?

डोनर०। कप्तान हो जाऊं या मेट बना रहूं परन्तु जिस पर मेरे मालिक खुश हों मुझे उसकी इज्जत करना वाजिब है!

मारल०। बहुत खूब—तुम बड़े शरीफ आदमी हो! अच्छा अब तुम जल्दी जाकर अपने बाप से मिलो।

डोनर०। क्या मैं आपकी किश्ती लेजा सकता हूं?

मारल०। जरूर लेजा सकते हो।

यह हुक्म पाते ही वह मारल को सलाम करके किश्ती में जा बैठा और मल्लाह खे कर उसको किनारे की तरफ ले चले। मालिक जहाज मुस्कराता हुआ उसकी तरफ देखता रहा यहां तक कि डोनर किनारे पर उतर कर भीड़ में गायब हो गया।

जब वह आंखों की ओट हो गया तो मारल ने मुंह फेर कर दंगली की तरफ देखा जो जाहिरा तो मल्लाहों से बातें कर रहा था मगर वास्तव में वह कनखियों से उस समय डोनर की ही तरफ देख रहा था॥
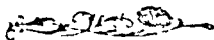
मगर बात आधी तय पा चुकी है क्योंकि दो हिस्सेदारों में से एक तुम्हारी तरफ है और मैं कोशिश करके दूसरे को भी तुम्हारे कप्तान बनाने पर राजी कर लूंगा।

डोनर०। (मुहब्बत से मारल का हाथ पकड़ कर) मैं आपको इस मेहरबानी का दिलसे धन्यवाद देता हूं।

मारल०। धन्यवाद देने की इसमें कोई जरूरत नहीं है क्योंकि तुम बहुत नेक आदमी हो। अच्छा तुम जल्दी जाकर अपने बाप से मिलो और फिर मरियम से मुलाकात करके मेरे पास आना।

डोनर०। और कोई काम मेरे लायक हो तो फर्मा दीजिये।

मारल०। इस समय कोई काम नहीं है। मैं यहां ठहर कर दंगली से हिसाब समझूंगा। हां, यह तो बताओ क्या इस सफर में तुम दंगली से खुश रहे?

डोनर०। साहब अगर इस सवाल से आपकी यह मुराद हो कि मेरे साथ उसका बर्ताव कैसा रहा तो इसका जवाब यह है कि मेरी उसके साथ कभी नहीं बनी। एक दिन जरा सी बात पर मुझे क्रोध चढ़ आया और मैंने उससे ललकार कर कहा कि आओ मेरा तुम्हारा द्वन्द युद्ध हो जाय मगर उसने इन्कार कर दिया। चाहे इस झगड़े में कसूर मेरा ही था मगर उस रोज से वह मेरे साथ नफरत करने लग गया है परन्तु यदि आपके सवाल का यह मतलब हो कि वह अपना काम कैसा करता है तो इस बारेमें मैं उसके खिलाफ कुछ

सकता इसीलिये मैं बगैर खबर किये आपके पास यका-यक आ गया हूं।

बाप०। हां बेटा अब हम जरूर खुश होंगे मगर पहिले तुम यह बतादो कि अब तो तुम मुझको अकेले छोड़ कर कहीं न जाओगे? आओ बेटा मेरे पास बैठ जाओ और मुझे बताओ कि तुम्हारा हाल कैसा रहा?

बेटा०। पिता! मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हमारा कप्तान रास्ते में मर गया। वह ऐसा नेक आदमी था जिसका मुझे हद से ज्यादा रञ्ज है! परन्तु अब सम्भव है कि उसकी जगह मुझी को मिल जाय क्योंकि जहाज का मेट होने के कारण उस जगह का अब मैं ही हकदार हूं। क्यों पिता! अगर हकीकत में कहीं मैं ही उस जहाज का कप्तान बनाया जाऊं और अलावा सौ रुपये महीना पाने के मुनाफे में भी कुछ मेरा हिस्सा हो जाय तो क्या मेरे जैसे गरीब मल्लाह के लिये यह एक सौभाग्य की बात नहीं है?

बाप०। बेशक बड़े सौभाग्य की बात है।

बेटा०। पिता! मेरा इरादा है कि पिछली तनखाह मिलने पर मैं आपके लिये एक छोटा सा मकान खरीद दूं जिसके पीछे थोड़ी सी जमीन भी हो जिसमें आप खाने के लिये अनाज वगैरह भी बो दिया करें। मगर पिता यह तो बताइये कि आपके चेहरे पर इतनी जर्दी क्यों बढ़ती जारही है? क्या आप कुछ बीमार हैं?

दूसरा बयान।

बाप और बेटा।

हम दंगली को झूठी सच्ची बातें गढ़कर मारल के दिल में शक पैदा करते हुए जहाज ही पर छोड़ कर डोनर का हाल लिखते हैं जिसने किश्ती पर से उतर कर घर की राह ली और थोड़ी ही देर में एक छोटे से मकान में दाखिल होकर वह चार मञ्जिल ऊपर चढ़ गया और एक अधखुले दर्वाजे में से झांक कर भीतर की कैफियत देखने लगा। उस कमरे में उसका बाप बैठा हुआ था मगर बुड्ढे को इस बात की बिल्कुल खबर ही नहीं थी कि उसका लड़का यहां तक पहुंच गया है अस्तु जब डोनर ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर कहा, "बाप! प्यारे बाप!" तो वह यकायक चौंक पड़ा और एक चीख मार कर अपने बेटे से लपट गया।

उसकी ऐसी हालत देख कर डोनर घबड़ा गया और उसने कहा, "पिता! कुशल तो है? क्या आप कुछ बीमार हैं?"

बाप०। नहीं बेटा, मैं बीमार नहीं हूं बल्कि तुम्हारे यकायक मिल जाने की खुशी में मेरा कलेजा धक धक करने लग गया है और मुझको ऐसा मालूम हो रहा है जैसे मेरे प्राण निकला ही चाहते हैं।

बेटा०। परन्तु अब तो आप को खुश होना चाहिये क्योंकि मैं आ गया हूं। कहते हैं कि खुशी से कोई नहीं

बाप०। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अपने पड़ोसी कदरू के हमने कुछ रुपये देने थे! तुम्हारे जाते ही वह मुझसे रोज तकाजा करने लगा और एक रोज बोला कि अगर तुम न दोगे तो मैं जहाज के मालिक मारल साहब से जाकर ले लूंगा इससे मैंने ख्याल किया कि मारल से कहने पर शायद तुमको कुछ नुकसान न पहुंचे।

बेटा०। तो फिर?

बाप०। फिर क्या, मैंने अपने पास से निकाल कर दे दिये।

बेटा०। मगर मैंने तो उसके एकसौ चालीस रुपये देने थे।

बाप०। हां उतने ही दिये हैं।

बेटा०। तब तो आपको जरूर तकलीफ हुई होगी क्योंकि साठ रुपये में तीन महीना निर्वाह करना बहुत मुश्किल है।

बाप०। तुम जानते ही हो कि मुझे ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती।

बेटा०। मगर पिता, इस बात से मुझे बड़ा दुःख हुआ! खैर अबतो मैं आही गया हूं—कुछ रुपये मेरे पास अभी मौजूद हैं, वह तो आप ले लें और बाकी तनखाह मिलने पर मैं और दे जाऊंगा। आप किसी आदमी को बाजार में भेज कर अपने वास्ते जल्द कुछ खाने को मंगावें।

यह कहते हुए उसने जेब में से एक छोटी सी थैली

बाप०। नहीं बेटा, कुछ नहीं, मेरी हालत अभी ठीक हुई जाती है।

यह बात कहते २ उसका चेहरा एक दम से सफेद हो गया और वह यकायक पीठ के बल अपनी कुर्सी पर गिर पड़ा।

बेटा०। (यकायक घबड़ा कर) पिता यह क्या! आप जल्दी से एक गिलास शराब का पी लेवें! बताइये आप शराब कहां रक्खा करते हैं मैं निकाल कर पिला दूं।

बाप। नहीं बेटा शराब की कोई जरूरत नहीं है, मैं न पीऊंगा।

बेटा०। नहीं नहीं, बताइये तो सही वह कहां पर है? एक गिलास पीते ही आपकी तबीयत दुरुस्त हो जायगी।

बाप०। शराब जब घर में हो तब तो बताऊं! तुम चुपचाप बैठ जाओ, मैं अभी ठीक हुआ जाता हूं।

बेटा०। (ताज्जुब से) क्या घर में जरा भी शराब नहीं है? क्यों पिता! क्या आपके पास खरीदने के लिये रुपये नहीं थे?

बाप०। जब से तुम्हारी सूरत देखी है तब से मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है।

बेटा०। परन्तु अभी तीन ही महीने हुए हैं जब मैं आपको दोसै रुपये दे गया था, क्या इतने दिनों में आपने वे सब खर्च डाले!

हो गया और फिर डोनर की तरफ देख कर हँसते हुए बोला, "ओहो ! आप हैं !! आप सफर से लौट आये ?"

डोनर०। (अपनी दिली नफरत को छिपा कर हँसते हुए) हां भाई कद्दू आपका तावेदार आ गया है, जो हुक्म हो बजा लाऊं।

कद्दू पचीस छब्बीस बरस का नौजवान आदमी था। वह दर्जी का काम किया करता था और उस समय एक कोट बनाने का कपड़ा उसके हाथ में था। अस्तु डोनर की बात पूरी होतेही उसने कहा, "इस बात का मैं आपको धन्यवाद देता हूं परन्तु ईश्वर की कृपा से मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है। अक्सर लोगों को जरूरत पड़ती है तो वे मुझी से कुछ न कुछ मांग लिया करते हैं। मैं कुछ तुम्हारी तरफ इशारा नहीं कर रहा क्योंकि तुमने तो भले आदमियों की तरह जो कुछ मुझसे लिया था, सब कौड़ी पाई शुद्धा अदा कर दिया है और अब न कुछ लेना है न देना।

डोनर०। जो लोग हमारे ऊपर एहसान करते हैं उनके हम हमेशा एहसानमन्द रहते हैं।

कद्दू०। अच्छा इस समय इन झगड़ों की कोई जरूरत नहीं है, तुम अपने सफर का हाल सुनाओ। मैं तो आज इत्तफाक से बन्दर पर जा पहुंचा था परन्तु वहां पहुंचते ही जब मैंने इङ्गली को जहाज पर खड़े देखा तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं जानता [illegible] गया हुआ है इसलिये उसके

निकाल कर मेज पर उलट दी जिसमें से कुछ सोने के सिक्के, पांच सात रुपये और कुछ रेजगारी पैसे निकल पड़े। बुड्ढा खनखनाहट की आवाज सुनतेही खुश होकर अपने लड़के से बोला "क्यों बेटा! यह सब किसका माल है!"

बेटा०। तुम्हारा है, और किसका? इसको लेकर जो कुछ मंगाना हो खुशीसे मंगाइये, कल हमारे पास और रुपये आ जायंगे!

बाप०। (मुस्करा कर)मैं धीरे २ इन रुपयों को खर्च करूंगा जिसमें लोग सन्देह न करें कि मेरे पास इतने रुपये कहाँ से आ गये।

बेटा०। यह आपकी खुशी है जैसे चाहें खर्च करें मगर इतना आप जरूर करें कि अपनी खिदमत के लिये एक नौकर रखलें क्योंकि इतनी मुद्दत तक मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकता! जहाज पर मेरे पास कुछ भूना हुआ कहवा और तम्बाकू है वह मैं आपको कल दे जाऊंगा—मगर सुनिये तो, किसी के पैरों की चाप सुनाई देती है!

बाप०। कदरू होगा—तुम्हारे आने की खबर सुन कर तुम्हें मुबारकबाद देने आता होगा।

बेटा०। कदरू दिल का तो बड़ा खोटा है मगर फिर भी वह हमारा पड़ोसी ही है। उस मर्तबा बड़े वक्त पर वह हमारे काम आया था।

इतने में कदरू यकायक दर्वाजे में पहुंच कर खड़ा

हुआ हूं कि मारल साहब तुम पर बड़े खुश हैं।

डोनर०। वे हमेशा मुझ पर मेहरबानी रक्खा करते हैं।

दरजी०। तो फिर तुमने उसके यहां खाना खाने से इन्कार क्यों कर दिया?

बाप०। (डोनर से) क्या सचमुच उसने तुम्हें खाने के लिये कहा था और तुमने इन्कार कर दिया?

डोनर०। हां पिता।

बाप०। (ताज्जुब से) क्यों?

डोनर०। जिसमें आप से जल्द मिलूं क्योंकि बगैर आपके देखे मेरी तबीयत घबड़ा रही थी।

दरजी०। मगर मैं समझता हूं इस बात से मारल जरूर तुमसे नाराज हो गया होगा। जब तुम कप्तान बनना चाहते हो तो तुम्हें उसकी खुशामद करनी चाहिये।

डोनर०। नहीं, नाराज होने की कोई वजह नहीं है। मैंने इन्कार करने का सबब भी उससे साफ २ बयान कर दिया था।

दरजी०। फिर भी बगैर खुशामद किये कप्तानी का ओहदा मिलना मुश्किल है।

डोनर०। मगर मुझे इसके बगैर ही कप्तान बनने की उम्मीद है।

दरजी०। वाह! तब क्या पूछना है! अगर ऐसा हो तब तो तुम्हारे दोस्तों के साथ ही साथ तुम्हारी

पास पहुंच कर मैंने तुम्हारा हाल दरियाफ़ किया। इसपर उसने कहा कि क्या तुमने उसको नहीं देखा। वह तो इस समय अपने बाप से बातें कर रहा होगा। इतना सुनते ही मैं खुशी में भरा हुआ वहां से रवाना हुआ और तुम्हारे पास आ पहुंचा।

बाप०। कदरू हम लोगों से बड़ी मुहब्बत रखता है।

कदरू०। मैं जैसी इज्जत आपकी करता हूं वैसी मैंने आज तक किसी की नहीं की। (मेज पर रुपये अशर्फियां देख कर) डोनर! मालूम होता है तुम खूब दौलत कमा कर आये हो!

डोनर०। (बात बना कर) यह रुपया मेरा नहीं है। मैंने अपने बाप से पूछा था कि तुमको मेरे पीछे रुपये पैसे की तो कुछ जरूरत नहीं पड़ी इस पर इन्होंने अपनी जेबमें से निकाल कर मेज पर अपनी जमा पूंजी मेरे सामने रखदी जिसमें मुझे पूरी तरह पर यकीन हो जाय कि ये झूठ नहीं कहते। (अपने बाप से)पिता! अब आप यह रुपये उठा कर संदूक में रख दीजिये, हां अगर कदरू को इनकी जरूरत हो तो दे दीजिये।

कदरू०। नहीं भाई मुझे कोई जरूरत नहीं है, आप अपना रुपया अपने पास रखिये। आप यही समझ लीजिये कि मैंने लेकर खर्च कर लिया है।

डोनर०। नहीं कदरू तुम ले सकते हो, मैं खुशी से तुम्हें देने के लिये तैयार हूं।

कदरू०।सुन तो लिया साहब! मैं तो पहिलेही सुन

डेनर०। (हँसकर) अच्छा अगर मैं कप्तान न हुआ तब?

दरजी०। (सर हिला कर) तब तो मुश्किल है।

डेनर०। बस, बस, तुम इन बातों को नहीं समझ सकते। मैं कप्तान बनूं या न बनूं मगर मरियम मुझको नहीं छोड़ सकती।

दरजी०। तब तो तुम्हारे पौ बारह हैं। अब जल्दी से उसके पास पहुंच कर कहो कि मैं आ गया हूं।

डेनर०। अभी चला।

यह कह कर वह अपने बाप से बगलगीर हुआ और फिर कदरू को सलाम करके कमरे से बाहर निकल गया।

उसके जाने के बाद कदरू थोड़ी देर तक तो बुड्ढे के पास बैठा रहा फिर जैसे ही उठ कर वह मकान से बाहर निकला दङ्गली एक कोने में से निकल कर उसके पास आ मौजूद हुआ।

दङ्गली०। क्या उससे मुलाकात हुई?

दरजी०। हां उसी के पास बैठा तो आ रहा हूं।

दंगली०। क्या अपने कप्तान बनने का भी उसने जिक्र किया था?

दरजी०। उसकी बातों से तो यही पाया जाता है कि वह कप्तान बन ही गया है।

दंगली०। यह उसका पागलपन है।

दरजी०। क्यों? उसकी बातों से तो यही पाया

प्यारी मरियम की खुशी का भी पारावार न रहे!

डोनर०। (बाप से) पिता! कद्दू के कहने से मुझे एक बात याद पड़ गई अस्तु मैं आप से कुछ रोज की इजाजत चाहता हूं। आपको तो मैं अच्छी तरह से देख ही चुका हूं इसलिये अगर हुक्म हो तो मरियम से भी जाकर मिल आऊं।

बाप०। हां बेटा तुम जा सकते हो मैं खुशी से तुम्हें अपनी बीबी से मिलने की इजाजत देता हूं।

दरजी०। आप अभी से इसको बीबी बनाने लग गये परन्तु अभी तक शादी तो हुई ही नहीं!

डोनर०। नहीं हुई तो क्या हुआ! अब बहुत जल्द हो जायगी।

दरजी०। ईश्वर करे ऐसा ही हो—परन्तु अब तुम जल्दी के साथ उसके पास पहुंच कर शादी की बात-चीत पक्की कर लो।

डोनर०। क्यों!

दरजी०। क्योंकि मरियम बड़ी खूबसूरत है और तुम जानते हो कि खूबसूरत लड़कियों के कई चाहने वाले होते हैं—उसके तो खास कर बीसों हैं।

डोनर०। (मुस्कुरा कर) क्या हकीकत में?

दरजी०। भला मुझको झूठ बोलने से क्या फायदा है! उसके साथ शादी करने के लिए तो कई एक आदमी तैयार हैं मगर जब तुम्हीं कप्तान बनने वाले हो तो भला वह क्यों दूसरे से करने लगी!

दंगली०। (कुछ सोच कर) नहीं समझे तो अच्छा ही है। मैं इसी तरह अपने दिल से बातें कर रहा था। अच्छा यह तो बताओ क्या अभी तक वह मरियम को चाहता है?

दरजी०। कहते भी हो और छिपाते भी हो, मैं नहीं समझता तुम किस किस्म के आदमी हो! मुझे यक़ीन होता है कुछ दाल में काला जरूर है।

दंगली०। कैसा दाल में काला?

दरजी०। मैं क्यों बताऊं?

दंगली०। मैं ख़याल करता हूं शायद तुम डेनर को नहीं चाहते।

दरजी०। बेशक नहीं चाहता।

दंगली०। तो फिर मरियम के बारे में जो कुछ हाल तुम्हें मालूम हो मुझसे कह दो।

दरजी०। मुझे ठीक २ तो कोई हाल मालूम नहीं मगर जो कुछ मैंने सुना है उससे यही पाया जाता है कि मरियम के फेर में पड़ने से डेनर जरूर तकलीफ़ उठायेगा।

दंगली०। (उसकी इस बात से खुश होकर) मेहरबानी करके यह बात खुलासे तौर से बयान करो तो कुछ पता लगे।

दरजी०। मैंने मरियम को अक्सर बाज़ार में देखा मगर जब कभी वह दिखाई दी है उसके साथ एक लम्बा सा काली दाढ़ी और भूरी रंगत वाला आदमी

जाता है कि मारल ने कप्तान बनाने का उससे वादा कर दिया है।

दंगली०। बस सिर्फ़ इतनी ही बात पर ते वह फूल गया है।

दरज़ी०। हां घमण्ड ते उसको बेशक बहुत ज्यादा हो गया है। मुझसे बोला कि अगर कुछ रुपयों की जरूरत हो ते मैं दूं, मानें वह कहीं का शाहज़ादा हो गया हो।

दंगली०। ते तुमने इन्कार कर दिया?

दरज़ी०। इन्कार क्यों न करता! जिसको मैं कर्ज़ दिया करता था क्या उसका एहसान मैं ले सकता हूं! मेरा उसके जिम्मे कुछ बाकी था और वह मैंने तकाजा करके उसके बाप से वसूल कर लिया था उसी सबब से उसने ताना मारा है। ख़ैर अब ते वह मालदार होकर ही आया है और इसके अलावा अब वह कप्तान बनने वाला है नहीं ते इस बात का मजा मैं उसे जरूर चखा देता।

दंगली०। अभी उसके कप्तान बनने की कोई उम्मीद नहीं है।

दरज़ी०। न हो ते अच्छा ही है क्योंकि कप्तान हो जाने पर ते फिर वह किसी से बात भी न करेगा।

दंगली०। अगर हम चाहें ते कप्तान होना ते दूर रहा, वह इस दर्जे से भी नीचे गिरा दिया जाय।

दरज़ी०। मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।

दंगली०। (कुछ सोच कर) नहीं समझे तो अच्छा ही है। मैं इसी तरह अपने दिल से बातें कर रहा था। अच्छा यह तो बताओ क्या अभी तक वह मरियम को चाहता है?

दरजी०। कहते भी हो और छिपाते भी हो, मैं नहीं समझता तुम किस किस्म के आदमी हो! मुझे यकीन होता है कुछ दाल में काला जरूर है।

दंगली०। कैसा दाल में काला?

दरजी०। मैं क्यों बताऊं?

दंगली०। मैं खयाल करता हूं शायद तुम डोनर को नहीं चाहते।

दरजी०। बेशक नहीं चाहता।

दंगली०। तो फिर मरियम के बारे में जो कुछ हाल तुम्हें मालूम हो मुझसे कह दे।

दरजी०। मुझे ठीक २ तो कोई हाल मालूम नहीं मगर जो कुछ मैंने सुना है उससे यही पाया जाता है कि मरियम के फेर में पड़ने से डोनर जरूर तकलीफ उठायेगा।

दंगली०। (उसकी इस बात से खुश होकर) मेहरबानी करके यह बात खुलासे तौर से बयान करो तो कुछ पता लगे।

दरजी०। मैंने मरियम को अक्सर बाजार में देखा मगर जब कभी वह दिखाई दी है उसके साथ एक लम्बा सा काली आंखें और भूरी रंगत वाला आदमी

रहा है। मरियम उसको अपना चचेरा भाई कहा कर-
ती है।

दंगली०। तो क्या तुम्हारा खयाल है कि वह उ
से मुहब्बत रखता है?

दरजी०। मैं नहीं समझ सकता कि इक्कीस बर
का जवान आदमी सत्रह बरस की युवती के साथ
किस गर्ज से घूमा करता है।

दंगली०। मगर तुम यह भी कहते हो कि डोन
मरियम के यहां गया है।

दरजी०। हां गया तो जरूर है।

दंगली०। तो चलो हमलोग भी वहीं चलें। मरि
यम के मकान के करीब किसी होटल में बैठ कर हम
लोग शराब भी उड़ावेंगे और उसका हाल चाल भी
दरियाफ़ करेंगे।

दरजी०। चलिये, मगर खर्च तुम करना।

दंगली०। हां खर्च मैं करूंगा।

यह बात तय पातेही दोनों आदमी उधर रवाना
हुए और मरियम के मकान के पास पहुंच कर एक हो-
टल वाले से शराब की बोतल और गिलास मांग कर
वे सड़क पर आ बैठे और डोनर के बाहर निकलने का
इन्तजार करने लगे।

तीसरा बयान।

फतलूनी।

जिस गांव में मरियम रहा करती थी और जहां स समय डोनर गया हुआ है उसका नाम कतलूनी है। रन्तु इस उपन्यास के प्रेमी पाठकों को हम थोड़ी देर लिये उस छोटेसे गांवके एक साफ सुथरे मकान में ले लकर वहां की कैफियत दिखाना उचित समझते हैं।

उस मकान के एक सजे हुए कमरे में एक नौजवान ार खूबसूरत लड़की जिसके बाल भंवर के समान काले ार बड़ी २ आंखें थीं एक खिड़की में दीवार का सहारा लगाये बैठी थी और उससे लगभग तीस गज के फासले पर एक नौजवान आदमी जिसकी उम्र इक्कीस या बाईस वर्ष के लगभग होगी रंज में डूबा हुआ अपनी कोहनी का सहारा लगाये एक कुर्सी पर बैठा उस युवति की तरफ देख रहा था।

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहने के बाद उस नौजवान ने कहा, "देखो मरियम! बड़ा दिन भी अब करीब आ रहा है, क्या शादी के लिये यह मौका अच्छा न होगा!"

मरियम०। फरनन्द! इस बारे में बीसों ही मर्तबा मैं तुम्हें जवाब दे चुकी हूं मगर तुम पूछने से बाज नहीं आते! मैं सच कहती हूं अगर तुमने फिर कभी यह जिक्र छेड़ा तो तुम्हारे हक में अच्छा न होगा!

फरनंद०। (गिड़गिड़ाकर) तो मेहरबानी करके एक दफा फिर बतादो जिसमें मुझे यकीन तो हो जाय। बस एक दफा साफ २ कहदो कि जिस बात की मंजूरी तुम्हारी माँ दे चुकी है क्या उसके करने से तुम इन्कार करती हो? परन्तु साथही इसके इस बातपर भी अच्छी तरह गैार कर लेना कि मुझको दस बरस आपकी ताबेदारी करते हो गये और अब आपके इस आखिरी जवाब से मेरी जिन्दगी और मैात का फैसला होना है।

मरियम०। मगर फरनन्द मैंने तो आज तक तुम्हें कभी किसी बातका भरोसा नहीं दिया! मैं हमेशा तुम से यही कहती रही हूं कि मैं भाइयों की तरह तुम से मुहब्बत रखती हूं, इसलिये बहनों की मुहब्बत के अलावा मुझसे और किसी बात की आशा मत रखना क्यों कि मैं अपना दिल दूसरे शख्स को दे चुकी हूं।

फरनन्द०। मैं इस बात से इन्कार नहीं करता मगर फिर भी मैं यह पूछता हूं कि आखिर इस रुखाई का सबब क्या है? क्या आपके खान्दानसे मेरा खान्दान कुछ नीचा है?

मरियम०। खान्दान के ऊंचे नीचे होने का तो मुझे जरा भी खयाल नहीं है, मगर खयाल तो करो मैं तुमसे शादी करने पर क्योंकर तैयार हो जाऊँ! जब तुम सिपाही बन कर फैाजी नैाकरी करने लग गये तो भला बताओतो सही तुम क्या सलूक मेरे साथ कर सकते हो! कोई नहीं कह सकता किस वक्त तुम्हें जङ्ग पर जाने

हुक्म मिल जाय ! फिर उस वक्त तुम इन्कार तो कर सकते नहीं ! तुम्हें झख मार कर जानाही पड़ेगा और मैं दरदर भीख मांगती फिरूंगी, क्योंकि जैसे तुम कंगाल हो वैसीही मैं हूं। मेरे बाप ने जो कुछ मरते समय जमा पूंजी छोड़ी थी वह मेरी मां के पास रही और जो खा पी कर उससे बच रही वह मेरे हिस्से पड़ी। तुम जानते ही हो कि मेरी मां को भी मरे एक बरस बीत गया है अस्तु जो कुछ उसकी जमा पूंजी मेरे हाथ लगी थी वह सब साल भर में मैंने खा डाली, अब सिवाय इस टूटी फूटी झोपड़ी के मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है। अब तुम्हीं इन्साफ करो कि ऐसी हालत में तुम्हारे साथ शादी करना उचित है या नहीं !

फरनन्द०। मरियम ! तुम चाहे मुझे गरीब समझ कर मुझसे घृणा करती होओ परन्तु मैं तो इस हालत में भी तुम्हें एक अमीर खान्दान की लड़की समझता हूं ! मुझे पूरी तरह पर विश्वास है कि अगर तुम मेरे साथ शादी करने पर राजी हो जाओगी तो हम लोग जरूर खुश रहेंगे।

मरियम०। (सर हिला कर) नहीं फरनन्द, यह नहीं हो सकता ! तुमको इतने ही पर सब्र करना चाहिये कि मैं तुम्हारे साथ बहिन की तरह हमेशा मुहब्बत करूंगी।

फरनन्द०। ऐसा न कहो मरियम, नहीं तो मेरा दिल टुकड़े २ हो जायगा ! मैं सच कहता हूं अगर तुम मेरे

हुक्म मिल जाय! फिर उस वक्त तुम इन्कार ते कर सकते नहीं! तुम्हें झख मार कर जानाही पड़ेगा ग्रौर मैं दर दर भीख मांगती फिरूंगी, क्योंकि जैसे तुम कंगाल हे वैसीही मैं हूं। मेरे बाप ने जो कुछ मरते समय जमा पूंजी छोड़ी थी वह मेरी मां के पास रही ग्रौर जो खा पी कर उससे बच रही वह मेरे हिस्से पड़ी। तुम जानते ही हो कि मेरी मां को भी मरे एक बरस बीत गया है ग्रस्तु जो कुछ उसकी जमा पूंजी मेरे हाथ लगी थी वह सब साल भर में मैंने खा डाली, ग्रब सिवाय इस टूटी फूटी झोपड़ी के मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है। ग्रब तुम्हीं इन्साफ करो कि ऐसी हालत में तुम्हारे साथ शादी करना उचित है या नहीं!

फरनन्द०। मरियम! तुम चाहे मुझे गरीब समझ कर मुझसे घृणा करती होग्रो परन्तु मैं तो इस हालत में भी तुम्हें एक ग्रमीर खान्दान की लड़की समझता हूं! मुझे पूरी तरह पर विश्वास है कि ग्रगर तुम मेरे साथ शादी करने पर राजी हो जाग्रोगी तो हम लोग जरूर सुख रहेंगे।

मरियम०। (सर हिला कर) नहीं फरनन्द, यह नहीं हो सकता! तुमको इतने ही पर सब्र करना चाहिये कि मैं तुम्हारे साथ बहिन की तरह हमेशा मुहब्बत करूंगी।

फरनन्द०। ऐसा न कहो मरियम, नहीं तो मेरा दिल टुकड़े २ हो जायगा! मैं सच कहता हूं ग्रगर तुम मेरे

फरनंद०। (गिड़गिड़ाकर) तो मेहरबानी करके एक दफा फिर बतादो जिसमें मुझे यकीन तो हो जाय। बस एक दफा साफ २ कहदो कि जिस बात की मंजूरी तुम्हारी माँ दे चुकी है क्या उसके करने से तुम इन्कार करती हो! परन्तु साथही इसके इस बातपर भी अच्छी तरह गौर कर लेना कि मुझको दस बरस आपकी ताबेदारी करते हो गये और अब आपके इस आखिरी जवाब से मेरी जिन्दगी और मौत का फैसला होना है।

मरियम०। मगर फरनन्द मैंने तो आज तक तुम्हें कभी किसी बातका भरोसा नहीं दिया! मैं हमेशा तुम से यही कहती रही हूं कि मैं भाइयों की तरह तुम से मुहब्बत रखती हूं, इसलिये बहनों की मुहब्बत के अलावा मुझसे और किसी बात की आशा मत रखना क्यों कि मैं अपना दिल दूसरे शख्स को दे चुकी हूं।

फरनन्द०। मैं इस बात से इन्कार नहीं करता मगर फिर भी मैं यह पूछता हूं कि आखिर इस रुखाई का सबब क्या है? क्या आपके खान्दानसे मेरा खान्दान कुछ नीचा है?

मरियम०। खान्दान के ऊंचे नीचे होने का तो मुझे जरा भी खयाल नहीं है, मगर खयाल तो करो मैं तुमसे शादी करने पर क्योंकर तैयार हो जाऊँ! जब तुम सिपाही बन कर फौजी नौकरी करने लग गये तो भला बताओ तो सही तुम क्या सलूक मेरे साथ कर सकते हो! कोई नहीं कह सकता किस वक्त तुम्हें जङ्ग पर जाने का

हुक्म मिल जाय! फिर उस वक्त तुम इन्कार तो कर सकते नहीं! तुम्हें झख मार कर जानाही पड़ेगा और मैं दर दर भीख मांगती फिरूं गी, क्योंकि जैसे तुम कंगाल हो वैसीही मैं हूं। मेरे बाप ने जो कुछ मरते समय जमा पूँजी छोड़ी थी वह मेरी मां के पास रही और जो खा पी कर उससे बच रही वह मेरे हिस्से पड़ी। तुम जानते ही हो कि मेरी मां को भी मरे एक बरस बीत गया है अस्तु जो कुछ उसकी जमा पूंजी मेरे हाथ लगी थी वह सब साल भर में मैंने खा डाली, अब सिवाय इस टूटी फूटी झोपड़ी के मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है। अब तुम्हीं इन्साफ करो कि ऐसी हालत में तुम्हारे साथ शादी करना उचित है या नहीं!

फरनन्द०। मरियम! तुम चाहे मुझे गरीब समझ कर मुझसे घृणा करती होओ परन्तु मैं तो इस हालत में भी तुम्हें एक अमीर खान्दान की लड़की समझता हूं! मुझे पूरी तरह पर विश्वास है कि अगर तुम मेरे साथ शादी करने पर राजी हो जाओगी तो हम लोग जरूर खुश रहेंगे।

मरियम०। (सर हिला कर) नहीं फरनन्द, यह नहीं हो सकता! तुमको इतने ही पर सब्र करना चाहिये कि मैं तुम्हारे साथ बहिन की तरह हमेशा मुहब्बत करूंगी।

फरनन्द०। ऐसा न कहो मरियम, नहीं तो मेरा दिल टुकड़े २ हो जायगा! मैं सच कहता हूं अगर तुम मेरे

साथ शादी कर लोगी तो तुम्हें कभी कोई तकलीफ न उठानी पड़ेगी। मैं नौकरी छोड़कर मछली पकड़ने का कारखाना भी कर सकता हूं, किसी कारखाने में मुंशी की नौकरी करके पेट पाल सकता हूं और वक्त पर खुद सौदागरी भी कर सकता हूं।

मरियम०। तुम इन कामों में से कोई काम नहीं कर सकते क्योंकि तुम ऐसी फौज में भर्ती हुए हो जहां से न तो तुम्हें छुट्टी ही मिल सकती है और न तुम्हारी नौकरी ही छूट सकती है अस्तु कोई नहीं कह सकता कि कब हुक्म पहुंचे और तुम लड़ाई पर भेज दिये जाओ। इसलिये मेरी सलाह मानो तो तुम्हें मुझसे सिर्फ पाक मुहब्बत रखनी चाहिये क्योंकि इससे ज्यादा और किसी बात की मैं तुम्हें आशा नहीं दिला सकती।

फरनन्द०। अच्छा मरियम, यदि तुम्हें फौजी नौकरी से ऐसी ही नफरत है तो मैं अभी इस वर्दी को उतार कर फेंक देता हूं। अब मैं चमकीली टोपी, धारीदार कमीज और नीली जाकेट ही पहनूंगा। फिर तो तुम मुझसे मुहब्बत करोगी!

मरियम०। (ताज्जुब से उसकी तरफ देखकर) मैं तुम्हारा मतलब ही नहीं समझी!

फरनन्द०। मेरा मतलब यह है कि जब तुम्हारा दिल ऐसे ही आदमी पर लट्टू हो रहा है जो इस किस्म के कपड़े पहना करता है तो मैं भी वैसे ही पहनने लग जाऊं मगर मरियम यह भी हो सकता है कि जिस आद-

मी की मुहब्बत में तुम बावली हो रही हो वह बात का सच्चा न निकले—और अभी तो उसका कहना ही क्या है क्योंकि समुद्र का मामला ठहरा !

मरियम०। (क्रोध में भर कर) फारनन्द ! मैं तो समझती थी कि तुम दिल के साफ होगे मगर हकीकत में तुम बड़े कपटी आदमी निकले! देखो जो आदमी किसी का बुरा चेतता है उसपर जरूर खुदा की मार पड़ती है! मैं जरूर उस आदमी को चाहती हूं जिसकी तरफ तुमने इशारा किया है और अगर वह न आया तो यह मैं कभी न कहूंगी कि उसने मुझको धोखा दिया बल्कि मैं यही समझूंगी कि मुझी से मुहब्बत करता वह मर गया है। तुम्हारी बातों से मुझे विश्वास होता है कि तुम जरूर उससे इस बात का बदला लोगे क्योंकि मैं तुमसे मुहब्बत नहीं करती! परन्तु फरनन्द ! मेरी इस बात का खयाल रखना कि अगर तुम छुरी या तलवार से उसकी जान लेने का इरादा करोगे तो उसमें कोई फायदा न निकलेगा क्योंकि अगर तुम मारे गये तब तो इस बखेड़े से चले ही जाओगे परन्तु यदि तुम उसको मार भी डालोगे तब भी मैं तुम्हारे साथ कभी मुहब्बत न करूंगी ! तुम यह न समझना कि अपने प्यारे के मारे जाने पर मैं तुमसे शादी कर लूंगी ! कभी नहीं, हरगिज नहीं !! तुम को सिर्फ इतने ही में खुश रहना चाहिये कि मैं तुम्हारे साथ बहन का सा बर्ताव तो करूंगी! तुमने तो फरनन्द आज मेरे दिलके टुकड़े २ कर डाले ! क्या तुम्हें ऐसा

बातें कहना मुनासिब है कि समुद्र का मामला है, क्या हो, क्या न हो!

फरनन्द उसकी सब बातें नफरत के साथ सुनता रहा अंत में उठ कर खड़ा हो गया और बोला, "तो क्या सचमुच यही तुम्हारा इरादा है?"

मरियम०। मुझे डोनर से मुहब्बत है और सिवाय उसके मैं किसी के साथ शादी नहीं कर सकती।

फरनन्द०। तो तुम हमेशा उसीसे मुहब्बत रक्खोगी!

मरियम०। बेशक जब तक मेरे दम में दम है मैं उसी के साथ मुहब्बत करूंगी।

यह बात सुनते ही फरनन्द के बदन में सिर से पैर तक आग लग गई और उसने दांत पीस कर कहा, "परन्तु यदि वह मर गया तो!"

मरियम०। (क्रोध में भर कर) मर गया तो मैं भी मर जाऊंगी!

फरनन्द०। और अगर जीते रहने पर भी वह तुम्हें भूल जाय तो!

इतनेही में बाहर से आवाज आई जिससे मरियम यकायक चौंक पड़ी। 'मरियम! प्यारी मरियम!'

मरियम०। (खुशी से उछल कर) देखो उसने मुझे नहीं भुलाया! वह आ पहुंचा!!

यह कहती हुई वह दर्वाजे की तरफ झपटी और अपने प्यारे को देख कर बोली- "प्यारे डोनर! तुम आ गए?"

उस समय फरनन्द जर्द होकर कांपता हुआ अपनी कुर्सी पर जा गिरा और डोनर तथा मरियम खुशी में भर कर एक दूसरे के साथ लपट गए। जब कुछ देर के बाद वे अलग हुए तो दो कुर्सियों पर बैठ कर आपस में बातें करने लगे। यकायक उस समय जब डोनर ने फरनन्द को एक तरफ रंज में मुंह लटकाये बैठे देखा तो वह घबड़ा कर बोला, "ओह! बेअदबी माफ हो! मैं नहीं जानता था कि यहां कोई और शख्स भी बैठा है!" फिर मरियम की तरफ देख कर, "ये कौन महाशय हैं!"

मरियम०। यह वह शख्स है जो अब तुम्हारा दोस्त होगा क्योंकि यह मेरा चचेरा भाई है। इसका नाम फरनन्द है और तुम्हारे बाद दुनियां में यही मुझको सब से प्यारा है।

यह बात सुनते ही डोनर ने खुशी के साथ अपना हाथ फरनन्द की तरफ बढ़ा दिया मगर फरनन्द चुपचाप जहां का तहां बैठा रहा। उसने हाथ पकड़ना तो दूर रहा जबान से भी कोई शब्द न निकाला। इस बात से डोनर को बड़ा रंज हुआ और उसने मरियम की तरफ देख कर कहा, "मैं जब यहां आया था तो मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि यहां एक दुश्मन से मैं मिलने वाला हूं।"

मरियम०। (फरनन्द की तरफ क्रोध से देखकर) दुश्मन कैसा! मेरे घर में दुश्मन कहां से आया! अगर

बातें कहना मुनासिब है कि समुद्र का मामला है, क्या हो, क्या न हो!

फरनन्द उसकी सब बातें नफरत के साथ सुनता रहा अंत में उठ कर खड़ा हो गया और बोला, "तो क्या सचमुच यही तुम्हारा इरादा है?"

मरियम०। मुझे डोनर से मुहब्बत है और सिवाय उसके मैं किसी के साथ शादी नहीं कर सकती।

फरनन्द०। तो तुम हमेशा उसीसे मुहब्बत रक्खोगी?

मरियम०। बेशक जब तक मेरे दम में दम है मैं उसी के साथ मुहब्बत करूंगी।

यह बात सुनते ही फरनन्द के बदन में सिर से पैर तक आग लग गई और उसने दांत पीस कर कहा, "परन्तु यदि वह मर गया तो!"

मरियम०। (क्रोध में भर कर) मर गया तो मैं भी मर जाऊंगी!

फरनन्द०। और अगर जीते रहने पर भी वह तुम्हें भूल जाय तो?

इतनेही में बाहर से आवाज आई जिससे मरियम यकायक चौंक पड़ी। 'मरियम! प्यारी मरियम!'

मरियम०। (खुशी से उछल कर) देखो उसने मुझे नहीं भुलाया! वह आ पहुंचा!!

यह कहती हुई वह दर्वाजे की तरफ झपटी और अपने प्यारे को देख कर बोली- "प्यारे आ गए?"

पास जा पहुंचा।

कदरू०। क्यों दोस्त, क्या हकीकत में इस वक्त तुम ऐसी जल्दी में हो कि अपने दोस्तों से बात तक नहीं कर सकते!

दङ्गली०। और खास कर ऐसे मौके पर जब उनके सामने शराब की बोतल खुली पड़ी हो!

मगर फरनन्द उनकी तरफ पागलों की तरह देखता रहा और मुंह से कुछ न बोला।

दंगली०। (कदरू को हाथ से धक्का देकर) मालूम होता है इस वक्त यह अपने आपे में नहीं है। क्या सचमुच हमारी उम्मीद के खिलाफ डोनर ने पाला जीत लिया!

कदरू०। ठहरिये हम अभी उसके बारे में इससे दरियाफ़्त कर लेते हैं। (फरनन्द से) क्यों फरनन्द! क्या हकीकत में तुम इस समय जबान बन्द ही रक्खोगे?

फरनन्द ने अपने चेहरे पर से पसीना पोंछा और फिर एक कुर्सी पर बैठ कर बोला, "तुमने तो मुझे नहीं बुलाया, मैं खुद ही आ गया हूं।"

कदरू०। (हँसकर) क्या खूब! तुम पागलों की तरह भागे जा रहे थे। मैंने देखा कहीं ऐसा न हो तुम समुद्र में जाकर कूद पड़ो इसलिये तुम्हें बुला लिया। कहिये क्या हालचाल है?

इस बात पर फरनन्द ने एक ऊंची सांस लेकर अपने दोनों हाथों से माथा पकड़ लिया मगर मुंह से

मुझे मालूम होता कि यहां तुम्हारा कोई दुश्मन है तो मैं इस घर को हमेशा के लिये छोड़ कर तुम्हारे साथ चली चलती !"

इसके बाद फिर उसने फरनन्द की तरफ खूब तेज नजर से देखा और तब डोनर से बोली, "तुम्हें जरूर धोखा हुआ है क्योंकि मेरे देखने में तो यहां कोई दुश्मन दिखाई नहीं देता !. सिवाय फरनन्द के यहां कोई नहीं है और वह तुम्हारा हाथ मेहरबान दोस्त की तरह पकड़ लेगा।"

यह कहते हुए मरियम ने फिर फरनन्द की तरफ देखा। चाहे उस समय फरनन्द के बदन में सिर से पैर तक आग लगी हुई थी मगर फिर भी मरियम की आज्ञा उससे टाली न गई। उसने धीरे से आगे बढ़ कर डोनर का हाथ पकड़ लिया और फिर जल्दी के साथ मकान से बाहर निकल गया। मगर बाहर निकलते ही उसने अपने बाल नोच कर पागलों की तरह ऊपर की तरफ हाथ उठा कर कहा, "हे ईश्वर! तू ही अगर मुझको इस आदमी के हाथों से बचावे तो मैं बच सकता हूं, नहीं तो मेरे किये तो कुछ नहीं हो सकता !"

एक आवाज०। फरनन्द! कहां जाते हो ? इधर आओ।

यह आवाज कानों में पड़ते ही फरनन्द चौंक कर चारों तरफ देखने लगा और फिर होटल में बाहर जब उसने कदरू और दङ्गली को बैठे देखा तो वह उनके

फरनन्द०। (चिढ़ कर) ते फिर ?

दंगली०। फिर क्या ! मरियम किसी की नौकर ते है नहीं ! वह जिसके साथ चाहे मुहब्बत कर सकती है।

फदरू०। अगर तुम्हारा यह मतलब है ते यह और बात है—मेरा ते खयाल था कि फरनन्द सख़्त बदला लेने वाला आदमी है और जे आदमी बदला लेने पर तैयार हे जाय उसके कोई रोक ही नहीं सकता।

इस बात पर फरनन्द हँसा और बोला, "जे सच्चा आशिक होगा उसका बदला लेने के लिये कभी हाथ ही न उठेगा।"

दंगली०। (फरनन्द पर तरस खाते हुए) इस बेचारे के उम्मीद ही नहीं थी कि डोनर इतनी जल्दी लैाट आवेगा। इसका ते खयाल था कि शायद यह डूब ही गया,होगा !

फदरू०। (गिलास चढ़ाकर) अजी खाली फरनन्द ही यह नहीं चाहता कि डोनर मर जाय बल्कि उसका बुरा चेतने वाले और भी कई आदमी हैं ! क्यों दंगली ! है कि नहीं ?

दंगली०। तुम्हारा कहना ठीक है। तभी ते मेरा खयाल है कि वह जरूर तकलीफ उठावेगा।

फदरू०। (फरनन्द के लिये गिलास भर कर) अच्छा जी, कोई परवाह नहीं ! उसके खुशी से मरियम के साथ शादी करने दे। आखिर शादी के लिये ते वह आया ही है।

कुछ न कहा।

फदरू०। (हँसकर) क्यों जी, आज तुम बड़े फिक्र में दिखाई दे रहे हो, इसका सबब क्या है?

दंगली०। मैंने तो इनको आज से पहिले कभी रंज में देखा ही नहीं, खुदा जाने क्या मामला है! मगर फदरू तुम फजूल क्यों हँस रहे हो!

फदरू०। खुदा की कसम, मैं हंसी नहीं करता, तुम खुद ही देखलो, वह कैसा कांप रहा है! फरनन्द इधर देखो और हम लोगों की बातों का जवाब दो क्या यह मुनासिब है कि तुम्हारे दोस्त तुम से हाल दरियाफ़ करें और तुम उनकी तरफ देखो तक नहीं!

फरनन्द०। मैं सुस्त नहीं हूं और न मुझे किसी बात का रंज ही है।

फदरू०। (दंगली की तरफ आंख का इशारा करके) दंगली! तुम भी बड़े मसखरे हो। फरनन्द जैसा नेक और बहादुर आदमी तो हमें दूसरा कोई दिखाई ही नहीं देता और न मारसलीज भर में इसके समान कोई माहीगीर ही है। यह एक मरियम नामक खूबसूरत लड़की पर आशिक है मगर वह लड़की उस जवान पर आशिक है जो फरन जहाज का मेट है। मैं समझता हूं आज उस जवान के आने के सबब से ही यह रंज में है।

दंगली०। क्यों इसका सबब क्या है?

फदरू०। सबब यही है कि यह बेचारा अपनी जगह से मौक़ूफ हो गया।

देखो ! मरियम के मकान के बाहर क्या दिखाई दे
है ! फरनन्द ! तुम जरा ध्यान से देखो क्योंकि हमले
गों से तुम कुछ होश में हो। देखो अगर शराब के कार
मुझे धोखा नहीं होता तो जरूर वहां दो आदमी
दिखाई देते हैं। ओहो ! ये दोनों आशिक माशूक
तो हैं जो हाथ में हाथ डाले इधर ही चले आ रहे
वाह ! क्या मजेदारी से ये गले गले मिल रहे हैं !

उस समय फरनन्द को जैसी तकलीफ हो रही
वह दंगली खूब समझता था अस्तु उसने कहा, "फ
नन्द ! तुम उन्हें जानते हो ?"

फरनन्द०। हां, ये डोनर और मरियम हैं।

कदरू०। (शराब के नशे में डोनर की तरफ दो
हाथ उठा कर) ओह ! अब मैंने पहिचाना ! अच्
प्यारे डोनर इधर आओ जिसमें हम लोग मालूम
कि शादी कब की पक्की हुई है। फरनन्द तो ऐसा जि
है कि हमें कुछ बताता ही नहीं।

दंगली०। (कदरू को रोक कर जो डोनर की तर
बढ़ने की कोशिश कर रहा था मगर नशे के कारण उस
खड़ा नहीं हुआ जाता था) कदरू चुप रहो ! अपन
जबान को रोक कर चुपचाप तमाशा देखो। क्या तु
नहीं देखते कि फरनन्द कैसा चुपचाप बैठा हुआ है

यह बात फरनन्द के जिगर को गोली की तरह पा
करती हुई निकल गई और वह डोनर को मारने के इ
रादे से फौरन अपनी जगह पर से उठ कर खड़ा होगय

इस वक्त दंगली फरनन्द के चेहरे की तरफ गौर के साथ देख रहा था जिसके दिल पर कदरू के शब्दों ने ऐसा असर किया था मानों उसके जिगर पर मूँग दले जाते हों।

दंगली०। क्यों फरनन्द! शादी कब होने वाली है?

फरनन्द०। शादी का दिन तो अभी निश्चय नहीं हुआ।

कदरू०। अजी हो जायगी, शादी होने में कुछ संदेह थोड़ा ही है! जिस तरह उसके कप्तान बनने में कोई शक नहीं है उसी तरह उसकी शादी होने में भी कोई संदेह नहीं है।

फरनन्द०। (क्रोध के साथ) क्यों नहीं?

फरनन्द की इस क्रोध भरी आखिरी बात को सुन कर दंगली ने समझा कि फरनन्द जरूर कदरू को मार बैठेगा मगर खैर इतनी ही हुई कि शराब के नशे में फिर दोनों ही अपनी अपनी बात को भूल गये।

कदरू०। (गिलास भर कर) भाई मैं तो कप्तान डोनर और मरियम की शादी की खुशी में एक गिलास जरूर पीऊंगा।

यह कह कर वह गटगट करता हुआ पूरा गिलास चढ़ा गया और फिर एक गिलास भर कर उसने फरनन्द को भी पीने के वास्ते कहा मगर फरनन्द ने क्रोध में भर कर गिलास जमीन पर दे मारा।

कदरू०। (लड़खड़ाते हुए) अहा! जरा उधर तो

मेरी नजर तुम लोगों पर पड़ी ही नहीं। मैं खयाल करता हूं कि घमंड से बढ़ कर खुशी इन्सान को अन्धा बना देती है

कदरू०। वाह! यह तो आपने अच्छा जवाब दिया! और मैडम डोनर मेरा सलाम कबूल हो।

मरियम०। (खफा होकर) यह मेरा नाम नहीं है। हमारे मुल्क का दस्तूर है कि जबतक शादी न हो जाय किसी औरत को उसके भावी पति की बीबी कह कर पुकारना मानों उसका अपमान करना है।

डोनर। (बात तय करने के ढङ्ग से) हमारा लायक पड़ोसी इस मुल्क के रेवाज को नहीं जानता इसलिये मरियम उसकी गलती पर कोई खयाल मत करो।

दंगली०। (दोनों को सलाम कर के) अगर ऐसा कह ही दिया तो क्या हुआ, शादी भी तो आज कल में होने ही वाली है।

डोनर०। हां यह भी सही है। आज मेरे बाप के सामने सब बातें तय हो जायंगी। मैं समझता हूं कल या ज्यादा से ज्यादा परसों तक शादी हो जायगी। दङ्गली! तुम भी जरूर आना और हमारे लायक पड़ोसी कदरू को भी जरूर आना चाहिये।

कदरू०। (हँसी से) और क्या फरनन्द को न्योता न दीजियेगा?

डोनर०। मेरी जोरू का भाई मेरा भाई है, अगर वह ऐसे मौके पर न आयगा तो हमें बड़ा अफसोस

मगर ठीक उसी समय मरियम ने (जो उसके पास आ पहुंची थी) हँसते हुए चेहरे के साथ फरनन्द की तरफ देखा जिससे फरनन्द की हिम्मत टूट गई क्योंकि उसे याद पड़ गया कि मरियम कहती थी अगर डोनर मर गया तो मैं भी मर जाऊंगी । यह एक ऐसी बात थी जिसके खयाल में आते ही उसकी कमर टूट गई और वह कमजोर होकर अपनी कुर्सी पर फिर गिर पड़ा।

दंगली०। (मन ही मन बड़बड़ाकर) मैं इन वेवकूफों से कुछ फायदा नहीं उठा सकता और न इन पागलों के पास बैठने से मेरी इज्जत ही रह सकती है। मरियम की आंखें तो ऐसी कटीली हैं जिनसे मेरा जिगर चलनी हो गया है मगर उसका हत्थे चढ़ना जरा टेढ़ी खीर है क्योंकि डोनर का सितारा इस समय खूब बलंदी पर है । वह जरूर कप्तान भी हो जायगा और उसकी मरियम के साथ शादी भी हो जायगी। अस्तु बेहतर यही है कि अब मैं उसका पीछा न करूं,नहीं तो वह जरूर मुझ पर ताने मारेगा।

कदरू० । (डोनर और मरियम को अपने करीब आते देख कुर्सी पर से जरा उठ कर और मेज पर हाथ मार कर) डोनर ! क्या तुम्हें अपने दोस्त नजर नहीं आते ? या तुम्हें हम लोगों से बातचीत करने में शर्म मालूम होती है ?

डोनर०। नहीं दोस्त मैंने घमंड से ऐसा नहीं किया बल्कि वास्तव में मैं इस समय ऐसी खुशी में हूं कि

मेरी नजर तुम लोगों पर पड़ी ही नहीं। मैं खयाल करता हूं कि घमंड से बढ़ कर खुशी इन्सान को अन्धा बना देती है

कदरू०। वाह! यह तो आपने अच्छा जवाब दिया! खैर मैडम डोनर मेरा सलाम कबूल हो।

मरियम०। (खफा होकर) यह मेरा नाम नहीं है। हमारे मुल्क का दस्तूर है कि जबतक शादी न हो जाय किसी औरत को उसके भावी पति की बीवी कह कर पुकारना मानों उसका अपमान करना है।

डोनर। (बात तय करने के ढङ्ग से) हमारा लायक पड़ोसी इस मुल्क के रेवाज को नहीं जानता इसलिये मरियम उसकी गलती पर कोई खयाल मत करो।

दंगली०। (दोनों को सलाम कर के) अगर ऐसा कह ही दिया तो क्या हुआ, शादी भी तो आज कल में होने ही वाली है।

डोनर०। हां यह भी सही है। आज मेरे बाप के सामने सब बातें तय हो जायंगी। मैं समझता हूं कल या ज्यादा से ज्यादा परसों तक शादी हो जायगी। दङ्गली! तुम भी जरूर आना और हमारे लायक पड़ोसी कदरू को भी जरूर आना चाहिये।

कदरू०। (हँसी से) और क्या फरनन्द को न्योता न दीजियेगा?

डोनर०। मेरी जोरू का भाई मेरा भाई है, अगर वह ऐसे मौके पर न आयगा तो हमें बड़ा अफसोस

मगर ठीक उसी समय मरियम ने (जो उसके पास आ पहुंची थी) हँसते हुए चेहरे के साथ फरनन्द की तरफ देखा जिससे फरनन्द की हिम्मत टूट गई क्योंकि उसे याद पड़ गया कि मरियम कहती थी अगर डोनर मर गया तो मैं भी मर जाऊंगी । यह एक ऐसी बात थी जिसके खयाल में आते ही उसकी कमर टूट गई और वह कमजोर होकर अपनी कुर्सी पर फिर गिर पड़ा।

दंगली०। (मन ही मन बड़बड़ाकर) मैं इन बेवकूफों से कुछ फायदा नहीं उठा सकता और न इन पागलों के पास बैठने से मेरी इज्जत ही रह सकती है। मरियम की आंखें तो ऐसी कटीली हैं जिनसे मेरा जिगर चलनी हो गया है मगर उसका हत्थे चढ़ना जरा टेढ़ी खीर है क्योंकि डोनर का सितारा इस समय खूब बलंदी पर है । वह जरूर कप्तान भी हो जायगा और उसकी मरियम के साथ शादी भी हो जायगी। अस्तु बेहतर यही है कि अब मैं उसका पीछा न करूं,नहीं तो वह जरूर मुझ पर ताने मारेगा।

कदरू० । (डोनर और मरियम को अपने करीब आते देख कुर्सी पर से जरा उठ कर और मेज पर हाथ मार कर) डोनर ! क्या तुम्हें अपने दोस्त नजर नहीं

दंगली०। क्या वहां कुछ काम है ?

डोनर०। मेरा तो कोई काम नहीं, सिर्फ बेचारे कप्तान की आज्ञा पालन करनी है। अब तो तुम समझ ही गये होगे कि मेरा जाना वहां जरूरी है या नहीं। मगर वहां तक जाने आने में जितने दिन लगें सो लगें, उसके अलावा तो मैं एक दिन भी बर्बाद न करूंगा।

दंगली०। हां जाना तो जरूर मुनासिब है। (फिर मनमें धीरे २) एलबा के बादशाह ने जो चिट्ठी इसे दी थी जरूर यह उसी को पहुंचाने पैरिस जा रहा है। अच्छा दोस्त डोनर, कोई परवाह नहीं। अभी तुम जहाज के कप्तान नहीं मुकर्रर हुए !

जब तक वह उपरोक्त बात मन में कहता रहा डोनर और मरियम कुछ आगे बढ़ गये थे बस्तु उसने उनकी तरफ देख कर ऊंची आवाज से कहा, "सफर मुबारक !"

डोनर०। तुम्हें धन्यवाद है।

यह कहता हुआ वह मरियम के हाथ में हाथ डाले दूर निकल गया॥

होंगा !

फरनन्द ने जवाब देने के लिये मुंह खोला म
उसकी बात उसके ओठों तक ही रह गई और जबा
उसके एक शब्द भी न निकला।

दङ्गली०। आज बातचीत और कल या परसों
शादी ! कप्तान तुम बड़ी जल्दी करते हो !

डेनर०। (हंस कर) मुझको मजबूर हो कर तुम
वही बात कहनी पड़ती है जो अभी मरियम ने कह
से कही थी। मुझे ऐसा खिताब न दो जो मेरा नहीं है
इससे मैं अपना अपमान समझता हूं।

दंगली०। खैर माफ कीजिये, मुझसे गलती हुई
मैंने सिर्फ यह कहा है कि तुम जल्दी करते हो क्योंि
जहाज फिर लगभग तीन महीने के बाद सफर के लि
तैयार हो जायगा।

डेनर०। दंगली ! हम खुश होने के लिये हमेश
जल्दी किया करते हैं क्योंकि जब हम एक मुद्दत
तकलीफ उठा रहे हैं तो फिर खुशी का मौका करी
देख कर किस तरह सब्र आ सकता है ! मगर तुम स
जानना मैं खुदगर्जी से जल्दी नहीं कर रहा बल्कि
बहुत जल्द मैं पैरिस की तरफ जाने वाला हूं।

दंगली०। पैरिस ! वाह ! तब तो तुम बड़े खुश-
किस्मत हो ! मैं खयाल करता हूं शायद पहिली ही दफे
तुम पैरिस जा रहे हो !

डेनर०। हां।

है ही नहीं और न मैं मरियम पर आशिक ही हूं-हां यह मैं जरूर कह सकता हूं कि यदि तुम चाहो तो सब कुछ कर सकते हो।

फरनन्द०। चाहने को तो सब कुछ चाहा मगर–

दंगली०। क्या चाहा?

फरनन्द०। मेरा इरादा था कि डोनर को मार ही डालूं मगर मरियम कहती है अगर वह मर जायगा तो मैं भी मर जाऊंगी।

दंगली०। अजी यह तो औरतों की बातें हैं। हाथी के दांत खाने के और होते हैं और दिखाने के और।

फरनन्द०। तुम मरियम को नहीं जानते, वह जो कुछ कहती है सो कर भी डालती है!

दंगली०। बेवकूफ! मरती है तो मरे! उससे हमारा क्या नुकसान होगा? मगर यह जरूर होना चाहिये कि डोनर कप्तान न बन सके!

फरनन्द०। मगर मरियम के मरने से पहिले मैं अपनी जान जरूर दे दूंगा।

कदरू०। (नशे में) मुहब्बत इसी का तो नाम है! अगर इसका नाम मुहब्बत नहीं तो मैं नहीं समझता कि वह क्या बला है!

दंगली०। फरनन्द तुम नेक आदमी मालूम होते हो, चाहे तुम मुझे कुछ ही कहो मगर मैं इस काम में जरूर तुम्हारी मदद करूंगा।

कदरू०। तुम कैसे मदद दे सकते हो!

मौत के उनको कोई जुदा कर ही नहीं सकता!

कदरू०। कैसी सीधी बातें करते हो! दंगली बड़ा अक्लमंद और तजर्बेकार आदमी है, यह तुम्हें तुम्हारी गलती साबित कर देगा! (दंगली से) दंगली! जवाब क्यों नहीं देते? देखो तुम्हारे बदले में मैंने जवाब दे दिया है। कह दो डोनर के मरने की कोई जरूरत नहीं है, उसके मरने से उलटा काम में हर्ज पड़ेगा। वह बहुत अच्छा आदमी है, मैं उसको चाहता हूं।

इस बात से बेसब्र हो कर फरनन्द उठ बैठा।

दंगली०। (उसको पकड़ कर) अजी इसकी बातों का क्या खयाल करते हो! यह तो पागल हो रहा है! देखो जुदाई भी मौत से कम नहीं होती। अगर डोनर किसी तरह से कैद करा दिया जाय तब भी तुम काम याब हो सकते हो।

कदरू०। (उसकी बात गौर से सुन कर क्योंकि अभी तक उसमें कुछ होश था) तो क्या फिर वह कैद से कभी छूटेगा ही नहीं! इतना याद रखना कि जिस वक्त वह छूटेगा उस वक्त तुम लोगों को लेने के देने पड़ जायँगे!

फरनंद०। (दहपड़ा कर) कोई परवाह नहीं! देखा जायगा!!

कदरू०। (इलज़ाम करते हुए) और वह कैद में क्यों डाला जायगा? क्या उसने चोरी की है! या किसी को मारा है! या खून किया है!

दंगली०। भाई कदरू ! तुम इस समय मतवाले हो रहे हो और यह मामले की बातें हैं इसलिये हमारी बातों में तुम इस समय बिल्कुल दखल मत दो। तुम मजे में बोतल पर बोतल खाली किये जाओ और मतवाले बनते जाओ, सलाह देने के लिए अक्ल की जरूरत है !

कदरू०। मैं मतवाला हूं ! अच्छा मतवाला ही सही मगर जनाब मैं अब भी चार बोतलें उड़ा सकता हूं, ये तो शीशियां ही हैं।

यह कह कर उसने क्रोध के साथ गिलास मेज पर पटक दिया।

फरनन्द०। (दंगली से) हां जनाब, आप कह रहे थे-

दंगली०। (यकायक चौंक कर) मैं क्या कह रहा था ? ओह ! वह बात तो मैं भूल ही गया ! इस मतवाले कदरू ने तो मेरी बातों का सिलसिला ही भुला दिया

कदरू०। अगर तुम्हें पसंद हो तो तुम भी पीओ जो इससे डरते हैं वे बहुत बुरा करते हैं !

यह कह कर वह शराब का गीत गाने लगा।

फरनंद०। साहब ! तुमने कहा था कि तुम इस काम में मेरी मदद करोगे।

दंगली०। हां ठीक है—मैं ऐसी तर्कीब बता सकता हूं कि डोनर मरे भी नहीं और वह मरियम से शादी भी न करे।

फरनंद०। ऐसा कभी नहीं हो सकता। सिवाय

अदावत नहीं है तो मैं क्यों बीच में नाहक बुरा बनूं! लीजिये आप जानें और आपका काम जाने, मैं तो चलता हूं।

यह कह कर वह उठ खड़ा हुआ और बाहर की तरफ जाने लगा।

फरनंद०। (उसको रोक कर) आप इतनी जल्दी क्यों करते हैं? बैठ जाइये कोई परवाह नहीं—अगर आप की डोनर से लड़ाई नहीं है तो न सही, अब मैं खुल्लम खुल्ला कहता हूं कि मैं उससे जरूर बदला लेना चाहता हूं! तुम अगर कोई अच्छी तर्कीब बताओगे तो मैं जरूर उसके मुताबिक काम करूंगा मगर शर्त यह है कि अगर उस कार्रवाई से उसकी जान पर आफत न आती हो क्योंकि मरियम ने मुझसे साफ २ कह दिया था कि अगर वह मर जायगा तो मैं भी मर जाऊंगी।

कदरू०। (मेज पर से सर उठा कर मतवालेपन से) देखें कौन डोनर को मारता है! मैं उसको कभी मारने न दूंगा, वह मेरा दोस्त है। आज सुबह वह मुझे बहुत सा रुपया देने को तैयार था, मैं उसको कभी मारने न दूंगा—मैं नहीं—

दङ्गली०। पागल कहीं का! उसे मारने का किस ने जिक्र किया है? अरे बेवकूफ! हमलोग दिल्लगी कर रहे हैं कि लोगों को मारने पीटने की बातें कर रहे हैं! (शराब से गिलास भर और उसके हाथ में देकर) लो यह उसकी शादी की खुशी में चढ़ा जाओ और हम

दंगली०। बस चुप रहो!

कदरू०। मैं क्यों चुप रहूं? पहिले मुझे इस बात का तो जवाब दो कि वे लोग डोनर को कैद क्यों करेंगे? मैं जरूर डोनर का पक्षपात करूंगा, चाहे इसमें तुम बुरा मानो या भला!

दंगली ने दर्जी के रंग ढंग से मालूम कर लिया कि यह बिल्कुल मतवाला हो रहा है अस्तु उसने फरनंद की तरफ देख कर कहा, "तो तुम्हारा खयाल यह है कि उसके मार डालने की कोई जरूरत नहीं है?"

फरनंद०। बेशक कोई जरूरत नहीं है। तुमने जैसा अभी बयान किया है अगर तुम्हारे पास डोनर को जेलखाने भेजने की कोई तर्कीब हो तो बताओ, तब बेशक हमारा मतलब निकल सकता है।

दंगली०। तर्कीबें तो सोचने से कई एक निकल सकती हैं मगर मैं इस काम में क्यों दखल दूं?

फरनंद०। मैं यह तो नहीं कह सकता कि तुम क्यों दखल देते हो मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि डोनर से तुम्हारी कुछ न कुछ अदावत जरूर है क्योंकि अगर तुम्हारी अदावत न होती तो तुम मेरे मामले में कभी दखल ही न देते।

दंगली०। मेरी तो उसके साथ बिल्कुल नहीं है, सिर्फ तुम्हें तकलीफ में देख कर तु ऊपर तरस आ गया इसीलिये तुम्हारी मदद में तैयार हो गया था। जब तुम्हारी ही द

शाह के कानों तक यह खबर पहुंचा सके कि डोनर बादशाह नैपोलियन का एजेंट बन कर एलबा में गया था तो बड़ा काम निकले!

फरनन्द०। यह कौनसी मुश्किल बात है? यह काम मैं खुद कर सकता हूं!

दंगली०। मगर इस में एक खराबी यह बड़ी भारी है कि तुमको डोनर का मुक़ाबिला करना पड़ेगा क्योंकि बादशाह जरूर उस पर मुक़द्दमा चलावेगा और उस समय तुमको डोनर के सामने ही सब बातें कहनी पड़ेंगी! चाहे इस बात का सबूत मेरे पास ऐसा जबर्दस्त है कि वह उस जुर्म के कारण सजा पाने से कभी बच ही नहीं सकता मगर फिर भी जब वह छूट कर आवेगा तो तुम समझ सकते हो कि जिसने उसे क़ैद कराया होगा उसके साथ वह कैसा बर्ताव करेगा!

फरनन्द०। उँह! इस बात की मुझे कोई परवाह नहीं है। मैं समझता हूं यह तो और भी अच्छा हो अगर जेलखाने से लौट कर वह मुझसे लड़ाई करे। ऐसा होने से फिर हमेशा का टंटा ही टूट जाय!

दंगली०। मगर इस कार्रवाई से मरियम तो तुम से नफरत करने लग जायगी!

फरनन्द०। बेशक यह एक बुराई जरूर पैदा हो जायगी!

दंगली०। (कुछ सोच कर) अच्छा एक तर्कीब इससे भी मजेदार मुझे सूझ गई है! अगर यह ठीक उतर गई

लोगों की बातों में फजूल दखल मत दो।

कदरू०। (गिलास खाली करके) हे ईश्वर ! तू डोनर की उम्र दूनी कीजियो !

फरनन्द०। (दंगली से) अच्छा जनाब अब आप तर्कीब तो बताइये, फजूल वक्त खराब करने से क्या फायदा है !

दंगली०। नौकर ! कागज, कलम, दावात हाजिर करो।

फरनंद०। हां कागज, कलम, दावात जल्दी ला।

नौकर०। (मेज की तरफ इशारा करके) सब चीजें मेज ही में हैं।

कदरू०। (कागज पकड़ कर) इस पर तुम लोग क्या लिखोगे ? देखो मुझे हमेशा, बंदूक से बढ़ कर कलम, कागज और शराब की बोतल से डर लगा करता है !

दंगली०। यह आदमी उतना मतवाला नहीं है जितना कि यह सूरत से मालूम होता है। फरनन्द ! इसे थोड़ी शराब और पिलाओ जिसमें यह बिलकुल बेहोश हो जाय।

अस्तु फरनन्द ने गिलास भरा और यह कागज छोड़ कर उसे गटगट पी गया।

फरनन्द ने जब देखा कि यह बिलकुल बदमस्त हो गया तो वह दंगली से बोला, "अच्छा जनाब, अब क्या करना चाहिये ?"

दंगली०। मेरे ख्याल में अगर कोई आदमी बाद-

उपन्यास–लहरी के ग्राहकों को सूचना।

उपन्यास-लहरी के सभी ग्राहक इस बात को जानते है
के बिना पेशगी मूल्य पाये उपन्यास-लहरी किसीके पास भेज
हीं जाती इसीलिये उपन्यास-लहरी के प्राय: सभी ग्राहको
। यह आज्ञा दे रक्खी है कि "जब वर्ष पूरा हो जाय तभी उप
यास-लहरी आप पेशगी कीमत के लिये २) के वी० पी०
्रारा भेज दिया करें।" अस्तु ऐसाही किया भी जाता है। चूं
अक्सर नये ग्राहक भी हुआ करते हैं इसलिये यह इत्तला दे
ी जरूरत पड़ी कि यदि किसीको ग्राहकश्रेणी से अपना ना
कटाना हो तो हमें इत्तला दे दें नहीं तो हम समझेंगे कि उनक
तरफ से वी० पी० द्वारा मूल्य मँगा लेने की आज्ञा है अतए
साल के १२ नम्बर पूरे होजाने पर २) के वी० पी० द्वारा नम्ब
भेज दिया करेंगे॥

मैनेजर—
उपन्यास-लहरी—काशी।

तो फिर यों बारह ही समझना!

यह कह कर वह बाएँ हाथ से कागज पर लिखने लगा। मजमून यह है :—

जनाब आली!

ताज और मजहब का एक खैरख्वाह इत्तला देता है कि एक शख्स जिसका नाम डोनर है और जो फरन जहाज का मेट है, आज समरना से आया है। वह फ्रांस के नेपल्स और पोर्टोफूचो में भी उतरा था और सुल्तान मुराद की एक चीठी वह एलबा में नैपोलियन को देने के वास्ते गया था। उसके जवाब में जो नैपोलियन ने अपनी पैरिस वाली कमेटी के नाम उसे चीठी दी है वही उसके बागियों में शरीक रहने का पूरा सबूत है। वह चीठी उसको गिरफ्तार करनेसे या तो उसी के पास मिलेगी, या उसके बाप के मकान में और या जहाज की कोठड़ी में से।

यह मजमून खत्म करके दङ्गली ने कहा, "अब तुम पर कोई आंच नहीं आ सकती। सर्कार खुद मद्दई बन कर उसको गिरफ्तार करेगी और किसी को यह भी मालूम न होगा कि इस खबर का देने वाला कौन है।"

यह कह कर उसने वह चीठी लिफाफे में बन्द कर दी और पते की जगह 'बनाम शाही जज मारसलीज' लिख कर उसने लिफाफा डाक में छोड़ देने के वास्ते फरनंद के हवाले कर दिया।

कदरू०। (जिसमें कुछ योंही सी होश बाकी थी)